

एम थ लेनिन

Tokyo





ऐसे थे लेनिन

प्रगति प्रकाशन
मास्को

संकलनकर्ता: प्रोफेसर मिखायेल

अनुवादक: नरेश चव्वा

द्वितीयक: यू. माकोव

КОСТРЫ

(ДЕТЯМ О ЛЕНИНЕ)

(сборник рассказов советских писателей: З. Воскресенской, М. Шаткина, Л. Радичева, М. Прижмаловой, Н. Ходы, А. Колосова, П. Канни, В. Бонч-Бруевича, С. Алексеева, С. Антонова, Л. Воронковой)

на языке детей



अनुक्रम

प्रकाशक की ओर से	७
वह रात, ज० वोस्नेसेन्काया	८
इतिहास की परीक्षा, म० गामिस्ता	२३
मारो डांड! न० रादीग्नेव	२७
जाड़े का दिन, म० प्रिलेजायेवा	३६
मित्रता की झगड़ियाँ, ज० वोस्नेसेन्काया	४६
ज्वालाएं, ज० वोस्नेसेन्काया	५४
अंधेरी रात का किस्सा, ज० वोस्नेसेन्काया	७०
पीछा, न० खोदजा	७७
प्रारंभ, प० गामिस्ता	७७
अक्टूबर क्रांति के प्रारंभिक दिन, व० बोंच-बुयेविच	१२३
रूसी जनतंत्र का नागरिक, स० प्रिलेजायेव	१३२
सोवियत राज्यचिह्न, व० बोंच-बुयेविच	१३४
हत्यारी की गोलियाँ, अ० कोनोनोव	१३८
हवाखोरी, व० बोंच-बुयेविच	१४२
काशिनो की माना, म० कोनोनोव	१४७
वह मुलाकात, स० अंतोनोव	१५२
गुप्त मनुरोध, स० प्रिलेजायेव	१५२
चेरी की बरिया, ज० वोस्नेसेन्काया	१७४
बुलकिचें, स० प्रिलेजायेव	१८१
लेनिन को बच्चे प्यारे थे, ल० कोनोनोव	१८५

व्लादीमिर इल्यीच लेनिन...

दुनिया भर में लोग इस नाम को जानते हैं।

लेनिन के नेतृत्व में रूस के जनों ने अक्टूबर, १९१७ में विजयपूर्ण क्रांति की और इस तरह संसार के सबसे पहले समाजवादी राज्य का निर्माण किया।

लेनिन का जीवन और कार्य अत्यंत फलदायी थे — उन्होंने जो कुछ किया है, उसका एक ही पुस्तक में वर्णन करना असंभव है।

इस पुस्तक में दी गई कहानियों में उनके अद्भुत जीवन की कुछ ही घटनाओं को लिया गया है। हमें विश्वास है कि हमारे विदेशी पाठकों को ये कहानियां रोचक लगेंगी और इनके बारे में पाठकों के पत्र पाकर हमें खुशी ही होगी। आप हमें इस पते पर लिख सकते हैं:

प्रगति प्रकाशन, २१, जूबोव्स्की बुलवार, मास्को, सोवियत संघ

दमीत्री और मरीया ऊपर, बच्चों के कमरे में, सो रहे थे — वे कुछ नहीं जानते थे। मां पीटर्सबर्ग में थीं। जो हुआ था, उसके बारे में सबसे पहले उन्हें ही पता लगा था।

खाने के कमरे में धीमी रोशनी से जलता लैंप मेज़ और 'सिम्बीर्स्क समाचार' की एक प्रति पर प्रकाश का चौड़ा घेरा डाल रहा था।

ओल्गा अपने सिर को हाथों में जकड़े आगे-पीछे हिचकोले खा रही थी। उसकी आंखों से आंसुओं की धार बह रही थी।

व्लादीमिर इन भयानक पंक्तियों से अपनी आंखें नहीं हटा पा रहा था :

“सीनेट के विशेष कार्यालय द्वारा सुनाई गई सज़ा के अनुसार अपराधी गेनेरालोव, ग्रिगोरियुशिकन, ओसिपानोव, शेवियोव और उल्यानोव को आज, ८ मई, १८८७ को फांसी दे दी गई।”

व्लादीमिर ने अख़बार पर हाथ फेरा, मानो इन पंक्तियों को रगड़कर मिटा देने के लिए। वह इन शब्दों के डरावने, विकराल अर्थ को समझ नहीं पा रहा था।

क्या यह संभव है कि अलेक्सान्द्र मर गया है? क्या यह संभव है कि इतने चतुर, इतने दयालु और इतने भले अलेक्सान्द्र को फांसी दे दी गई है?

व्लादीमिर का मन कर रहा था कि वह चीख पड़े, लपके, अपने भाई के हत्यारों को ढूँढ़े और उन्हें मार डाले।

सोल्ना भी ऐसी ही दीवानी हो रही थी। व्लादीमिर ने पहले उसे तैयार करने की कोशिश की थी, लेकिन आखिर जब उसने खबर दी, तो वह वह चिल्लाते हुए फर्ज पर गिर पड़ी थी कि "मे डार को भार डालूंगी!"

व्लादीमिर अपलक अखबार को देख रहा था। उसे उसकी लकीरों के बीच अपने प्यारे भाई अलेक्सान्द्र का चेहरा नजर आ रहा था।

यह हो कैसे सकता है?

कितनी ही बार उसने और अलेक्सान्द्र ने एकांत पाने के लिए बरसाती में जाकर अपनी पढ़ी किताबों के बारे में गरमागरम बहस की थी। हर युग और हर काल में विभिन्न जनों के वीरतापूर्ण संघर्ष दोनों को ही आकर्षित करते थे। अलेक्सान्द्र ने फ्रांसीसी क्रांति और पेरिस कम्यून के बारे में काफ़ी कुछ पढ़ा था। व्लादीमिर को कम्यूनाडों की नियति के बारे में बताते हुए उसने कहा था कि ऐसा समय आएगा, जब रुस में कम्यून विजयी होगा। तब व्लादीमिर ने सोचा था कि अलेक्सान्द्र आगे चलकर क्रांतिकारी बनेगा।

पिछली छुट्टियों में घर आने पर अलेक्सान्द्र आम तौर से अधिक ही खामोश रहा और अपने ही कामों में ही डलझा रहा था - अपनी खुदबानी में, अपने प्रबंध की तैयारी में ही रमा रहता था। उसे देखकर व्लादीमिर को निराशा-सी होती - उसे लगता कि अलेक्सान्द्र कभी क्रांतिकारी नहीं बनेगा।

एक दिन व्लादीमिर ने अपने भाई को बगीचे में देखा। अलेक्सान्द्र वहां अपनी उंगलियां बांधे, गहरे विचार में लीन अकेला बैठा था। उसकी गहरी आंखों में एक खामोश आग जल रही थी। व्लादीमिर ने हैरानी के साथ अपने भाई की तरफ देखा। अलेक्सान्द्र अपनी मां और बहनो को बात करने लगा और व्लादीमिर से बोला कि उसे उनकी अच्छी तरह देखभाल करनी चाहिए और उन्हें कभी



स्नेहपूर्ण जलानोप-परिवार। सबसे
बाहिरी तरफ ज़ाखोमिर (लेवित)
घाली स्कूली पोशाक में बैठे हैं।



बग़ार के कोने-कोने में जंगल मिश्री-पत्रों
में इस घर को देखने वाले हैं, जिसमें
जलानोप-परिवार रहा करता था।



मृत्यु के बाद जाने का आशीर्वाद
 प्राप्त करने लिये के समरे में वाकर
 बताया करते थे कि उन्हें किसी
 क्षणों में ही मिले हैं।



मृत्यु के बाद जाने का आशीर्वाद



अशोक की काने आई बलिबान
 से बहुत रीत था, जो बाद-बहुन
 से समीप रहे थे।



नहीं, बलिबान के रास्ते पर नहीं,
 किसी घोर ही रास्ते पर चलना होगा।





किसी तरह तंग नहीं करना चाहिए। अलेक्सान्द्र और आन्ना पीटर्सबर्ग में पहुँचे थे, इसलिए घर पर व्लादीमिर ही सबसे बड़ा था...

अधियाली बिड़की से बाहर की तरफ देखते हुए व्लादीमिर अपने बालों में उँगलियाँ चला रहा था। उस बात की जानकारी से कि अलेक्सान्द्र मर गया है, कि वह इतनी भयंकर मौत मरा है, इस अनुभूति की दारुण वेदना से जैसे उसकी शक्ति छीज गई थी।

...ओल्गा बैठक में फोफे पर पड़ी हुई थी। फर्श पर पड़ती चांदनी गमले में उगे ताड़ की काली छायाओं से कटी हुई थी।

"सो रही हो क्या?" व्लादीमिर ने पूछा।

उसने जवाब नहीं दिया। वह निश्चल पड़ी रही। व्लादीमिर ने एक दियासलाई जलाई। उसकी लपकती रोशनी में उसकी बहन के चेहरे पर मौत जैसी पीलिमा नजर आ रही थी। क्षण भर के लिए तो उसे यही लगा कि वह मर गई है।

"ओल्गा! प्यारी ओल्गा! आँखें खोल!" व्लादीमिर ने उसका सिर उठाते हुए कहा।

ओल्गा ने कराहकर सिर अपने माई की छाती पर टिका दिया और सुबकने लगी।

"अलेक्सान्द्र के बिना हम क्या करेंगे? माँ का क्या होगा? काश कि पिताजी जिंदा होते!"

"पिताजी क्या इस सबको झेल पाते!" व्लादीमिर ने मानो अपने से ही कहा।

वह यह अनुभव कर सकता था कि उसकी बहन के गरम-गरम आंसुओं से उसकी कमीज तर हो रही है। उसने उसे अपने सीने से लगा लिया और मौन रहा।

"तुम कुछ कहते क्यों नहीं? तुम क्या सोच रहे हो?"

अलेक्सान्द्र ने उसे मं भी के बारे में और यह कि काम

होने लगा था।

उस दिन उसका नाम नया, जिससे छायाएं और गहरी हो
नीं उस दिवसों की तरह सरक गई।

उसका नामांकन विद्वान् होकर तो गई। व्लादीमिर
ने उसका नाम उसका नाम के नीचे एक तस्विया रखा और फिर
इस अलेक्सान्द्र के नाम से नाम रखा।

उस दिन उसका नाम अलेक्सान्द्र था। तब तो तब अलग
वस्तुएं और अलेक्सान्द्र की और सभी चीजें मौजूद थीं। पर वह
खुद अब नहीं था।

व्लादीमिर ने छप्पे की तरफ की खिड़की खोल दी। उसने
अपने कानों का बदन खोला और ताजा हवा में गहरी सांस ली।
उसके मन में विचार पर विचार आ रहे थे।

वह करे क्या? जार को हत्या कर दे? अलेक्सान्द्र की मौत
का बदला ले और उसी के पदचिह्नों पर चले?.. उससे लोगों का
क्या भाव होगा? छः वर्ष हुए, 'नारोदनाथा बोल्था' के
नद्वय पीनेबोल्स्की ने जार को हत्या कर दी थी। लेकिन अलेक्सान्द्र
हिंस्रों को बहुत अलेक्सान्द्र तृतीय ने ले ली थी और देश में हासत
और भी बिगड़ गई थी। लोगों की दशा पहले से भी खराब हो
गई: तर नहीं, प्रगतिशील चीज का गला घोंटा जा रहा था।
पिताजी के स्कूल, जिन्हें उन्होंने इतनी मुश्किलों से स्थापित किया
था, बंद किये जा रहे थे।

उस समय का एक छोटी सी जगह तब की थी, जहाँ भी उसके
नाम उसके नाम से बड़ी स्पष्टता के साथ गुंज रहे थे:

उस समय का एक छोटी सी जगह तब की थी, जहाँ भी उसके
नाम उसके नाम से बड़ी स्पष्टता के साथ गुंज रहे थे:

अलेक्सान्द्र ने उसे मं भी के बारे में और यह कि काम
होने लगा था।

नव बल। सधपों के लिए। लेकिन तब तो वह, जिसका
कहाँ है वह? अन्याय और दमन का सामना करने वाला एक
एक आदमी तो अकेला कभी यह उसका नाम था। वह
बहादुर से बहादुर आदमी भी कभी था नहीं कर सकते।
करोड़ों लोग एक साथ लड़कर ही इस देश को बन सकते हैं।
लेकिन लाखों-करोड़ों लोगों को एक ही मध्य के नाम से नामांकित
किया जाये?

अलेक्सान्द्र, मैं आजादी की तुम्हारी मजान्त को उठाऊंगा
मैं उसी लक्ष्य को पाने की कोशिश करूँगा, मगर मैं जिनका नाम
दूसरा रास्ता खोजूँगा। अलेक्सान्द्र! तुम जिनका नाम ले लिये
चाहते थे, उसके लिए मैं अपनी सारी चीजें, अपनी सारी संपत्ति
लगा दूँगा।

गदगद के फूलों की महक से भरी ताजा हवा में उसका नाम
गया।

व्लादीमिर को वह समय सादर था। उस समय उस जगह
को पहली बार देखा था। उसकी माँ ने उसे जहाँ से उसे दृश्य
को देखकर भावी फलोद्यान की जगह से ले ले। उस समय वह
भाकार हो चुकी थी। बाग में एक ही नाम बनी। वह नाम जो
हर पेड़ पर बहार आई थी।

सूर्य उदित हो रहा था, चेरी के पत्तों के नीचे उसके निराले
म रूखाधी बार नाम उस है जो वह नाम के हो रहे हैं।
उसका नाम है गहरी के नामांकन के नामांकन। एक
गदगद निराले नाम

व्लादीमिर ने लपककर नीचे जाकर दरवाजा खोला, उसकी
 कमर खोलकर उसकी आंखों में झाँक गिरी। उसकी माँ
 ने अपने चेहरे पर से हल्के-हल्के झुंझा, अपनी टोपी उतारी और धीरे-
 धीरे सीढ़ियों पर चढ़ने लगी। वह अलेक्सांद्र के कमरे में जा रही
 थी।

माँ चार खाना बागम आ गईं हैं।" व्लादीमिर ने ओल्गा
 को दृष्टिगत करवाते हुए कहा, "जाओ बागम ठीक-ठाक, मुझे धोओ
 और अपने को स्नान में करो। माँ को हमारे आंसू नहीं चखने आने
 चाहिए।"

बच्चों के कमरे में भागकर जाते हुए वह चिल्लाया, "चलो,
 उठो सब!" उसने दूधोखी की काँड़े पहनने में मदद की और
 मरीया के आलू गंधने की बेकार कोशिश की। "चलो, माँ के पास
 चलो!"

बच्चे अलेक्सांद्र के कमरे के दरवाजे में ही रुक गये। उनकी
 माँ पलंग पर पड़ी हुई थी, उनका चेहरा तकिये में छिपा हुआ था।

"माँ!" व्लादीमिर ने आहिस्ता से आवाज दी।

मरीया अलेक्सांद्रोव्ना ने जवाब नहीं दिया। व्लादीमिर ने
 मरीया को कोहनो मारी। वह पलंग पर चढ़ गई और हाथों से
 अपनी माँ के गले को लपेट लिया।

"छ्हर देखो, मामा!"

मरीया अलेक्सांद्रोव्ना उस बँटी और उन्होंने अपने बच्चों की
 तरफ देखा। उनका चेहरा पर मुसकान की चोटी लगी।

अपनी आँखों में दर्द और प्यार भरे उनकी तरफ देखते खड़े
 बच्चे मानो कह रहे थे "हमें पुश्तानी ज़रूरत है और तुम्हें हमारे।"

"बच्चों, नीचे चलो और नाश्ता करें," मरीया अलेक्सांद्रोव्ना
 ने बच्चों से उसी हमेशा जैसी शांत आवाज में कहा।

आज सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक थी इतिहास की
 परीक्षा। इतिहास के अध्यापक बड़े ही छिद्रान्वयी आदमी थे। आज
 उन्होंने जो प्रश्न तैयार किये थे, उन सभी में पचास सवाल थे।
 चार्ल्स चतुर्थ के प्रश्न जैसे बड़े प्रश्न थे कि चार्ल्स चतुर्थ के
 मिलनेवाली जानकारी ही काफी नहीं थी। उनका मतलब था अध्यापक
 द्वारा कक्षा में कही गई हर बात को याद रखना या फिर व्यक्तिगत
 जानकारी प्राप्त करने के लिए संदर्भ ग्रंथों को देखना। बड़े-बड़े
 व्लादीमिर उल्यानोव से उत्तर पूछना चाहते थे, क्योंकि वे हमेशा
 सभी उत्तर मालूम होते थे, मगर आज उन्होंने नहीं पूछा। एक बार
 फिर उसने उनकी टिकी हुई, चिपचिपी तल्लों की मद्दम लिया, जो
 उनके मारनेवाले कीड़ों की तरह चुभ रही थीं।

व्लादीमिर उल्यानोव उस दिन स्कूल आया था और हमेशा
 की तरह अपनी किताबों के पुलिंदे को खोलकर अपने फीज को
 अपनी उंगली पर लपेट लिया था। हमेशा की तरह वह अपनी
 जगह पर बैठ गया था। ठीक है कि उसका चेहरा बहुत ही
 था। हर कोई उसके भाई अलेक्सांद्र के पता की पर चला दिया जान
 की ही बात कर रहा था। अफवाहें थीं कि उनके परिवार की मित्र,
 अध्यापिका बेरा काश्कादामोवा को एक पत्र आया वह समझा कि
 है और व्लादीमिर को इसके बारे में मालूम है किने ने बताया कि
 जब व्लादीमिर ने इस खत को पढ़ा, तो उसने कहा था "करी
 यह बड़ा गलती नहीं है, जिस पर हम चलना है।" चरना रहा है।

$\frac{1}{2}$ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{4}$ $\frac{1}{5}$ $\frac{1}{6}$ $\frac{1}{7}$ $\frac{1}{8}$ $\frac{1}{9}$ $\frac{1}{10}$ $\frac{1}{11}$ $\frac{1}{12}$ $\frac{1}{13}$ $\frac{1}{14}$ $\frac{1}{15}$ $\frac{1}{16}$ $\frac{1}{17}$ $\frac{1}{18}$ $\frac{1}{19}$ $\frac{1}{20}$ $\frac{1}{21}$ $\frac{1}{22}$ $\frac{1}{23}$ $\frac{1}{24}$ $\frac{1}{25}$ $\frac{1}{26}$ $\frac{1}{27}$ $\frac{1}{28}$ $\frac{1}{29}$ $\frac{1}{30}$ $\frac{1}{31}$ $\frac{1}{32}$ $\frac{1}{33}$ $\frac{1}{34}$ $\frac{1}{35}$ $\frac{1}{36}$ $\frac{1}{37}$ $\frac{1}{38}$ $\frac{1}{39}$ $\frac{1}{40}$ $\frac{1}{41}$ $\frac{1}{42}$ $\frac{1}{43}$ $\frac{1}{44}$ $\frac{1}{45}$ $\frac{1}{46}$ $\frac{1}{47}$ $\frac{1}{48}$ $\frac{1}{49}$ $\frac{1}{50}$ $\frac{1}{51}$ $\frac{1}{52}$ $\frac{1}{53}$ $\frac{1}{54}$ $\frac{1}{55}$ $\frac{1}{56}$ $\frac{1}{57}$ $\frac{1}{58}$ $\frac{1}{59}$ $\frac{1}{60}$ $\frac{1}{61}$ $\frac{1}{62}$ $\frac{1}{63}$ $\frac{1}{64}$ $\frac{1}{65}$ $\frac{1}{66}$ $\frac{1}{67}$ $\frac{1}{68}$ $\frac{1}{69}$ $\frac{1}{70}$ $\frac{1}{71}$ $\frac{1}{72}$ $\frac{1}{73}$ $\frac{1}{74}$ $\frac{1}{75}$ $\frac{1}{76}$ $\frac{1}{77}$ $\frac{1}{78}$ $\frac{1}{79}$ $\frac{1}{80}$ $\frac{1}{81}$ $\frac{1}{82}$ $\frac{1}{83}$ $\frac{1}{84}$ $\frac{1}{85}$ $\frac{1}{86}$ $\frac{1}{87}$ $\frac{1}{88}$ $\frac{1}{89}$ $\frac{1}{90}$ $\frac{1}{91}$ $\frac{1}{92}$ $\frac{1}{93}$ $\frac{1}{94}$ $\frac{1}{95}$ $\frac{1}{96}$ $\frac{1}{97}$ $\frac{1}{98}$ $\frac{1}{99}$ $\frac{1}{100}$

(The page contains faint, illegible markings or bleed-through from the reverse side.)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

1. $\frac{1}{2} \times \frac{3}{4} = \frac{1 \times 3}{2 \times 4} = \frac{3}{8}$
 2. $\frac{2}{3} \times \frac{5}{6} = \frac{2 \times 5}{3 \times 6} = \frac{10}{18} = \frac{5}{9}$
 3. $\frac{3}{5} \times \frac{4}{7} = \frac{3 \times 4}{5 \times 7} = \frac{12}{35}$
 4. $\frac{4}{6} \times \frac{7}{8} = \frac{4 \times 7}{6 \times 8} = \frac{28}{48} = \frac{7}{12}$
 5. $\frac{5}{8} \times \frac{9}{10} = \frac{5 \times 9}{8 \times 10} = \frac{45}{80} = \frac{9}{16}$
 6. $\frac{6}{9} \times \frac{10}{12} = \frac{6 \times 10}{9 \times 12} = \frac{60}{108} = \frac{5}{9}$
 7. $\frac{7}{10} \times \frac{11}{14} = \frac{7 \times 11}{10 \times 14} = \frac{77}{140} = \frac{11}{20}$
 8. $\frac{8}{12} \times \frac{13}{16} = \frac{8 \times 13}{12 \times 16} = \frac{104}{192} = \frac{13}{24}$
 9. $\frac{9}{15} \times \frac{14}{18} = \frac{9 \times 14}{15 \times 18} = \frac{126}{270} = \frac{7}{15}$
 10. $\frac{10}{18} \times \frac{15}{20} = \frac{10 \times 15}{18 \times 20} = \frac{150}{360} = \frac{5}{12}$
 11. $\frac{11}{20} \times \frac{16}{22} = \frac{11 \times 16}{20 \times 22} = \frac{176}{440} = \frac{4}{11}$
 12. $\frac{12}{24} \times \frac{17}{28} = \frac{12 \times 17}{24 \times 28} = \frac{204}{672} = \frac{17}{56}$
 13. $\frac{13}{28} \times \frac{18}{32} = \frac{13 \times 18}{28 \times 32} = \frac{234}{896} = \frac{117}{448}$
 14. $\frac{14}{32} \times \frac{19}{36} = \frac{14 \times 19}{32 \times 36} = \frac{266}{1152} = \frac{133}{576}$
 15. $\frac{15}{36} \times \frac{20}{40} = \frac{15 \times 20}{36 \times 40} = \frac{300}{1440} = \frac{5}{24}$
 16. $\frac{16}{40} \times \frac{21}{44} = \frac{16 \times 21}{40 \times 44} = \frac{336}{1760} = \frac{21}{110}$
 17. $\frac{17}{44} \times \frac{22}{48} = \frac{17 \times 22}{44 \times 48} = \frac{374}{2112} = \frac{17}{96}$
 18. $\frac{18}{48} \times \frac{23}{52} = \frac{18 \times 23}{48 \times 52} = \frac{414}{2496} = \frac{69}{416}$
 19. $\frac{19}{52} \times \frac{24}{56} = \frac{19 \times 24}{52 \times 56} = \frac{456}{2912} = \frac{57}{364}$
 20. $\frac{20}{56} \times \frac{25}{60} = \frac{20 \times 25}{56 \times 60} = \frac{500}{3360} = \frac{25}{168}$
 21. $\frac{21}{60} \times \frac{26}{64} = \frac{21 \times 26}{60 \times 64} = \frac{546}{3840} = \frac{91}{640}$
 22. $\frac{22}{64} \times \frac{27}{68} = \frac{22 \times 27}{64 \times 68} = \frac{594}{4352} = \frac{297}{2176}$
 23. $\frac{23}{68} \times \frac{28}{72} = \frac{23 \times 28}{68 \times 72} = \frac{644}{4896} = \frac{161}{1224}$
 24. $\frac{24}{72} \times \frac{29}{76} = \frac{24 \times 29}{72 \times 76} = \frac{696}{5472} = \frac{29}{228}$
 25. $\frac{25}{76} \times \frac{30}{80} = \frac{25 \times 30}{76 \times 80} = \frac{750}{6080} = \frac{75}{608}$
 26. $\frac{26}{80} \times \frac{31}{84} = \frac{26 \times 31}{80 \times 84} = \frac{806}{6720} = \frac{403}{3360}$
 27. $\frac{27}{84} \times \frac{32}{88} = \frac{27 \times 32}{84 \times 88} = \frac{864}{7392} = \frac{9}{84}$
 28. $\frac{28}{88} \times \frac{33}{92} = \frac{28 \times 33}{88 \times 92} = \frac{924}{8096} = \frac{21}{192}$
 29. $\frac{29}{92} \times \frac{34}{96} = \frac{29 \times 34}{92 \times 96} = \frac{986}{8832} = \frac{493}{4416}$
 30. $\frac{30}{96} \times \frac{35}{100} = \frac{30 \times 35}{96 \times 100} = \frac{1050}{9600} = \frac{7}{64}$
 31. $\frac{31}{100} \times \frac{36}{104} = \frac{31 \times 36}{100 \times 104} = \frac{1116}{10400} = \frac{279}{2600}$
 32. $\frac{32}{104} \times \frac{37}{108} = \frac{32 \times 37}{104 \times 108} = \frac{1184}{11232} = \frac{37}{351}$
 33. $\frac{33}{108} \times \frac{38}{112} = \frac{33 \times 38}{108 \times 112} = \frac{1254}{12096} = \frac{209}{2016}$
 34. $\frac{34}{112} \times \frac{39}{116} = \frac{34 \times 39}{112 \times 116} = \frac{1326}{12992} = \frac{331.5}{3248}$
 35. $\frac{35}{116} \times \frac{40}{120} = \frac{35 \times 40}{116 \times 120} = \frac{1400}{13920} = \frac{35}{348}$
 36. $\frac{36}{120} \times \frac{41}{124} = \frac{36 \times 41}{120 \times 124} = \frac{1476}{14880} = \frac{123}{1240}$
 37. $\frac{37}{124} \times \frac{42}{128} = \frac{37 \times 42}{124 \times 128} = \frac{1554}{15872} = \frac{777}{7936}$
 38. $\frac{38}{128} \times \frac{43}{132} = \frac{38 \times 43}{128 \times 132} = \frac{1634}{16896} = \frac{817}{8448}$
 39. $\frac{39}{132} \times \frac{44}{136} = \frac{39 \times 44}{132 \times 136} = \frac{1716}{18048} = \frac{13}{144}$
 40. $\frac{40}{136} \times \frac{45}{140} = \frac{40 \times 45}{136 \times 140} = \frac{1800}{19040} = \frac{45}{476}$
 41. $\frac{41}{140} \times \frac{46}{144} = \frac{41 \times 46}{140 \times 144} = \frac{1886}{20160} = \frac{943}{10080}$
 42. $\frac{42}{144} \times \frac{47}{148} = \frac{42 \times 47}{144 \times 148} = \frac{1974}{21312} = \frac{329}{3552}$
 43. $\frac{43}{148} \times \frac{48}{152} = \frac{43 \times 48}{148 \times 152} = \frac{2064}{22496} = \frac{258}{2812}$
 44. $\frac{44}{152} \times \frac{49}{156} = \frac{44 \times 49}{152 \times 156} = \frac{2156}{23712} = \frac{539}{5928}$
 45. $\frac{45}{156} \times \frac{50}{160} = \frac{45 \times 50}{156 \times 160} = \frac{2250}{24960} = \frac{75}{832}$
 46. $\frac{46}{160} \times \frac{51}{164} = \frac{46 \times 51}{160 \times 164} = \frac{2346}{26240} = \frac{1173}{13120}$
 47. $\frac{47}{164} \times \frac{52}{168} = \frac{47 \times 52}{164 \times 168} = \frac{2444}{27552} = \frac{611}{6888}$
 48. $\frac{48}{168} \times \frac{53}{172} = \frac{48 \times 53}{168 \times 172} = \frac{2544}{28896} = \frac{106}{1204}$
 49. $\frac{49}{172} \times \frac{54}{176} = \frac{49 \times 54}{172 \times 176} = \frac{2646}{30272} = \frac{661.5}{7568}$
 50. $\frac{50}{176} \times \frac{55}{180} = \frac{50 \times 55}{176 \times 180} = \frac{2750}{31680} = \frac{55}{633.6}$

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

[illegible]

$\frac{1}{2}$	$\frac{1}{3}$	$\frac{1}{4}$	$\frac{1}{5}$	$\frac{1}{6}$	$\frac{1}{7}$	$\frac{1}{8}$	$\frac{1}{9}$	$\frac{1}{10}$	$\frac{1}{11}$	$\frac{1}{12}$	$\frac{1}{13}$	$\frac{1}{14}$	$\frac{1}{15}$	$\frac{1}{16}$	$\frac{1}{17}$	$\frac{1}{18}$	$\frac{1}{19}$	$\frac{1}{20}$	$\frac{1}{21}$	$\frac{1}{22}$	$\frac{1}{23}$	$\frac{1}{24}$	$\frac{1}{25}$	$\frac{1}{26}$	$\frac{1}{27}$	$\frac{1}{28}$	$\frac{1}{29}$	$\frac{1}{30}$	$\frac{1}{31}$	$\frac{1}{32}$	$\frac{1}{33}$	$\frac{1}{34}$	$\frac{1}{35}$	$\frac{1}{36}$	$\frac{1}{37}$	$\frac{1}{38}$	$\frac{1}{39}$	$\frac{1}{40}$	$\frac{1}{41}$	$\frac{1}{42}$	$\frac{1}{43}$	$\frac{1}{44}$	$\frac{1}{45}$	$\frac{1}{46}$	$\frac{1}{47}$	$\frac{1}{48}$	$\frac{1}{49}$	$\frac{1}{50}$	$\frac{1}{51}$	$\frac{1}{52}$	$\frac{1}{53}$	$\frac{1}{54}$	$\frac{1}{55}$	$\frac{1}{56}$	$\frac{1}{57}$	$\frac{1}{58}$	$\frac{1}{59}$	$\frac{1}{60}$	$\frac{1}{61}$	$\frac{1}{62}$	$\frac{1}{63}$	$\frac{1}{64}$	$\frac{1}{65}$	$\frac{1}{66}$	$\frac{1}{67}$	$\frac{1}{68}$	$\frac{1}{69}$	$\frac{1}{70}$	$\frac{1}{71}$	$\frac{1}{72}$	$\frac{1}{73}$	$\frac{1}{74}$	$\frac{1}{75}$	$\frac{1}{76}$	$\frac{1}{77}$	$\frac{1}{78}$	$\frac{1}{79}$	$\frac{1}{80}$	$\frac{1}{81}$	$\frac{1}{82}$	$\frac{1}{83}$	$\frac{1}{84}$	$\frac{1}{85}$	$\frac{1}{86}$	$\frac{1}{87}$	$\frac{1}{88}$	$\frac{1}{89}$	$\frac{1}{90}$	$\frac{1}{91}$	$\frac{1}{92}$	$\frac{1}{93}$	$\frac{1}{94}$	$\frac{1}{95}$	$\frac{1}{96}$	$\frac{1}{97}$	$\frac{1}{98}$	$\frac{1}{99}$	$\frac{1}{100}$
---------------	---------------	---------------	---------------	---------------	---------------	---------------	---------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	-----------------

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]

ने निर्दिष्ट ही देख चुके थे। उनके प्रिय पिता ने, जिन्हें आन्ति
क तबो होर विचार तक न आया था, आन्तिपूर्ण सांस्कृतिक कार्य
के सम्पन्न बना था। उन्होंने अपना जीवन जनता के जानोदय को
समर्पित कर दिया था। तथापि उनके जीने जी ही उनके आदर्शों
ही रोड दिया गया था चार जिन विद्यालयों को उन्होंने अपनी
मदद ने सहायता का बी बंध कर दिये गये, क्योंकि अग्रकान
ने उन आर्थिक प्रयत्न को निराल किया था, जो गांवों में
चमकने लगा था। उनके पिता का रास्ता निष्फल रहा था।

उनके प्रिय भाई ने आतंकवाद का, ज़ारशाही से अकेले जूझने
का रास्ता चुना था। यह रास्ता उनकी निरर्थक और अकाल मृत्यु
का कारण बना था।

नहीं, इन रास्तों से विजय और जनता के बेहतर जीवन की
प्राप्ति नहीं की जा सकेगी।

दिन गरम होता, तो ठेकेदार अग्रज घाट पर ही छतर में बैठकर
चाय पीना पसंद करता, जहां से वह हर चीज पर नज़र रख
सकता था। उसने तिरपाल के नीचे एक छोटी-सी मेज लगवा दी
थी, जिस पर रखा समोवार भाप के वादल छोड़ता रहता था।
समोवार के पास ही चमचमाती सफ़ेद चायदानी रखी जाती थी
और जहां वह बैठा होता था, उससे कुछ ही कदम की दूरी पर
घूप में दमकती बोलगा मंथर गति से जान के गाय बढ़ती चली
जाती थी।

आज भी वह हमेशा ही की तरह अपनी मजबूत अंगरू पर
बैठा हुआ था। एक नौकर लड़के ने मेज पर नाच का चमकता
समोवार रख दिया था, घाट हिले-हिले जल रहा था, देरी
चिमनीवाला एक छोटा-सा स्टीमर घुएं का गुबार छोड़ रहा था।
नगर में जहाजी एक बजरे पर दाढ़-भाग कर रहे थे और गरमों से
निदाल यात्रियों का एक झुंड धीरे-धीरे घाट की तरफ बढ़ रहा था।

“हुजूर, मैं अभी-अभी नावों के पास से आ रहा था,” एक
जहाजी ने मेज के पास आकर खड़े होने का कहा। “वहाँ एक
आदमी है, जो नदी के पार जाना चाह रहा है। उसका कहना है
कि वह बहुत जल्दी में है और कतर का अंजाम नहीं कर सका।
वे लोग तो नहीं जानते कि क्या करें, अगर वह यही करें जो रहा
है कि ‘ठेकेदार को किसी को भी पार ले जाने में रोक्कना हाक
नहीं है। नदी उसकी निजी आयदाद नहीं है’”

यह वही था ' ' नोजवान ने उम्मीद भरी आँखों से
उसका सामना करी आवाज में कहा। ' चलो जाओ गया मे।

नर नर कहा नोजवान पूर्ण पानी नावें पड़ कनार में लगी
हैं या खर खर की मुँह मरोड़ पड़ल गी नोजवान बाँगा
। माँझी में मे पड़ ने आवाज में जाने पर कहा था माँझी की
मड़े पानी हूँ और चेहरे पर गहरी शिकन थी।

उसका साथ यह नहीं समझते कि कोई भी आपको लोगों को
पार न जाने में नहीं रोक सकता! ऐसा कोई कानून नहीं है -
'मगर न जाने मे!' उसने कहा और उसकी आँखों में ध्वंश की
अवस्था सा थी।

"हबूर, हम यह कैसे कहें!" सफेद मूँछोंवाले आदमी ने
कहा। "उसके पास घाट का ठेका है और वह शहर को पैसा देता
है और यही कानून है!"

नोजवान की ओर चढ़ गई:

"अगर उसके पास घाट का ठेका है, तो हुआ करे। मगर
उसे और किसी को मुसाफिर ले जाने से रोकने का कोई हक नहीं
है। समझे? तुम उस पर हर तरह मुकदमा चला सकते हो।"

सफेद मूँछोंवाले आदमी ने अपनी सिगरेट के टुर्ने पर थूककर
उसे धुसा दिया, पर उसे पानी में नहीं फेंका (क्योंकि बाँगा का
लोग आदर करते थे) उसने उसे रेत में कुचल दिया।

"यहाँ वही धन्ना सेठ है, वह जज को भी खरीद सकता है।
हम कोई उसी की तरफ है। यह नोजवान नहीं मान्य कि जिसकी
गली उनकी सम।"

"तहीं, यह ठीक नहीं है!" नोजवान ने हठपूर्वक कहा।
"उसने बस आप सभी को डरा रखा है। वह कानून के साथ मन-
मानी कर रहा है। आपको तो इसे साबित करने की भी जरूरत

नहीं। अगर आप उस पर मुकदमा चला कर दें, तो उसे इस
पर जुरमाना करना होगा।"

सफेद मूँछोंवाले ने हाथ झटक दिये पार पड़ा हुआ तो लगे।
पुरानी-सी टोपी पहने दूसरा माँझी घाट की तरफ आनखिन्नापुन
देखता हुआ कभी इस, तो कभी उस पैर पर जोर देता रहता था।
'तो' नोजवान ने पूछा।

"हृष्ट भी हो वह हमें वापस आने में सि मजबूर कर
देगा—यह तो तय बात है," माँझी ने झिञ्झने दृष्ट कहा।

"चलो, चलें तो सही, वह करके देख लें कोशिश।"

माँझी के जवाब का इंतजार किये बिना नोजवान ने नाव को
पानी में धकेल दिया, उसमें उछलकर चढ़ गया और चपलतापूर्वक
अपना संतुलन रखते हुए नाव के अगले हिस्से में जाकर बैठ गया
माँझी कई कदम पानी में चला और फिर नाव पर चढ़ गया। वह
मानो इस बात पर हैरान होते हुए अपना सिर हिला रहा था कि
उसने अपने को बातों में आ जाने दिया है। चरमराते चढ़ पानी को
छपछपाने लगे। यात्री विचार मग्न सामने की तरफ देता रहता था।
इस महान नदी की अपार सुपमा को वह पृथ्वी पर अपने पड़ल
दिनों से ही देखता चला आया था, मगर उसकी आँखें उसकी गोभा
को निहारते नहीं थकती थीं। नाव अब काफ़ी तेज़ी से नाव जा
रही थी और वे खासा फ़ासला तय कर चुके थे, मगर हमला
बिनारा अब भी उतनी ही दूर नज़र आता था। अचानक माँझी ने
चपुआ को पानी पर जोर से पड़का।

"तो, यही हुआ न!" उसने गरम में कहा। "तुम खाल
तरफ़ देख रहे हो! देखो जरा घाट की तरफ।"

वे देख सकते थे कि कोद में नाव निहर्णा लगी लगी पड़ल
एक दहियल आदमी घाट के सिरे पर आकर खड़ा तो पड़ल ना
रहा है।

“ओ-ओ-ओ!” वह चिल्लाया, “वापस आओ!”

उस क्षण चपल दौड़ पड़ा रहा है।” नौजवान ने पूछा।

“ओर क्या? वहाँ तो है—हिंसा क्या रहा है?” बड़ी तो बड़ी

तो मालिक है।” मांझी जवाब में मसकाना। “उस का नुकाबना

हता है उस हाथ ऊपर से ही नये पार करना है। लेकिन फिर भी

मना है कि वह हिंसा तो एक पैसा भी खर्चाने दे। अगर उसकी

वान हमेशा ठीक होती है। मारी नाऊन उसी के पास है।

घाट पर उड़ा आदमी अपने हाथ हिला-हिलाकर उन्हें

इशारा कर रहा था।

“अरे ओ! वहाँ हो क्या? वापस आओ!”

“चलते चलो!” नौजवान ने कहा। उसकी आँखें अब भिंचकर

स्वाह लकीरों जैसी हो गई थी। “काश, तुम्हारे पास एक जोड़ा

चप्पू और होने!”

“कोई फायदा नहीं,” मांझी ने निराशा के साथ कहा।

“देखो जरा, नमाशा शुरू हो रहा है। भीड़ को देखो—सभी तरफ

से लोग आ रहे हैं।”

“तो क्या हुआ? भारी डाँड़!”

इस दृढ़ आदेश का पालन करते हुए मांझी नाव को खेता

चला गया। वे बीच धार को पार कर गये थे कि तभी स्टीमर की

चिमनी से धुएँ का एक भपका उठा। सीटी की एक नज़, कर्णभेदी

आवाज़ आई। वजन पर सवार आदमी ने रम्मे के सिन को पकड़ा

और स्टीमर अपने पीछे एककाली लहने छोड़ता हुआ तेजी के

साथ चल पड़ा। उसके अगले पर दुश्मन के जहाज़ पर चढ़ने को

नेशन डकुओं की तरह हाथ में नाव पकड़ने के हाटे उठाये जहाजी

सुई ला थे पर नये पैर ही आदमी, जो प्रत्यक्ष जहाज़ का

कप्तान था और जिसने अपनी पतनून से पायनो को ऊपर चढ़ा

रखा था, मगर सफ़ेद टीपी करने लग था। तब फटी आवाज़ से आवाज़

“दायें चलो! पूरी चाल में।”

जब स्टीमर और भगोड़ों के बीच आवाज़ से आवाज़ रह गया,
तो कप्तान गरजा:

“चाल उलटो! रोक दो!”

स्टीमर का इंजन कुछ बार चुभा अरु शिन रुक गया। अब

स्टीमर नाव के लगभग बराबर ही रुक गया था। उसे जाना न

उसके किनारे को जकड़ लिया था।

“आप यहाँ मुसाफ़िरो को पार नहीं ले जा सकते।” कप्तान

ने सख्ती के साथ कहा। “मेहरबानी करके स्टीमर पर आ जाइये।”

“आपको हमें रोकने का कोई हक नहीं है।” नौजवान ने

जवाब दिया, “इसके लिए आपको अमानत में जाना पड़ेगा।”

“इससे हमें कोई भरोकार नहीं। हम उसका जवाबदारी नहीं

हैं। हम तो वही करते हैं, जो मालिक हमसे कहता है। अगर आपका

पार जाना है, तो ऊपर आ जाइये। हम नाव को पार नहीं ज़िम्मे

देंगे।”

नौजवान ने मांझी के पैरों चुकाये, स्टीमर पर चला, एक

नोटबुक निकाली और जहाज़ियों के नाम पूछे।

“बड़ी खुशी के साथ,” कप्तान ने इतनीनतापूर्वक उत्तर दिया

“आप जो चाहें, लिख सकते हैं।”

जब यात्री को घाट पर वापस पहुँचा दिया गया तो उसके

उठकर उसके पास आया और उपानतापूर्वक मसकाना हुआ कर्तन

लगा:

“बेकार क्यों परेशान होते हैं श्रीमान? जैसे ही मुसाफ़िर

पूरे हुए, हम क्रायदे के मुताबिक आपका पार न जायेंगे नीतिनय,

”

इस बीच मेरे साथ नाच क्यों नहीं पी लेते? शहर और वन के साथ ---"

मुसाफिर ने जैसे यह सुना ही नहीं:

"और यह सब कौन करेगा कि कायदे के मुताबिक क्या है?"

"भै!" ठेकेदार ने मुमक़राते हुए ही कहा। "इस घाट का मैं अपने पास है और मैं यहाँ प्रतियोगिता नहीं चाहता। ज़मीन में पड़ा नये ट्रॉन दगा। साथ क्यों नहीं पीने? चन्दिये जैसी आपकी मन्नी

लोग गठरी, गठुर, पुलिंदे लिए लगातार आते ही जा रहे थे। कई सामान से भरी गाड़ियाँ भी थीं। आखिर जहाज़ियों ने बजरे पर चढ़ने का तक्ता बिछा दिया और मुसाफिर उस पर सवार होने लगे। स्टीमर ने सीटी बजाई और बरख़राने लगा। तभी उन्होंने किनारे से कुछ लोगों के पुकारने की आवाज़ सुनी—ये लोग देर में आनेवाले थे और अपने हाथ हिलाते और लाल धूल के बादल उड़ाते से भरसक तेज़ी से भागते आ रहे थे। कप्तान उनके लिए दूध, जॉर्जि, अन्य चीज़ें तुरन्त नहीं मिल सकीं। मुसाफिर से मिलनेवाले किराये का नुक़सान हो।

"चलो!" उसने आखिर आदेश दिया।

ठेकेदार फिर अपनी मेज़ पर जा बैठा। नीकर ने तवा भर जलते लान-लान कीचले लाकर समीप में ढाल दिये। ठेकेदार का परिचित एक छोटा प्रफ़सर उसके साथ आकर बैठ गया। उसने नाच का पीछा होते देखा था और अब वह उसके बारे में अपने मित्र से ख़बर कर रहा था।

गन्म साथ ही नज़रना पर फूट मानने का ठेकेदार बोला "क्यों नहीं गन्म है उनमें।"

आपकन नम्र से बतलते प्रफ़सर ने पिछला पूछा नम्रन "क्यों नहीं गन्म है उनमें।" "क्यों नहीं गन्म है उनमें।" "क्यों नहीं गन्म है उनमें।"

बोले चने! पानी में हूर लहर हो अन जगना बाग़ी है मगर यह घाट से टकराती है कि ख़रम ही पानी है।

जरा ही देर में वे नाव आर उस मसाफिर के पास में भूत ब्रुके थे और शहर की ताज़ा ख़बरों और अफ़वाहों की चला चला लगे थे। उनमें से कोई इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता था कि एक दिन सारा ही शहर इसी घटना की चला चला होगा।

इसकी शुरुआत ठेकेदार को अनीपचारिक रूप में वह ख़बर मिलने के साथ हुई कि समारा नगर में अमर बिलाप रसिदाद शहर की गई है और उस पर क़ानून के साथ मनमाने करने का इलज़ाम लगाया गया है। पहले वह यह नहीं समझ पाया कि यह किस वारे में है। वह काफ़ी लंबे अरसे से इस बंधे में था और उसमें कई मामले ऐसे भी हुए थे, जिनसे वह निरुत्तर आया था, मगर ऐसे किसी मामले का उसे कभी सामना नहीं करना पड़ा था। उसे बताया गया कि फ़रियाद किस वारे में है और यह कि क्या चला कि वह किसी ज़ल्यानोव नामक आदमी ने शहर की है। वह सहायक वकील है और समारा में प्रेक्टिस करता है। उस आदमी अख़िर ज़ेहरे आर नेज आया की बंद रहे आते। उस वक्त भी यह आया कि उसके दोस्त ने घाट से टकरानेवाली नहर के पास में क्या कहा था। "समझे नहीं," ठेकेदार ने जवाब दिया। "उसका ज़्यादा है कि वह मुझे डरा देगा।" वह उस बात पर विश्वास कर ही नहीं सकता था कि एक बूढ़ा गाज़ी। पीछे उस अदालत में जाना पड़ेगा।

उसे यह भी बताया गया कि यद्यपि वह छोटे गज़ीर मामला नहीं है, पर है ऐसा, जिस पर अदालत में जाया जाय नहीं है और उसकी सजा 10 महीने की है। और ज़माना इतना उससे बचा नहीं जा सकता। अन्त में ज़माना में दस्ता चला है, तो अच्छा यही होगा कि वह नहीं जाय ले

और जिस वकील ने तब इसे मज्जा गया वह अनभिनव नगर आता था - युवा साथ ही एक पुराना सा पत्र था और नमकी इस्तेमाल करता था। उसने अपने मर्यादा को बताया कि मामला सीधा-सादा है, मगर है परेशानी में डालनेवाला, क्योंकि स्वच्छाचार पक्ष है और मजबूत तो इसकी चलती बात नाबिन करने में बहुत मजिद इसकी पड़ेगी। वकील बचपन की बात नहीं, ईश्वर देगा है।

उसने पेजगी ली और अदालत चला गया - मुकदमे की सुनवाई मुद्दालेह के शहर में, किसी दूसरे जिले में बहुत दूर, हो रही थी। जब वकील स्थानीय अदालत में पहुंचा, तो उसने पाया कि न्यायाधीश पत्र पढ़ा पढ़ा से मज्जा है। उसने उनका शिष्टतापूर्वक अभिवादन करते हुए कहा:

"तो, साहब, आप समारा से आये हैं? कितनी दूर से! तो किलोमीटर तो होगा ही... और फिर ऊपर से हमारी रुसी सड़कें!"

अभियोक्ता ने जवाब दिया कि रास्ता तो বেশक लंबा है, मगर उसने बातचीत आगे नहीं चलाई। जरा ही देर में उन्हें न्यायाधीश ने कमरे में बुलाया गया। जब रोबदार आदमी या आन कमकी आंखों के नीचे अभिजातमुलम घेरे पड़े हुए थे। उसने फरियाद को पढ़ने के बाद दोनों पक्षों को राय दी कि वे अदालत के बाहर समझौता कर लें, क्योंकि मामला बहुत ही मामूली है। युवा अभियोक्ता ने जवाब दिया कि वह आज या आने कभी भी समझौता करने के लिए कतई तैयार नहीं है और उसने मुकदमे की सुनवाई करने की मांग की। कुछ ही देर बाद न्यायाधीश ने निर्णय दे दिया - मामले की सुनवाई को मूलतः करना पड़ेगा, क्योंकि वह बातों का स्पष्टीकरण करना जरूरी है।

मगर लौटकर ठेकेदार के वकील ने उसे सारा किस्सा सुनाया।

ठेकेदार उलझन में पड़ गया था। अपनी गद्दी को खींचता हुआ उसने कई बार उसे टोककर कहा:

"वह इतनी मेहनत कर किसलिए रहा है? एक वकालत, तो गाज गिरे मुझ पर, पर बात में नहीं समझ पा रहा - आप मर लिए इतना इसलिए कर रहे हैं कि मैं आगले मोड़ी पीना डे रहा हूँ, पर मैं फ्रीस न दूँ, तो आप मेरे लिए कुछ भी नहीं करेंगे। ठीक बात है, न? मगर वह तो इस मामले में अपना ही पैसा लगा रहा है और आने-जाने में जो कौमती बर्बाद हो रहा है वह अलग से। सो किसलिए? क्या आप यह बात मुझे समझा सकते हैं?"

"वह अभी छोकरा ही है - नौसिखुआ!" वकील ने जवाब दिया और कंधे सचका दिये। "वह महत्वाकांक्षी है, मगर वह नहीं जानता कि उसने कौनसी मुसीबत सोल ले ली है! न्यायाधीश उसे मज्जा चखा देगा। मामले की सुनवाई जब होगी, तब तक उसे छटी का दूध याद आ जायेगा!"

वकील जानता था कि वह क्या कह रहा है।

मुद्दे और मुद्दालेह को एक बरसाती दिन की जव अदालत के सम्मन मिले, तो पतझड़ उतार पर था, ओल्गा जा पानी छेंटा हो चुका था और उसके ठंडे कितारे एकदम जीवन में पड़ने लगे नजर आते थे।

इस बार ठेकेदार अपने वकील की वापसी का देखगरी ने इंतजार कर रहा था।

"न्यायाधीश ने फिर तारीख लगा दी," वकील ने वापसी पर यही पहले शब्द थे। वह खुशी के मारे अपने हाथों को गंठ रहा था। "न्यायाधीश है अपने काम में मास्टर। उनका फिर एक रास्ता निकाल लिया। मगर यह मानना पड़ेगा कि उन छोकरों को बरदाश्त करना मुश्किल है।" वकील की आवाज में सरहल की अजीब-सी गूंज आ रही थी। "वह अदालत में फिर से फिर लगे

भीगा और कीचड़ में मना आया था। आप तो जानते ही हैं कि नमस्कार न करने तो आप स्वयं क्या जानते थे—प्रलय में भी बदलना। मगर इसमें बड़ा बदलावा नहीं। मना था न्यायाधीश न पिएर रहा कि हम अदालत में बाहर तो गमजाना पर ले, पर वह मैगार हो नहीं जा। तोई बात नया प्रयत्न। कुछ साफ़ और नया न वह, प्रयत्न प्रयत्न आप ही बदल जायेगा। हम थाकर हमारा कचूमर निकाल देंगे। देखते-देखते ही वह भाग खड़ा होगा।”

डेकेदार चुप था। वह बड़ा अजीब अनुभव कर रहा था—मानो वह किसी लड़के पर जा रहा है और अचानक उसका सिर किसी प्रदूष्य, चट्टान जैसी सख्त चीज में टकरा गया है।

गमय बीतता गया।

बोल्गा अब जम गई थी। लगता था, जैसे कभी किसी ने इस विशाल मफ़ेद मैदान को नाव से पार नहीं किया था, जैसे वहां कभी कोई बजरा नहीं रहा था और घाट तो परीवर्थाओं का बर्फ़ का बना मकान जैसा ही लगता था।

नव वर्ष के कुछ ही दिन पहले सहायक वकील व्यादोमिर इत्योच सत्यानोव को स्थानीय न्यायाधीश का सम्मन मिला। उसके परिवार में एक मुन्डमें न बाने में मानम था। उसकी मा अपने बच्चे को मरफ़, जो किसी अनिधि के साथ जनरल बन रहा था, भुगत हुए नितापूर्वक मोचने लगी कि इतना न जैसे दूसरे छोड़ पर अभी हम जगह पर हम न बिना उस एक रात और अनमोय गगनपर शक़ारी, गोड में नया पेंशन जाना होगा वह जानती थी कि उसका जगदा बदलवाने से निश्चिन्त करना बेकार रहगा, मगर वह वह रहे बिना न रह सकती।

“व्यादोमिर, काश कि तुम डेकेदार पर जवाबा मुकदमा बापन के लो। इसका कुछ नही होनेकना क्या का प्रामा-जाना करने में तुम अपने का बग़ बराबारी हो, और कुछ नहीं।”

“मुझे जाना ही होगा, मां,” बिगा। पर मे प्राची आने उठते हुए उमने कहा। “मुझे यह भयाना पुन लपना है। मैं ऐसे मीके को गुजरने नहीं दे सकता। चारे के ल बिना ही खो न डालें, आखिर उन्हें फ़ैमला तो सुनाना ले पड़ेगा। गा-पर-।। इसका पता चल जायेगा—मैकड़ों लोगों को, यह बज बरिम मचा रहेगा! मैं ख़ूब जानता हूँ कि न्यायाधीश कन सा रहा है। वह इसे जितना हो सके, उतना खींचने को, उतना टाकने का प्रयत्न कर रहा है, क्योंकि उसके आगे कोई चान नहीं है।” और अपने प्रतिद्वंद्वी की तरफ़ मुसकराकर देखने हुए उमने कहा, और न तुम्हारे पास ही है—मात! लेकिन वह मुझे सच नही मकना, अफ़सोस वम इसी बात का है कि मुझे रात को सोने तकनी प्रोवा।

बसंत आ गया था। पिघलती बर्फ़ सैलावी नदी में प्रोमी चान ने वह रही थी, तेरती हिम शशियां आपस में टकरा रही थी नाफ़ पानी के अंतराल चौड़े होते जा रहे थे। गीले खेतों में माप उठ रही थी और हर चौबच्चे के पेंदे में गुनहर गुनहर रंग बने हुए थे। नदी में अभी जहाजरानी जग नहीं हुई थी। स्त्रीमर अभी अपने गले साफ़ कर रहे थे और फटी छवाट में पकड़ने तो पुकार रहे थे, लोग नालियों और घाट की बर्फ़ से तोल रहे थे मगर यात्रियों का नदी के पार जाना शुरू हो गया था।

नावों का एक विशाल बेड़ा यात्रियों को उधर-उधर ले जा रहा था। इनमें भारी मछलीमार नावें भी की और मागारण दोड़ी नावें भी। और जहां भी लोग आपस में बातचीत करने का प्रयास होते, वे घाट के मालिक, डेकेदार की ही आंख करने, जो उस समय जेल में अपनी सजा के दिन काट रहा था।

पुरानी टोपी पहने मांझी जवानापरक जैसा अनुभव कर रहा

जा। वह जान नहीं थी कि उसी समय-समय गांधी जी ने मुना
के बन्धन को तोड़ दिया था और वह उसी जगह पर जा रहा था।

वह जानता था कि वोना न जायेगा। वह तो उसे डेढ़ मिनट
के साथ लाऊँ हो जाता है। वे नीजियान मगर नजरदस्त है और
क्या गरजती आवाज है! उसने कहा, 'मारो डांड!' तो मेरे
पास तो अपने आप ही चप्पू चलाने लगे!"

"उहरो जरा, ठेकेदार के छूटने दो! देख लेना, वह तुम्हें
झंक कर देगा! तुम सभी रोओगे!"

लेकिन मांझी हंस पड़ा:

"अरे नहीं! उनका तो उसकी चाय ने ही हँस ले लिया है, हाँ!
वह क्या फिर जेल जाना चाहेगा? और अगर वह कुछ करने की
सोचता भी है, तो क्या हुआ, हम..." मांझी ने गहरी सांस ली
और गुरीया: "चाल उलटो! रोक दो!"

म० प्रिलेजायेवा

जाड़े का दिन

इस कहानी में वर्णित घटनाएं पिछले वर्षों में सोवियत संघ में पड़ी
थीं—जाराणाही जमाने में लेनिनग्राद का उद्देश्य था। जाराणाही
इत्यादि उस समय वहीं रहा करते थे।

सरदियों में एक दिन व्लादीमिर ज्योव पुर्तगाल जागृताना
देखने के लिये गये। उनके परिचित एक डॉक्टर ने मेनजर को
कहा कि एक बड़े विद्वान व्यक्ति आये हैं। और वह हमारे पास
खाना देखना चाहते हैं।

कारखाने के कार्यालय के एक कर्मचारी ने प्रवेश द्वार बना दिया,
जिस पर लिखा था: "यह प्रमाणित किया गया है कि श्री ज्योव
इ० उल्यानोव को कारखाना देखने की अनुमति है।"

व्लादीमिर इत्यादि ने उसे धन्यवाद दिया और कारखाना के
अहाते में प्रवेश किया। वह बड़ा विशाल था और उसमें कई विभाग
थे। लेनिन कारखाने की मशीनरी और मशीनों की निपुणता में
बहुत प्रभावित हुए, जिनके चेहरे बहुत ही खूबसूरत थे और निपुणता थी।

फोरमैन ने बताया, "हम राजनीति की उन्नति करने हैं। उन्नीसवीं
से सब बीमारों से नज़र आते हैं।"

जहर पर काम फिर आरंभ था। जाराणाही उन्नीसवीं उस समय
उत्थान बिलाई विभाग में था। उसमें उन ने जोर दे कर कहा कि नज़र
तल के लंबा की रोगी थी। उनका बीमारी रोगी में नज़र आ रहा
कोई बीमारों की तरह जड़ ही नज़र आता था। अंतर्गत की रोगी
उत्ता अफसर समझते हैं। फोरमैन ने उन्हें काम की निमित्त प्रेरित किया।

हा परिणाम दिया। लेकिन उसका म निरन्तर जाने ही माने र
आप अभी वर नहीं हुए ही नहीं हो था।

"यह क्या हो रहा है?" फोरमैन ने उल्लू जैसी गोल-गोल
सांख्यवाले एक जवान मजदूर से उगठकर पूछा।

जो जवान अपनी गंठों र अपने टांके को धराने हुए इस्पात
की एक पटरी को लंबे चिमटे से संभाल रहा था।

"क्या हो रहा है वह?" फोरमैन ने और भी ज्यादा सहृदयी
के साथ कहा।

"भूख के आगे किसका बस है, भैया!" मजदूर ने हंसकर
कहा।

"खीसे मत गाढ़ो। जानते नहीं, किससे बातें कर रहे हो?"

मजदूर की तयारी चढ़ गई।

"जाओ उस्ताद तुम, अपने रास्ते जाओ!"

फोरमैन के तेवर भी चढ़ गये।

"बदतमीश! इसके लिए तुझ पर जुरमाना किया जायेगा,"
उसने कहा और वहां से चल दिया। व्लादीमिर इत्येच उसी के
पीछे हो लिये दरखुमा इस्तर में फोरमैन ने एक सेज की दरवाज
में उस मजदूर की गंठ गंठिका निगाली और उसमें कुछ निम्न
दिया।

"क्या मैं इसे देख सकता हूं?" व्लादीमिर इत्येच ने पूछा।

"हां, हां।" खंचारते हुए उन्होंने इस्वात विन्गर्ट विभाग
क्या अन्य विभाग की जांच-मापनी को कहा "मजदूरों का हाथ-
पैरों का यह सब और उनमें खाना खाने की छुट्टी नहीं है।"

माय बिना यह काम कैसे करेंगे?" व्लादीमिर इत्येच ने

कहा।

"वे अपना खाना साथ लेकर आते हैं।"

मगर आपने तो उस आदमी को खाने के लिए ही डांटा था।"

"उसने बदतमीशी जो की थी, फोरमैन बदतमीश मगर
वह गमझ गया कि आगंतुक जुरमाने र निगाले र गट वने
अजीब बात थी।

टन्-टना-टन्-टन्।

कोई लोहे की पटरी के टुकड़े को बजा रहा था, या विभाग
में घंटी का काम देता था। उसकी आवाज को मगर मजदूरों के
भोहू ने पकड़ लिया था। दिन की पाली खुदम हो गई था।

"अरे, ओ फ्योदोर!" फोरमैन ने उस मजदूर से आवाज
लगवाई, जिसे उसने डांटा था। "मैंने तुम्हारा जुरमाना मारकर
दिया है। इसके लिए हमारे उन मेहमान का शुक्रिया अज रगे।"

मजदूर उनकी तरफ देखे बिना चला गया।

"गंवार कहीं का! देखा आपने, कैसा गंवार र फोरमैन
ने माराजी के साथ कहा।

"थके और भूखे आदमी से शिष्टता की उम्मीद मत की जा
सकती है!" व्लादीमिर इत्येच ने कहा।

वह सैकड़ों मजदूरों की भीड़ में मिलकर भारघाते में निरत
गये। एक घंटे बाद ओगोरोदनी गली में पुतोलोव मजदूरों र मजदूरों
की अध्यक्षता-महली की बैठक होनेवाली थी। व्लादीमिर इत्येच भी
अपेक्षित थे। मजदूर उन्हें फ्योदोर पेवोविच के नाम से जानते थे।

शाम होते-होते सरखी चढ़ गई थी। तेज ठंडी हवा उनके
मुह पर थपेड़े मार रही थी। व्लादीमिर इत्येच ने अपने सावनीट
के कातर को उठा लिया।

"क्या जिंदगी है!" उन्होंने मन में सोचा। "एक घंटे रोने की
मशकत, खाने की भी छुट्टी नहीं और अगर मे जइस रुदन पर जुरमाने।"

लेकिन ओगोरोदनी गली में मजदूरों पर पड़ने की बाहर ही
मगर परिचित मजदूर न उनकी समझती की बनावटवाले समर
के गुन दरवाने में उनके रिती की मजदूर-जनी आवाज गुंताई थी।

अपने सत्य गा, पर मुझ पर एक फिर ज़रमाना होगा ।
 "आपने जो मेरमान है ज़िन्ना अदा करो । मरमान ना
 आपने सत्य गा, पर मुझ पर एक फिर ज़रमाना होगा ।

"आयद होगा, और तो भी बिना किसी वजह के," ज्वादीमिर इत्सीच ने जल्दी से कमरे में घुसते हुए कहा।

मैज के आगपास बैठे लगभग पंद्रह लोग उसी मजदूर की बातें सुन रहे थे, जिसे उन्होंने आज दिन में देखा था।

"मेरा नाम प्र्योदोर पेत्रोविच है, मतलब यह कि हम दोनों नामराशि हैं," व्लादीमिर इत्योच ने कहा और मुसकरा दिये।

“चरे ! यही तो आज हमारे विभाग में आये थे ,” फ्योदोर ने कहा और खड़ा हो गया ।

रामने म. नामोनी का मंडे। कुछ लोग बहुत ही नायक नजर आने लगे। मगर इससे वह विचलित नहीं हुए, बल्कि वह खुश ही हुए।

"यह सुशी की बात है कि आप लोग इतने सतर्क हैं,"
-पार्लिंगर ज्योत के साथ। और मार्थ प्योदोर, आपने स्थिति
को बहुत अच्छी तरह समझ लिया है। सचमुच, 'मेहमान' अपने
गना चरा गया है, मगर फोर्मेन और मैनेजर वही हैं और वे
जुरमानो से आपकी नाक में दम करते ही रहेंगे।"

मजदूर अपनी जानों को बहुत त्याग में गुन रहे थे, क्योंकि
जा यह कह रहे थे, उसका उनको जीवन, उनके भविष्य के साथ
संबंध था। पुणेदोर खामोशी में बैठ गया।

"हम इसका मुकाबला कैसे कर सकते हैं ?" नार्दामिर
जवाब न देता निर्भयता से ही । "

‘मर्गो गान है’ पर गिनिया ने प्रांते नहीं बिपटा जा सकता। हम एकजुट होना होगा,” प्योदोर ने सोचा। उसने अपने को पहले किसी भी समय की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली और माहुरी अनुभव किया। देर गये गान नव मजदूरों ने जार की हुकुमत के खिलाफ,

सारखाने के मालिकों के खिलाफ जमानत पर कायम कर फरार की
श्रीर व्लादीमिर इत्योच की कही बातों में काफी योग्य।

जब अध्ययन मंडली विश्वरत्ने तथा जो पत्राचार ने तथा "चलिये, मैं आपको घर पहुंचा दूँ।" उनसे अपने वयस की ही - उसके लिए आज की शाम अविस्मरणीय थी।

लेकिन व्लादीमिर इन्हींच ने जवाब दिया

“नहीं, यह असंभव है। हम दोनों ही जानकार हैं। जान जो हमारा पीछा करने की कोशिश में बाहर कोई व्यक्ति गलत हो, तो? इसका मतलब होगा कि हम दोनों एक-साथ उसी जगह पर रहेंगे। हम दोनों को अलग-अलग ही जाना होगा। मतलब यह होगा कि हम दोनों की बात को कभी मत भूलना। भुलिया पुलिस गैरमैन का मतलब किसी को भी हमारे संघ के बारे में हवा भी नहीं बर्तनी चाहिए। ठीक है न?” और उन्होंने उसकी तरफ, श्रद्धा: सजाक में, नहिम असल में गंभीरता के साथ अपनी जंगली हिनाई।

पहले एक मजदूर गया, फिर दुसरा, फिर तीसरा यानि सभ
बाद ब्लादीमिर इत्यादि के जाने की बारी आई।

सड़क पर जाने पर उन्होंने ठंडी हवा में सुख से नाच नाच ली। वह खुश थे, क्योंकि मजदूरों ने जुरमानों की प्रणाली और पूँजीगतियों के विरुद्ध लड़ाई के बारे में क्या सोचने की उनका प्रकट की थी। उन्होंने निश्चय किया कि वह इस विषय पर एक कदम निकटवर्ती।

मन्त्र पर ध्वनि-वाते का इस वेद के पार में ही भोजन
परा ... वादनी गत थी नगरी पर नफेद वादने ईश्वर का
ये प्राण उनका बीच बैठा पीछा नाद सुनी मन्त्र के हर पद मन्त्र
वेच हो आनन्दित हर रहा था। स्वतन्त्र - स्वतन्त्र स्वतन्त्र
निगम एक आदमी पर पड़ी जो मन्त्र - इस मन्त्र पर नाद
में छिप-छिपकर नन्द रहा था। स्वतन्त्र दूरी वादने नन्द दिया कि

युक्रिया पुलिस को आदमी पर उसकी निगाह नहीं पड़ी है और प्रीतन ने साथ-साथ साथ-साथ चले गए, यद्यपि अब वह पहने थे नेत्र चकने लगे थे। उन्होंने पीछे-पीछे, सड़क पर बंसा जमा द्राम को चढ़ी की आवाज नहीं। किसी ने ज़रूर उन्हां से पकड़ ली। लिये मगर युक्रिया भी ज़रूर उस पर चढ़ा दी गया था। व्लादीमिर इल्यीच ने उस पर जल्दी से एक निगाह फेंकी: उसकी मुँह काली थी और उसने काला चश्मा लगा रखा था। व्लादीमिर इल्यीच अपने दरवाजे के साथ वाली सीढ़ पर बैठ गये। उन्होंने अपने ओवरकोट के काबल को उठा लिया और सोचने लगे कि उससे कैसे पीछा छुड़ाये।

उनका स्टॉप अभी भी बहुत दूर था, इसलिए वह नींद के झोंके में आ जाने का दिखावा करने लगे। उन्होंने अपने सिर को झुका लिया और द्राम की गति के साथ-साथ झूमते हुए बचकर निकलने की तरकीब सोचने लगे। खिड़कियों पर बर्फ जमी हुई थी, इसलिए वह यह नहीं देख सकते थे कि हैं कौनसी जगह पर। युक्रिया उनसे दो सीट पीछे बैठा हुआ था।

"मैं अपने स्टॉप से तीन स्टॉप पहले उतर जाऊंगा। लेकिन मैं जानूँगा कि मुझे ध्यान रखना ही होगा कि मैं ठीक जगह उतर रहा हूँ।" व्लादीमिर इल्यीच ने सोचते-सा अभिनय करने हुए ही खिड़की पर गिर पड़े। मगर अपने में वह बर्फ जमे काच पर गिर पड़े हुए थे। वह पाउंडर में जादू गकने थे कि वह स्टॉप के नाम पुकारना अब मगर वह यह नहीं चाहते थे कि युक्रिया उनका आवाज ही सुन और पहचान ले—यह बहुत गलतफहमी बनती।

काच पर गिर पड़े-पड़े व्लादीमिर इल्यीच ने बर्फ के एक नुल्ले-नुल्ले हिस्से को पकड़ा दिया था। उन्होंने आगे मिर्चामिचालर कहा कि द्राम जहाँ पर है। वस, एक ही स्टॉप और जाना था... और वह वह भी आ गया। द्राम गयी हुई।

"कोई उतर रहा है यहाँ पर?" इल्यीच ने पुकारकर कहा।

किसी ने जवाब नहीं दिया। व्लादीमिर इल्यीच जान ना कुछ नहीं, मगर उनका दिमाग धन-धक कर रहा था। धीरे-धीरे वह द्राम ने मदक खायो। उसी क्षण व्लादीमिर इल्यीच जहाँ से उठे और चलती द्राम से कूद पड़े। वह गलत राह पर अपने में गम गये, जिससे दूसरी सड़क पर निकला जा सकता था। वह जानते थे कि यह बचने का अच्छा रास्ता है। गमन-गमन उन्होंने द्राम की घंटी के बजने और लोगों के चिल्लाने की आवाजें सुनीं। सड़क के भीतर उन्होंने क्षण भर के लिए खड़े होकर पीछे से तरफ मन्नर डाली। द्राम को रोक दिया गया था, युक्रिया अपने नीले चट नुल्ले था और अब वह सड़क पर इधर-उधर देख रहा था। मगर मन्नर गुनसान थी। कहीं, किसी भी मकान में कोई भी नहीं नही जानी हुई थी। तब तक द्राम जा चुकी थी।

व्लादीमिर इल्यीच ने अहाता पार किया, दूसरी मन्नर पर निकल आये और घर चले गये। उनकी मकानदारिन नोट हुई की। वह दबे पाँच रसोईघर में गये, कुछ चाय बनाई और गंदी उठाई क्योंकि वह बहुत ही भूखे थे।

"तो, साथियो! हम किस चीज के बारे में बात कर रहे थे?" गरम-गरम चाय पीते और रोटी को कुतरते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने अपने में ही कहा।

"युक्रिया तो कुछ देर लो में उनका स्टॉप। उन्होंने कहा और मुसकरा दिये। "तो, हम कह रहे थे कि..." व्लादीमिर इल्यीच ने खिड़की की तरफ देखा। काँच बर्फ में मनोहारी कलने और पत्तियों से ढंका हुआ था।

"कोई हमें आजाद नहीं करेगा, हम अपनी आजादी के लिए आग लड़ना होगा," बर्फ के नीले और सफ़ेद फूलों से जगमगाते हुए उन्होंने सोचा।

मई का महीना था। झुगेन्कोये' ग्राम के आनपाम के काले खेतों पर हरे-हरे पत्तों की चादर बिछ गई थी। विरल जनों पर एक नई ही सुगंध उतर आई थी। कौचड़ भरे रास्ते सूख गये थे।

घर के बाहर बैठा ओस्कर उद्यान आंगूठों से अपनी मकानदारित्त की उंगलियों में छलछल करती मलाईयों को देख रहा था।

"क्यों बैठा, जो ठीक नहीं है क्या?" बुढ़िया ने पूछा।

ओस्कर ने जवाब नहीं दिया। कहना क्या? उसे नहीं मालूम था कि खराबी है क्या? अकादीमिर इल्यीच ने यह जानने के लिए कि उसे तकलीफ क्या है और कहाँ है, पूरे एक घंटे उसमें पूछताछ की थी, मगर ओस्कर उन्हें कुछ नहीं बता पाया था। वह कमजोरी महसूस करता था, कम, और कोई ध्यान नहीं थी। उसमें नाकन ही नहीं रही थी, और सो भी बाईस साल की उम्र में ही। और वह तो न तो मरने-मरने का सोचता था और न ही मरने का डर महसूस करता था। वह तो बस अपने-आप को नष्ट करने का सोचता था। वह तो बस अपने-आप को नष्ट करने का सोचता था। वह तो बस अपने-आप को नष्ट करने का सोचता था।

आइए जो बात ना मन में एक नमो-नमो २ " ओस्कर ने कहा।

ओस्कर अकादीमिर इल्यीच को बताने लगे थे।

तो वेना ओस्कर तुम्हें हम ठीक करके रहेंगे—यह नय

होता है— निर्विघ्न में रहने के बाद अपने-आप को नष्ट करने का सोचता है। वह काफी काम करते थे, काफी अच्छे थे, और वे भी बहुत ही और जनरल की इन अजीब गलतियों से इस तरह के नमो निकाल लिया करते थे। आम को यह संभव था कि वह नमो निकाल पुस्तकें पढ़कर सुनाया करते।

कंधे पर अपना बस्ता लटकाये पतंगें उड़ाने, वह अकादीमिर इल्यीच में भागना निकल गया। उसके सगे पैरों से इस तरह का गवार उठा दिया।

ओस्कर को उनके पिता, जो एक प्रसिद्ध मरदाने थे, जो पर ने गागिरी के लिए ले गये थे, तो वह अकादीमिर इल्यीच का बड़ा रहा होगा। वे पीटर्सबर्ग में मेन्की मार्ग पर निरंतर एक बड़े इकान की खिड़की के सामने आकर खड़े हो गये थे। निरंतर न केवली मरदाने पर ही जवाहरान का उम्र उम्र गलत स्थिति हुआ था। अकादीमिर इल्यीच बुढ़िया मुन्तरने रहने वाले अकादीमिर अंगूठियां और बहुमूल्य रत्नों के गुच्छे बड़ी तेजी से कुछ रत्न लटके की बूंदों जैसे, तो कुछ ओसकणों जैसे लग रहे थे। एक दिन तुम भी इसी तरह की चीजें बनाओगे, उसने पिता से कहा था। "मे तुम्हें मुन्तर का गागिरी बनवाने के लिए बुझी के सारे लड़के का चेहरा फूल उठा। वह अकादीमिर इल्यीच को मन्त्रमाली टोपी पहने और मन्त्रमाली लून पर बैठे अकादीमिर इल्यीच से इन बुढ़िया चीजों को बनाते देखने लगा।

जिस आँख से ओस्कर का सबसे बड़ा भ्रष्ट परिवार हुआ, वह थी इस्पात की एक छड़ जिस पर अकादीमिर इल्यीच की थी। मुन्तर का नाम था ताडफेर, और वह एक छोटी सी लकड़ी का डोर उसके निरंतर पर सार बना था कि जिसकी लकड़ी लकड़ी नहीं ओस्कर को उसके नाम से कभी नहीं बुझा हुआ था कि

होगा "ओ किन्नी!" ही कहा जाता था।

अगले गुरुवार मध्य रात्रि अपने गार्निशर के बच्चों को खिलाने और रोटी और वोदका लाने जैसे काम ही करता रहा, अलबत्ता बीच-बीच में उसे सुनार के काम की कुछ प्रारंभिक बातें भी सिखा दी जाती थी। जब वह सोलह साल का हुआ, तो वह अपने गार्निशर का घर छोड़कर चला आया और पुतीलोव कारखाने में काम करने लगा।

कारखाने में सुनार का शागिर्द खराबी बन गया। हर किसी की हिंजिया खाने और प्रभाए माननवाना इवना पनना छोड़कर एक हड़कड़ा मजदूर और बहादुर क्रांतिकारी बन गया। मजदूरों द्वारा वैनकाव किये गये एक खुफिया ने इस बात को स्वयं अनुभव दिया कि ओस्कर किन्ना शक्तिशाली है। खुफिया की मरम्मत करने की सजा के तौर पर ओस्कर को तीन वर्ष के लिए साइबेरिया निर्वासित कर दिया गया।

... वह बेंच पर से उठा और घर के भीतर चला गया और अपने सिर के नीचे हाथों को लगाकर बिस्तरे पर इस तरह पड़ गया कि लगता था कि ऊँचा रहा है या गहरे विचार में डूबा हुआ है।

गाँव के पहनायी चरमरुद्ध और बच्चों के चिल्लाने की आवाज़ें सुनकर वह उठ बैठा। उसने खिड़की पर जाकर बाहर की तरफ देखा। सड़क के उस पार, जिर्यानीव परिवार के मकान के सामने एक धोड़ागाड़ी आकर खड़ी हो गई थी। उसमें शहरी श्याम पहने दो महिलाएँ बैठी थीं। आगपास नीट्टी लगाकर खड़े बच्चों में एक ल्योन्का भी था।

"अरे! यह तो व्लादीमिर इल्यीच की मंगेतर है! ओन्कार उठा और सामनेवाले मकान की तरफ लपका।

"आप नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना है न? नमस्ते!" उसने भूरी पोशाक पहने छरहरी युवती का अभिवादन किया।

युवती ने अपनी भूरी आँखों से उस पर गहरी नज़र डाली और मुसकरा दी।

"और आप वीमार ओस्कर हैं न? मैं मगर आप को जग ही वीमार नहीं लगन। नमस्ते!" उसने आँकुर में हाथ धिपकाया। "मेरी माँ, येलिजावेता वसील्येव्ना से मिलिये, और व्लादीमिर इल्यीच हमसे मिलने के लिए यहाँ क्यों नहीं हैं? कहीं वीमार तो नहीं हैं?"

"वह शिकार खेलने गये हैं," ल्योन्का ने शरमाते हुए पैरों से कुछ धूल उड़ाते हुए बताया।

दूसरे लड़कों ने इस समाचार की पुष्टि की।

"व्लादीमिर इल्यीच रोज़ आपका डैतजार करते थे। वह तो चिंतित होने लगे थे। और आज ही उन्हें शिकार पर जाना था!" ओस्कर ने निस्स्वाहजनक समाचार की तल्बी को क्रम करने की कोशिश करते हुए कहा।

"उफ़! फिर हम क्या करें?" नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने मनाक में असहायता प्रकट करते हुए कहा, 'क्या हम जागम चले जायें?'

"अरे नहीं," ल्योन्का ने विरोध करते हुए कहा, 'वह शाम तक वापस आ जायेंगे।'

लड़कों ने महिलाओं के सामान को घर में लाने में ओन्कार की सहायता की। इसके बाद ओस्कर अपने कमरे में चला गया।

उसी शाम को ल्योन्का ने उसकी खिड़की पर दस्तक दी और कहा कि व्लादीमिर इल्यीच ने उसे निमंत्रित किया है। ओन्कार ने सावधानी से कपड़े बदले।

जिर्यानीव परिवार का घर उस दिन शोर और उत्साह में भरा हुआ था। प्रसन्नमन व्लादीमिर इल्यीच मंच पर नज़रिया और प्याले लगाने में नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना का साथ दिया था।

[illegible]

“हां, ये बड़ी जक्सिजालीं गोलियां हैं,” व्लादीमिर इत्पीन ने सहमति जताई।

[illegible]

श्री दुखी-बनती त्रिया इन भारी टोकरी को लाड़े बाग़ हज़ार
 'मनमोहन' के पैरों पर रखी है। उसे खोज़ना पड़ा कि किसी

बार उन्हें रेत और धोड़े बंदसने को चरान पड़ा होगा। अगर किसी
ही बार साथद उन्हें कोई मददगार भी न मिला होगा फिर उन्हें ही
साथ ही कोना पड़ा होगा।

"यह आपकी ही गलती है," ओल्डर ने जवाब में आवाज से उत्साहना भरे स्वर में कहा। "मैंने ये चीज़ें वही समझते थे सच। हाँ, मैं इनका सपना अनवस्था देखा करता था

भोस्कर ने एक बार व्लादीमिर इव्पोच से कहा कि निम्न छोटे-से गांव में खुरादी के लिए काम न हो सका था। उन्होंने दारों और व्यापारियों से नुनार को काफ़ी काम मिल सकता है। इस बात को वह तो बड़े दिन में भूल गया था, पर रमिन ने यह याद रहो थी।

“व्लादीमिर इत्योच ने आपकी बीमारी के काम से ऐसा दहशतनाक खत लिखा था कि हम तो आपके लिए जगह बनने लगे भी तैयार थीं,” येलिजावेता बसील्गेजा ने हँसते हुए यह मज़क आदीमिर इत्योच ने तभी उनकी तरफ घूरकर देखा जहाँ उनकी मुह पर लाकर चुप रहने का इशारा किया।

अगली सुबह को ओस्कर ने अपने कमरे को इन सब चीजों से सजा दिया, जैसा उसने कभी नहीं किया था : फर्श को पोंछा, पर्तों को धोने की मेश को साफ किया और उन पर साफ कपड़ा बिछाया और इसके बाद अपने खजाने को उस पर फैलाया।

वह जानता था कि उसे क्या करना है।

उसने अपनी जेब से एक पाँच कोशे का सिक्का निकाला और उस पर बने दोमुँहे उकाव को गौर से देखा - वह स्वयं साम्राज्य का राज्यचिह्न था। पुलिस ही उसे देखने पर भी उसे गैरकानूनी समझा करता था। उकाव के पंजों में राज्यदंड या राज का संकेत भी सुनार के हाथ में उसे पीड़ने के लिए लट्ठी बनने की जगह में बाँध दिया रहा था।

उमन सिवक हो निहाल पर रमा और उस पर जोर-जोर
से खोद मारने लगा। पीट-पीटकर उसने उसे लाल ताँबे के छेले
में भरवा दिया। जब उसने अपना धमक टाँक जल्पाया धानु पारे की
नग्न हिलमिलाते लगी। ओस्कर ने उसे ताँबे में उँदेली और उसे
उठे पानी की बाल्टी में धाल दिया। वह ताँबे की उस छोटी-सी
झगुली को लपट और सवारने और मोहने की छत पर मोथा करने
के काम में पूरी तरह से रमा हुआ था, जो ऐसे चमक रही थी,
मानो मोने की बनी हुई हो। मानदार्शन उसे दोषद्वार में धाने
के लिए बुलाने आई, मगर उसने हाथ को हजारे से उसे जाने के
लिए कह दिया। उसके पास अभी खाने का समय नहीं था—वह
बहुत व्यस्त था। उसने अपने हाथों की तरफ देखा। नसे कुछ फूल
गई थीं, मगर अपने हाथ उसे हलके और जानदार लग रहे थे,
उनकी धाँरे अब अदृश्य नहीं थीं। उसने अपनी उर्माँलियों को भीचकर
उठे चार मट्टी चाँदी और उनके भीतर सूत की गर्जिण को महसूस
रिखा।

काम के साथ-साथ वह एक फिनिश माना गुनगुनाता जा रहा
था। काम होने-हाने इनकी अगली भी तैयार हो गई। उसने तालाब
पर एक बंदिब नमना बनाया और उसे भाँचिस पर बिखरा दिया।

अगली सुबह वह ओस के सूखने के भी पहले पृष्ठा नदी के
किनारे खड़ा गया। सड़क का सहीना था, चारों तरफ, भाँचिस-भाँचिस
का दम घिस रहा था। ओस्कर ने कुछ पानी का छोटा-सा गलदस्ता
बनाया और उस पर एक लाला बांध दिया। उसने एक अगली
निकाली—उस पर सूज की रिणो पड़ी और वह चमकमाने लगी।
अब किसी झगुली को देखकर उसे इतनी खुशी कभी नहीं हुई थी।

ओस्कर ने इनकी चाल में त्रिवानोव परिवार का मानन की
तरफ काम बढ़ाये। मगर उस बहुत ही उतावला हो गयी थी।
उर्माँलिया उसने अपना डोंग उताव आर दोड़न लगा। व्लादीमिर

हलीच और नादेज्दा पोन्स्तानोवो ॥ १॥ उताव अगली ॥ १॥
और विलेंच उससे नहीं मिला जा रहा था।

सावयेरियाई हवा निमेष नदियों, पानी जगना और दुनिया
का गवस को गुन अन्त बागना हो जोर का गुन ॥ १॥
ओस्कर ने रने गीत का बोना की अना मार ॥ १॥

य अगलिया अना गायो म अन्त मयतावस म रति ॥ १॥
समय के प्रभाव से उनका रंग स्याह हो गया है, मगर वे अना भी
सुंदर हैं, क्योंकि उन्हें स्नेह के साथ उन गया न बनाया है, जो
काम करने के लिए व्यग्र थे। सचमुच, यह स्नेह ही भेद है
मनमुच, य मिनाता की अगलिया है।

तीन दिन से पानी लगातार बरस रहा था। छवारियों में फूल थोड़े हलन्धे लग रहे थे, पेड़ों पर से शाखें छोटे-छोटे टुकड़े-टुकड़े में टूट कर हवा में उड़ रही थीं। पक्षी खामोश थे। लगातार की बारिश से चढ़ी हुई नदी अब अहाते के किनारे से थपेड़े मार रही थी।

बुराब मौसम और चिंता ने काठ को बने इस छोटे-से मकान पर भी अपना छाप बना रखा था। अभी कुछ ही दिनों पहले तक नीचे गरमी ने मकान की प्रकाश और प्रसन्नता से भर रखा था। उल्यातोव परिवार व्लादीमिर इल्योच को आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था।

...इस ही दिन पहले उनकी माँ ने यह सोचकर राहत की सांस ली थी कि समीवन का बका अन्न पीछे छूट गया है और उनके सभी बच्चे अब स्वतंत्र हैं। व्लादीमिर इल्योच अभी अभी मास्कोविया में नीचे का निर्वाणन पूरा करने का काम कर रहे थे। पुलिस ने उन्हें न उनको देश के किसी भी आन्दोलनिक नगर में रहना बर्जित कर दिया था और इनका घर मास्कोव में रहने लगे थे, नाकि गतिशील पेशेवरों के व्यवसाय निकट रह सकें। कम से कम ही भाग में मास्कोव की सड़कियाँ, कार्रवारियाँ तक जानेवाले सुबो ना प्रारम्भ किए जानेवाले शक्ति नगर ही बन गया। लेकिन यह आन्दोलन की पार्टी अवसर की स्थापना की बर्नियादे अल रह थे

उल्यातोव ने अपने परिवार से वादा किया था कि वह मास्कोव में रहने साथ रहने आएगा। लेकिन अभी उन्हें पीटरसबर्ग में लीनिन की निष्पत्ती की खबर मिली। वह एक सप्ताह से ज्यादा से देर में

लेनिन की माँ के लिए यह रहा बड़ा आधान था। मरीया अलेक्सान्द्रोवना बीमार पड़ गई। उसी दिन मास्कोव में यह आधान बने इस मकान में इस कदर परेशानी आई कि माँ ने उसी दिन कुतिया फ्रीडका तक यह महसूस करती लगने लगी कि यह बहुत बड़बड़ है। वह अपने कानों को उठाये सतर्कता से बाहर जाकर बाहर के पैरों में पड़ी, दुमीत्री इल्योच की तरफ देख रही थी।

मरीया अलेक्सान्द्रोवना को देखने के लिए डाक्टर आया थे, आन्ता, मरीया और दुमीत्री खाने के कमरे में बैठे और माँ के कमरे से आने की प्रतीक्षा कर रहे थे और व्लादीमिर इल्योच को छुड़ाने के तरीकों पर सोच-विचार कर रहे थे। दुमीत्री को समाधिज्ञान की एक किताब के पन्ने पलटते हुए उसमें अपनी माँ की बीमारी के बारे में कुछ छूँटने की कोशिश कर रहे थे। अपने झटके की गिरफ्तारी से उन सभी को बड़ा जबरदस्त धक्का लगा था। इसका मतलब था आंतिकारी असुधार गथापन करने का शरी योजनाओं का अंत। लेकिन परिवार इस समय व्लादीमिर इल्योच की कोई मदद नहीं कर सकता था—मरीया और दुमीत्री—दोनों—अभी हाल ही में जेल से छूटकर आये थे। वह कि आन्ता और उनके पति मार्क तिमोफ़ेयेविच भी अभी पुलिस के निगरानी में ही थे।

बारिश की बूँदें खिड़कियों पर गिराए जा रही थीं और काच पर निर्मल धाराओं का रूप लेकर नीचे दब रही थीं। गीलों पतियाँ काच पर थपेड़े मार रही थीं, दयाही में एक मकान कुल्लुडानी हुई अपने चूड़ों को अपने गरम पंखों के नीचे रहने और बाहर के थमने तक ढहरने के लिए फुसला रहा था।

डाक्टर लेवीत्स्की ने खाने के कमरे में प्रवेश किया, दोनों बड़े हाँसते, "उन्हें हुआ क्या है? उन्हें क्या देना चाहिए?" आन्ता ने चिंता के साथ पूछा।

“मन्त्रालय की कोई बात नहीं है। और सबसे अच्छी दवा
नाशा हुआ, भूख दहनना प्राण का खुशी की ही खुरदरे भुनना।”

“लेकिन मां का दिल खराब है। वह कितनी परेशानियों
में गुजर रही है, मरीया न पता।

“थोड़ा ठीक है। पंद्रह वर्ष की लड़की अपना अमर दिवाने ले ले,
इसीकी बोले।

डाक्टर ने अपनी गर्मी को गीनने का इमीनी क साथ ही
किताब पर नजर डाली।

“डाक्टर साहब,” उन्होंने कहा, “इसका जवाब इस किताब
में भन रहित विज्ञान विज्ञान की बातें लिखी मा है दिल का
गर्म नर। फलन नहीं कर पाई है। उसका मन खोना निश्चिन्ता विज्ञान
के लिए रहस्य ही बने हुए है। खुशी की बड़ी माता इसके लिए
इसका मनम खली खली है। इसलिए मेन आपसी मा ही उठान
की इजाजत दे दी है। मैं उन्हें देखने के लिए कल फिर आऊंगा।
मगसो।”

इमीनी डाक्टर को दरवाजे तक छोड़ने गये। लेवीत्स्की
एक प्रेम प्राण प्राण रोना था। जब इमीनी को पोडोन्स निर्वासित
जिया गया, तो कोई भी डाक्टर एक ऐसे विद्रोही छात्र को अपने
नीचे रखने का खतरा मोल लेने को तैयार नहीं था, जिसे
वास्तविकी गर्जितियों का खतरा विश्वविद्यालय में निजान दिया
गया था। लेवीत्स्की ने न केवल उन्हें अपना सहकारी ही बना
रिखा था बल्कि वह अनाथान परिवार में अपने मित्र भी बन गये थे।

इमीनी ने अपनी मां के कमरे की तरफ जो कदम बढ़ाये,
तो उन्होंने उन्हें अनाथान में अपने अपने और जान बनाय पाया।
“नो हो, मां।”

एक से एक है उन्होंने खुद नजर आन ही अमकन
होना करते हुए जवाब दिया, “मैं आज पोडोन्स जा रही हूँ।”

“लेकिन तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है, इस मुद्दे नहीं जान
दो।”

“मैं यहां बैठी-बैठी तो कुछ होने के अनाथान में नहीं रह
सकती। शायद वहां जाकर मैं अनाथान के लिए कुछ कर सकू।
मैं जाकर पुलिस कार्यालय में अपील करूंगी। अनाथान आन बट
से कहा, “इमीनी, स्टेशन जाकर मेरे लिए पोडोन्स का एक
नौसरे दरजे का टिकट तो ले आओ! सरम स्पष्ट पत्रन बना
आर अमानी जन पहनना मत भनना। ऐसा पानी बरस रहा है।”

वे समझ गये कि उनमें बात करना और उन्हें रोकने की
कोशिश करना बेकार रहेगा। इसलिए वे यह कोशिश करने लगे
कि वह दूसरे दरजे में जाने के लिए तैयार हो जायें।

अनाथान नहीं। मरीया अनाथानाया ने कहा, “मैं अनाथान
पता अनाथान है। शायद मुझे अनाथान र किन नकीन अनाथान
पड़े। अनाथान, देखना, मेरी पोशाक तो ठीक है, न! मरीया और
मैं जाकर सामान रखती हैं।

इमीनी ने अमानी पानी फीदरा ही उठान पानी आर
अनाथान ही तरफ नन दिये। अनाथान न अपनी मा ही अनाथान
की अनाथान में निजाना आर उन पन पर नन मकन अनाथान
टांकना शुरू कर दिया।

“मां की प्यारी जंगी पोशाक!” उसे दुनार से हाथों में
पकड़े-पकड़े अनाथान ने अपने मन में कहा।

पोशाक सामाजिक मेल-मुलाकातों के लिए नहीं, बल्कि मरीया
अलेक्सान्द्रोव्ना के पुलिस कार्यालय तथा अनाथान अनाथान र विभिन्न
कार्यालयों में जाने के लिए ही जान नन पर बल्ले रहे थे। जब
भी उनका कोई अच्छा अपने नानतोन्स दिवाने ने नाना मसीवन
में पडना वह एक अनाथान, नन खीन अनाथान मरीया अनाथान
दनी। अनाथान पोशाक का नाना अनाथान नन नन अनाथान का नि

किसी भी प्रकार का विरोध नहीं करेगा, क्योंकि मैं जानूँ कि वह और दूर जगहों को मुक्त करने में मदद कर रहा था।
आपकी माँ ने मुझे बताया है कि वह बहुत ही अच्छा व्यक्ति है।

कितनी बार उन्होंने इन इन्जामिया शब्दों को सुना था और इसे सुनकर कितना दुःख हुआ था कि “जब मैं मरूँगा, तब मैं अपने सबसे बड़े लड़के को फाँसी दी गई थी।” लेकिन इसी इन्जामिया शब्दों से इनकी जान बच गई। उन्होंने तब तक इन्जामियों से हर बार एक सेवा प्रार्थनापत्र लिखने के लिए फिर इन्जाम उठा लिया था, जो हमेशा इन औपचारिक शब्दों से ही शुरू होता था : “प्रिय महोदय, सेवा में निवेदन है...” पुलिस कार्यालय की छानवीं में ऐसे कितने प्रार्थनापत्र थे! कितनी बार ऐसी ही एक और हदरहित सेवा ने घर में इनके समस्त इन्जाम करने वाले लोगों ने न नरक को अपनी जेब में घुमाकर रखा था!

चिड़की पर बाग़ि की बूंदें नज़र नहीं आती। इयोड़ी में
नहीं पहुँच पाती हैं। चिड़ियों के आँसू पर गीर्वाँ बसिना
बपेड़े मान नहीं आती।

प्रचानक पंढी की टन्टनाहट ने इस निराशाजनक खामोशी को भंग कर दिया और ऐसा लगने लगा, जैसे गरमी का तेज वृष्टान वर भन में होकर गजर रहा है।

मा' मा' जन्मदिन आ गये ।

"अपने घड़े से लिपटने के लिए आगे बढ़ा। "मेरे प्यारे!" अपने घड़े से लिपटने के लिए आगे बढ़ा। "मेरे प्यारे!"

“मे वदत हो अम्मी तरह है परी तरह आवाद है और
मेरा नाम है। गीला कोट उनाकर मा का आलिंगन करते हुए,
अर्पण कर दूँगी।

३ देखने पर पता चला कि तुलसी जी

“ज्वालोमिन, भैया, मैं तो तो रही हूँ। मैं तो
देख रही हूँ, वह नरक नहीं, जब ही मैं मरेगा।
भाई ने पूछा।

आन्ना, जाओ, मेरी पोसाक को बदो में लपेटने में लग दो। मैं इसे देखना भी नहीं चाहती," मां ने कहा।

“बड़ी खुशी के साथ,” समझा बोली। उन्होंने चेहरा का
बायाँ अलमारी में टांग दिया और दरवाजा से उल्टा हाथ
दिया, मानो उन्हें यह डर लग रहा हो कि कहीं वह “जमी” सब
बाहर न निकल आये और उनकी खुशी में चक्कर मचल दे।
“आओ, मैं तुम्हें फिर प्यार कर लूँ,” उन्होंने उल्टा हाथ
न अपनी बाँहें डालते हुए वह बोली।

वहने मेज पर खाने का सामान लगाने में लगी थीं।
 रथीकी समोसा तो गरमा रहे थे और चूल्हा पर लौ जल रही थी।
 धारा रस की चिकनी तहरीब में लगे हुए थे।
 ही शाय से अपने मुँह को नहीं छूँते थे।
 की राहत और लुत्ती में हिल्ला बंदा रही है।

“आवाज !” व्लादीमिर इत्योच मे कह्यो निर मे कह्यो
हुए कहा। “कोई पुलिसवाला आवे, तो हमको नुकसान करे ला
वह सुनते हो फौद्का मस्त चाल मे हम मे चल गई हो
गया मे मे पाम लाल मे गई।

काठ का वह छोटा-सा घर एक बार फिर ज्वालन धार में
से गुंज उठा।

व्लादीमिर इत्योच ने आर्नो मा को आह्वित न की-तब अपने पास सीढ़ों पर बैठ लिया।

“जब पर होना तिनकी आज्ञा वात है।” म अन्ना तब नकल है कि धुपदार दिनों में यह जगह तिनकी मुद्रा होगी।

“बरसाती दिनों में भी यह बुरी नहीं लगती,” उल्लसित मा ने कहा, “देखते नहा, बार्नो तिनकी आज्ञा देनी है।”

“अच्छा, व्लादीमिर, यह बताओ, तुम कैसे एकड़े गये थे और फिर तुमने किस तरह रिहाई हासिल की?” अन्ना बोलीं।

मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना समोवार के पास बैठ गई और चाय शरबने लगी।

“जैसे ही मैं पीटर्सबर्ग पहुंचा, मैंने देखा कि मेरा पीछा किया जा रहा है।” व्लादीमिर उत्पीच हम। “जब मुझे पुलिसवालों ने शोध ही लिया, तो मुझे बस अपनी जेब खाली करने की बात ही सूझ गयी थी, मगर यह गलत ही बेकार था। वो भारी-भरकम जेबानों ने मेरी एक-एक बांह को जकड़ लिया और उन्हें पीछे की तरफ मोट दिया, जबकि नीमन यह देख रहा था कि मैं किसी चीज को निगल न जाऊं। और मालूम है, मेरी जेबों में क्या था? अखबार के लिए जमा किये गये दो हजार रूबल, प्लेखानोव* के नाम एक लंबा खत, जिसमें इस बात की विस्तृत रूपरेखा थी कि अखबार को कैसे भर्गठित किया जायेगा, गणन पते और सकेन जवद।”

“मुझे तो इसकी बात सोचकर ही कंपकंपी आ रही है,” मरीया बोली।

“तबिल बात यह है,” एक उगली उठान हुए, व्लादीमिर इत्योच ने कहा, “ये सभी बातें दूध, नींबू के रस और दूसरी खाने

की चीजों से लिखी हुई थीं और मा की दुगल जिता आ. म्मादी ही बकीना के बीच में तबिलान ने पत्रपत्र पत्रे मर रहा था कि पुलिस को कागजों पर गरम स्नाने रसम में रसम पाया था नहीं।”

“फिर क्या हुआ?” मरीया ने बेसब्री से सवाल पूछा।

“दस दिन बाद मुझे जेलर के कार्यालय में बजात गए और वह चेलावनी दी गई कि मैं पीटर्सबर्ग तथा माट कान, जहां मैं नहा जा सकता और यह कि मैं किसी भी कारण से जेल छोड़ना नहीं जा सकता। उन्होंने मेरे सारे कागज, रसीदें और पैसों कागज को मे अपनी आगों पर विश्वास नहीं कर सका मरमन व मर्मा पुन काठ के जल्लू हैं। इसलिए मैंने उनसे वित्तपूर्वक प्रायश्चात का हि दे मुझे तुम लोगों से मिलने के लिए अनुरोध।

तथापि पुलिस को इतना भरोसा नहीं था कि व्लादीमिर इत्योच को अकेले सफर करने दिया जाये। एक पुलिसवाला उन्पर साथ पीदोल्स्क तक आया और उसने उन्हें स्थानीय पुलिस के प्रमुख के सुपुर्द कर दिया।

यहां उन्हें बुद्धि की एक नई परीक्षा से भारना था। पुलिस के प्रमुख ने व्लादीमिर इत्योच का वैदेशिक पासपोर्ट रखने, फिर मांगा और उसके पन्ने पलटने के बाद उसने उसे पत्रपत्र पत्रों में ज की दराज में रख लिया। “आपको विदेश जान ही प्रमत्त नहीं है,” वह बोला, “इसलिए आपका पासपोर्ट में नया लेना, वह वह सुरक्षित रहेगा।”

व्लादीमिर इत्योच ने अपनी बात जारी रखी। “म बहुत गुस्से में भर गया। उस बूढ़े मक्कार ने तो सामान को रखने मार्ग योजनाओं को ही अपनी दराज में बदल दिया था। म गवर्नर वेहद नाराज हो गया था और मैंने कहा कि मैं आपको मरमन-सी कार्रवाई की आपके सभ्यताओं में निश्चयन रहगा। म मरमन

* संक्षेप परिचय (१९२६-१९२७) - मरीया इत्योच की और विचारक, प्रभाव नायक-संज्ञी विद्वान।

बापों की ओर से बोला होऊंगा। तब मैं भी वहाँ मुझसे पूछ गया। उसने
जो भी मैं पूछता हूँ वो सब करता हूँ। उसने कहा कि मैं पलटवार जाने
ही नहीं चाहता हूँ, मैं तो मर जाऊँगा। उसने कहा कि मैं पलटवार जाने
नहीं चाहता हूँ। उसने कहा कि मैं पलटवार जाने नहीं चाहता हूँ।

अपनी कहानी से उस हिस्से पर पहुँचते-पहुँचते व्लादीमिर इत्योच
अपने सिर को पीछे सीढ़ी पर डालकर खुशी के साथ हँसने लगे थे।

मरीया भी उनके साथ-साथ हँसने लगी।

“तो तुम्हें वैदेशिक पासपोर्ट मिल गया है,” उनकी माँ अपनी
मिराशा की न प्रकट करने का प्रयास करते हुए बोलीं।

“हाँ, मुझे जर्मनी जाना होगा,” व्लादीमिर इत्योच उठे।
घरों की आदत से उन्होंने दरवाजे का कुंडा लगाया, खिड़कियाँ
कसकर बंद की और दूरी हुई आवाज में बोलते रहे, “हम एक
बड़ा बड़ी चीज की योजना बना रहे हैं—हम एक अखबार
निकालनेवाले हैं।”

वह अपनी संजोयी हुई योजनाओं के बारे में बड़े जोश के
साथ बतलाते थे। हर जगह मजदूर अधिकाधिक लगाए जा
रहे थे जिस चीज की जरूरत है, यह है एक केंद्रीय अखबार, जो
स्वतंत्रता के लिए और जन के अधिकारों के लिए प्रदर्शन करे।
जल्द ही हम इसे अखिल-रूसी अखबार की ओर लावेंगे मजदूरों
आर किसानों का समझाते हैं उनके आगे की-में कार्यभाग है, जो
काम का संगठन तैयार करे। उन्होंने और उनके साथी
कर्मियों ने माइक्रोफोन में निर्वाचन के समय हम तरह के अखबार
की स्थापना की योजनाओं पर विचार-विमर्श किया था। हम में
पुतिन ने हमसे व कारण इस प्रकाशन की कोई सभावना नहीं है
जोकि यह नया किया गया कि उसे विदेश में प्रकाशित किया जाये।
फिर अखबार की प्रतियाँ को गुप्त रूप से हम पहुँचाया जायगा,
जहाँ विश्वनीय लोग उसका मजदूरों में वितरण करेंगे।

व्लादीमिर इत्योच गैरा-सामान्य पोटसेवो और मास्को
में भी आया थे, भारी विवरण उन्होंने की स्थापना पर कि वे और
विभिन्न साथियों में सफल भावना करने इस बात की व्यवस्था कर
चाहे थे कि वे अखबार की निष्ठा समझाते रहें।

“अखबार का नाम क्या रहेगा?” आन्ना ने पूछा।

“‘ईस्का’*। याद है, ‘चिनगारी’ में पढ़ेंगे या नहीं?”

“हाँ, याद है,” मरीया ने जवाब दिया। “यह पुतिन”
को दिसवाएँ” के प्रसिद्ध उत्तर की पर प्रतीति है।

अपने बच्चों की बातचीत को सुनते-सुनते मरीया अपना-आपना
समझ गई कि यह उत्तरदायित्व कितना बड़ा है।

“किस्मत तुम्हारा साथ दे! तुम सफल हो!” उन्होंने पीर-
से कहा।

“हाँ, आन्ना! मैंने तुम्हारे लिए भी कुछ सोचा है,”
व्लादीमिर इत्योच ने कहा। “तुम्हें मर पीछे-पीछे जर्मनी जाना
होगा और संगठनात्मक काम में हाथ बंटाना होगा। नाइज्दा जैसे
ही निर्वासन से रिहा होंगी, वह हमारे काम में आ जायगी।

“तभी जाकर आन्ना लेखिका बन पायेंगी” मरीया
अलेक्सान्द्रोवना बोलीं।

आन्ना हर्ष से पुलक उठी। वह हमेशा ने ही सार्थक्य के सपना
अपनाने का सपना देखती आई थी। उन्होंने बन्तों के लिए कथाविवरण
लिखी थीं और अंग्रेजी, जर्मन तथा इतालवी लिपियों का रूस में
अनुवाद किया था। लेकिन यह कितना महत्वपूर्ण और चरम
का काम था—वे लोग मजदूरों के लिए अखबार निकालने होंगे।

* ईस्का—कसी ने लिखा है।

** अलेक्सान्द्र पुतिन (१८८८-१९७३) मजदूरों के नेता थे।

*** दिवाकरदाजी—एक हिन्दी भाषी लेखक। उन्होंने अखबार निकालने का प्रयास
किया था और दिसंबर, १९२५ में शरमिल में मृत्यु पाई।

“काश कि मैं नमारा और निज्जी नौबर्गोंगद लकना हुआ और
जायद मिश्रान भी होता हुआ बोल्गा नदी के रास्ते जा सकना होता
और नादेज्दा के पास जा सकना।”

“उम्का अभाव अनुभव करते हो न?” मां ने सहानुभूतिपूर्ण
आवाज में पूछा।

“हां, बहुत! हम लोग गहरी बार चल रहे हैं। इसके
आगे हम लोग इस बोलचाल के अभाव में नबर्ग स्थिति में हैं
मैं उन लोगों से मिलना चाहूंगा। हम हर कहीं ज्वालाएं भड़का
सकते हैं। मजदूर मर्गों के लिए तैयार हो चुके हैं। हम में दिन-दिन
और वास्तविक इकट्ठा होता जा रहा है। और ‘ईस्का’ ही वह
चिनगारी होगी, जो इसमें आग लगा देगी।”

“अगर तुम पुलिस से इस यात्रा की आज्ञा मांगो, तो?”
उनकी मां ने पूछा।

“तुम्हारे मर्यादा में क्या मैंने यह किया नहीं? मगर उन्होंने
साफ़ इनकार कर दिया है।”

मरीया अलेक्जान्द्रोव्ना विचारमग्न हो गई।

“बेटों, मैं तुम्हें तुम्हारा कमरा दिखा दूँ,” वह बोली।

नबर्ग की सीढ़ियां पर जाकर वह बाग़ दूसरी मंजिल पर पहुँचे।

“अरे! यह तो बिल्कुल सिम्बोल्स में मेरे कमरे जैसा है!”

आर्सेनियु इवोच ने अपना हाथ दाइयाँ नीचे छत का छूँट रहा
आवाज़ में कहा।

गर्द दीवार में सटा सोफ़े का फर्श था, जिस पर चारखान
का केवल पड़ा हुआ था। दाईं तरफ़ एक चिड़की थी और एक
दरवाजा था, जो छज्जे पर खुलता था। चिड़की के पास एक छोटी-
सी मेज थी और उस पर हरे जन्वाला नेप था। अलमारी में
उसकी प्रिय पुस्तकें सजी हुई थीं।

यहां तो पूरा आराम हो जायेगा।” व्लादीमिर इवोच ने

कहा। “और काम के लिए वह कितना बड़ा कमरा सिद्ध होगा। मैंने
कितने ही माथियों को यहां आने के लिए कितना रकम देकर हम
इन्हीं तरह से बानचीन कर सकते हैं। उन्हें धन नहीं, बल्कि
ही बहुत अपना है।”

व्लादीमिर इवोच ने दरवाजा खोला और बाहर निकल गया।
अरिज बंद हो गई थी। बाग़ फूलों की गंध में भरपूर था। बाग़
इन दिनों बाद मूरज को देख पक्षी पंखों में उड़ने लगा था।

“बेटों, मां, बाग़ में चलें। लेकिन अपना गेट पार्क को
और बरसाती जूते पहनना भी मत भूलना, जिससे पैर न भीगें।
तुम मुझसे हमेशा यही कहा करती थीं।”

मरीया अलेक्जान्द्रोव्ना ने चमकती आंखों में आनंद के तीव्र
तरफ़ देखा:

“बुनो, व्लादीमिर, मुझे एक तरीका मिला है जिससे तुम
नादेज्दा के पास जा सकते हो और बोल्गा के किनारे मां को
भी जला सकते हो।”

मां ने

कहा-हा। आगिर अपनी दुर्गति में तो मरना ही नहीं चाहती
है। मरीया अलेक्जान्द्रोव्ना ने अपनी बात बारीक़ी और
उनकी मुसकराती आंखों के इर्द-गिर्द झुर्रियों का एक छोटा-सा
धिर आया।

“नादेज्दा से मिलना?” व्लादीमिर इवोच ने ठगती आंखों
साथ पूछा। मगर तुम तो नादेज्दा को अच्छी तरह से जानती हो।

लेकिन पुलिस को तो यह तथ्य मानना है कि तुम
निर्वासन में ही जाती हो थी और वहां से लौटकर तुम अपनी
पत्नी को साथ नहीं ला पाय थे।

पुलिस ने उनकी उजाड़न नहीं की। उसकी मर्जा में अभी
ह. महीने बाकी है।

कि है। नगर मुखे तो तुम्हारे पत्नी में मन्त्रणा रखी
ले। ना तो प्रेमियन में मझे इसका अधिकार है। कोई कानून
नहीं जो कानून कि ऐसा कर हो करता। मैं पीटमबर्ग जाऊँ
इसकी इच्छा रखूँ।”

“लेकिन तुम्हें तो वहाँ जाने के लिए किसी की अनुमति की
जरूरत नहीं है।”

“लेकिन मैं अकेली कैसे जा सकती हूँ? मैं पैंसठ साल की
हूँ। मैं अपने पिता की डीमाँगी हूँ। पेटमबर्ग में मैं एक गरीब
हूँ।” उन्होंने जल्दी से कहा। “और वह बेटे का कर्तव्य है कि वह
अपनी पत्नी को अपनी माँ के बिना छोड़कर न छोड़े—तुम्हारा ज़ादीमिर!
क्यों ही मैं पीटमबर्ग जाती हूँ।”

ज्वादीमिर इत्योच अपनी माँ से चिपट गये।

तभी उनकी बहन आन्ना वहाँ आई।

“तो तुम्हें अपना कमरा कैसा लगा, ज्वादीमिर? माँ से
तो रहा ही नहीं जा रहा था कि तुम कब आकर उसे देखोगे।”

ज्वादीमिर इत्योच ने कुछ नहीं कहा। वह मुन्ही भी नज़र
आने से थोड़ा संकुचित थी।

आन्ना गरीब अनेकमान्द्रोव्ना में अपनी बेंदी में चली।
“बेंदी, मैं पीटमबर्ग जा रही हूँ। इसलिए तुम्हें मेरी काली पोशाक
पागिर निकालना ही पड़ेगी। इसीसे मैं वह दो कि स्टेशन जाकर
टिकट खरीद लाये। और हा, इस बार मैं हमारे दरजे में ही जाऊँगी।”

आन्ना कुछ आकर लौटती आये।

“आपकी माँ आज मझे बहुत अच्छी लगी,” उन्होंने इसीसे कहा।

“आपका कहना सच है। हा, डॉक्टर साहब! खुशी ही
मैंने अपनी डायरी में लिखा, आपकी अपने भाई से मुलाकात

करवा हूँ,” डॉक्टर को बात की मन्त्र न जाने जो इसीसे
ने कहा।

डॉक्टर लेवीत्स्की जानते थे कि ज्वादीमिर अपनी अविवाहित,
और बड़े पड़े-लिखे आदमी हैं और उनका खयाल है कि इसीसे
मैंद बाग में गंभीरता के साथ रहने ज़िन्दा बड़े बर्ताने काम
नगावे भद्र पुरुष से होगी। हाथ में जोके का नमूना है, जो
बदन के एक तीजवान को देखकर उनके अचरज की सीमा न लगे।

ज्वादीमिर इत्योच दिलचस्पी के साथ उस नमूने को देखते हैं।
उनकी बहन मरीया गेंद को दोनों विकेटों के बीच से निकाल सकती है
या नहीं।

“जावाश!” उन्होंने चिल्लाकर कहा।

उन्होंने बल्ले को दूसरे हाथ में लेकर डॉक्टर के सामने आकर
मिलाया और उन्हें खेल में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित किया।
बोलने-बोलते ज्वादीमिर इत्योच ने डॉक्टर का हाथ पकड़ लिया और
झली। लेवीत्स्की उम्र में उनसे साल-दो-मास छोटे थे। उनके मुख
बेहरे पर घनी कत्यई दाढ़ी और रेजम जैसे बाल थे। उन्होंने थोड़ी
नुरमद। आगे प्रतिभापूर्ण थी और नग्न ही दूसरे को देखते थे।
कुल मिलाकर वह एक उदार और भले नवयुवक लगते थे।

इसीसे ने देखा कि उनके भाई और डॉक्टर ने एक-दूसरे को
तुरंत पसंद कर लिया है।

उस दिन रविवार था। ज्वादीमिर इत्योच ने सोचा कि अगर
मैं सैर करने के लिए चलना चाहिए।

डॉक्टर लेवीत्स्की अपने नये मित्र की माँझरी में जग भरी
संकोच का अनुभव नहीं कर रहे थे। उन्हें यह पसंद था कि वे
जिम्मेदार हूँ मरम्मत की अलग-अलग मरिजा हैं। जिसमें सभी
सुसंस्कृत, खुशमिजाज और मिलनसार थे और उन्हें एक नया नाति
वह सदा इस परिवार के मित्र बने रहना चाहते थे।

पन्द्रह नवें पर मजी में नाव चले-खन व्लादीमिर इत्यीच ने लवीत्स्की से कई बातों के बारे में प्रश्न किये, जैसे पोटोल्स्क प्रदेश में वाद-भय की हानियाँ, ऊनी दरवाजे और फोज में जबरन मर्जी किये जानेवाले लोग, उनकी चली आवाज में डाक्टरों परीक्षण से क्यों अयोग्य घोषित किये जाते हैं।

“इसका कारण है हमारे पोटोल्स्क की मशहूर नमदे की टोपियाँ,” डाक्टर लेवीत्स्की ने कहा।

व्लादीमिर इत्यीच ने अचरज से उनकी तरफ देखा।

“यह बात मेरी समझ में आई नहीं।”

“मैं आजकल पोटोल्स्क प्रदेश की आवादी के शारीरिक विकास का अध्ययन कर रहा हूँ,” डाक्टर लेवीत्स्की ने अपनी बात जारी रखी। “और मैंने यह बात साबित कर दी है कि जनता का स्वास्थ्य पारे के धूँ के कारण लगातार बिगड़ रहा है। यहाँ का नमदा परगोंज का रोया न बनाया जाता है और कारखाने इसको पैयार में पार का इस्तेमाल करते हैं। इनका मतलब है कि हर टोपा एक आदमी के स्वास्थ्य का सत्यानाश करती है। मैंने इस नमन उत्पादन-अधाली का बिरोध किया है, मगर मालिकों को तो अपने अलावा और किसी से क्या! जब तक उनके मुनाफ़े बरकरार हैं, उन्हें अपने मुलाजिमों के स्वास्थ्य की क्या परवाह है?”

“आपका कहना सही है,” व्लादीमिर इत्यीच ने जवाब दिया।

“अब आगे क्या करने की राय देते हैं?”

“मैंने एक फ्रांसीसी पत्रिका में पढ़ा था कि वहाँ नमदे को पारे के बिना पैयार करने का एक नया तरीका निकाला गया है। रूस पार की जगह मॉन्टेन पोटोल्स्क का इस्तेमाल किया जाता है।”

“क्या हमारे मजदूर इस बात का मतलब है कि उन्हें बाकायदा अहर दिया जा रहा है?”

“मैंने इस बारे में सिर्फ मालिकों से ही नहीं, बल्कि छोटे

मजदूरों और मजदूरों से भी बात की है, मगर वे अपना राय नहीं छोड़ सकते। उनके पास गाड़ी कमाने का और सारे इशिया रहते हैं।

“और आपने कितने मजदूरों से इस बारे में बात की है?”

“तीसियों में।”

“मेरे खयाल से रूस भर के मजदूरों को इसके बारे में पता चलना चाहिए — उसी तरह, जैसे पोटोल्स्क के टोपा बनानेवाले मजदूरों को दोन के खनिकों की, या इवानोवो-वोइनेसेन्स्क के मिल मजदूरों की या लना की सोने की खानों के खनिकों की काम की अमानवीय परिस्थितियों के बारे में पता चलना चाहिए।”

“लेकिन यह किया कैसे जा सकता है?”

“उन्हें इसकी जानकारी अपने खुद के अखबार में मिलनी चाहिए और सिर्फ यही नहीं, उन्हें यह भी दिखाया जाना चाहिए कि मिल मालिकों के खिलाफ मर्गटिल डग में कैसे लड़ना चाहिए — उन्हें आजादी पाने का रास्ता दिखाया जाना चाहिए।”

लेवीत्स्की ने कड़वी मुसकानट व साथ पूछा, “मैंना पेना कौन सा अखबार होगा, जो इन सब बातों को छापे?”

“मे बतलाना है आपको कौनसा अखबार। उसका नाम है ‘इस्का’। क्या आप यहाँ के वास्तविकों की हानत के बारे में कुछ लिखेंगे? आप यह लेख द्मीत्री को दें दीजिये — वह जानते हैं कि उसे कहां पहुँचाया जाये।”

व्लादीमिर इत्यीच ने नाव को बहाव के साथ छोड़ दिया और उनकी आँखें पाछ्रा के दूसरे किनारे पर घूमने लगी।

पानी ने साथ-साथ ऊबरी की घनी गुलाबी जालियाँ या उनके पीछे एक बड़े बदमजनु के पेड़ से नीचे एक लुनी जगह थी, जिम्मे बावूने के फूल फिटके हुए थे, पड़ ही जानों की हनी नदी में सूरज की किरणें चमकमा रही थी।

“चारों ओर कितना सुहावना है! ताजी हवा का भहासागर

फिर भी इस अद्भुत जगह के रहनेवाले पारे के धुएँ से
जब तक कि उनका मन नहीं सुखी, तब तक निहारने से निवृत्ति नहीं
होने दे। अपना जन्म जन्म कर दो। यह निराशा है कि अपनी
किस्मत के मातृक आप कैसे करें।

“आप ठीक कहते हैं। अगर ऐसा अगुवार सचमुच में हो ...”

“वह होगा, निश्चित रूप से होगा, प्रिय डाक्टर साहब।”

पर लौटने पर व्लादीमिर इल्योच सतोप के साथ अपने हाथों
को आपस में रगड़ते हुए कमरों में चहलकदमी करते रहे। फिर
टहलना बंद करके उन्होंने दूमीची से कहा:

“मुम्हारे डाक्टर बहुत ही दिलचस्प आदमी हैं। वह बहुत
ही समझदार हैं। उन्हें चैन से मत बैठने देना—उनसे ‘ईस्का’ के
बारे में किन्नाहो मतलब की पूछ लिये। उन्हें पढ़ने से निवृत्ति।
वह बहुत ही बढ़िया आदमी हैं!”

नाम को उन लोगों ने स्टेशन जाकर मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना
की पीडर्सबर्ग की गाड़ी पर सवार करवाया।

“मा को जाना अकारण ही रहेगा,” जाती हुई गाड़ी की
कदम से निकलते हुए आन्ना बोली। वे लोग अभी उम्मादन नहीं देगे।

लेकिन कम से कम उन्हें यह तो मनोप होगा कि उन्होंने
कम कम नहीं कुछ कर लिया है। मरीया ने कहा:

उन्होंने अपने आप से पहले हम जितना कुछ कर सकते हैं
हम कर लेना चाहिए, ताकि उनके लौटने के बाद हमारे पास
क्या भी होगा उसकी बात रहे।

व्लादीमिर इल्योच ने कहा।
उन्होंने अपने भाई से कोई भी चीज निकाल देने का कदा
भी रिजत में तो पक्षम निर्माण ही पर नाम गुप्त भावना का दे
सक। दूमीची ने अभी-अभी आया विज्ञान-अमीक्षा परिवार का जन मान

का शक लाकर दे दिया। यह भारी-भरकम परिवार का चरित्र था
से व्लादीमिर इल्योच के प्रयोजन को सिद्ध कर सकता है। उन्होंने
इसके पन्ने पलटे और स. तुगुनोव के लेख “विज्ञानवाद के विचार
के दृष्टिगत मनुष्य की मुक्त परीक्षा” पर आकर डहर गए।

“ठीक है, इससे काम चल जायेगा,” वह बोले। यह आन्ना
तकीरों के बीच में हसी सामाजिक-जनवादी पार्टी के पारंपरिक कार्यक्रम
को लिख लेंगे और इस तरह उसे सीमांत के बाहर ले जाएंगे।

मरीया ने एक प्याले में दूध लिया, अपने कलम में नम लिख
सगाई और “मनुष्य की मुक्त परीक्षा” की लकीरों के बीच इस
से लिखना शुरू कर दिया। वह प्रारंभिक कार्यक्रम की तैयारी
में थी। जब वह थक गई, तो उनका भाई दूमीची ने उन्हें रगड़
ले ली और नकल के काम में लग गये।

गतिचार को आन्ना के पति मार्क निमोर्फेवविच मास्का में
आने। व्लादीमिर इल्योच ने उन्हें अपनी गोलतापो के बारे में बताया।
वेनों ने मारीया को एक ऐसी बात मन की स्फुरता आने में सहा
दी, जो पार्टी के गुप्त कार्यों को दिखाने को तो निरापद समझ
हो, मगर पुलिस की तेज आंखों में झूल जाए।

मार्क ने अपना यात्रा जब पूरा किया तब ही उनकी माँ
ने उस तमरे में मूर्ख ही पहली किन्हीं का धुँसी ली।

यह मेज़ रखने में मददगी मेरु की तरह पड़ती थी। इस प.
सी गान स्नाय जलनेवाले थे और वह बार-बार विचारों का शोका
ही मेज़ जैसी बनती। इस गोल मरु ही तीन सप्ताहों तक रागे
होती। उसका ऊपरी हिस्सा बड़े बारीक तमारे का था जो
उसमें बड़े छोटी-छोटी दरारें थीं। आन्ना की माँने अपने
दिलहेदार विस्तार बनाई जानकारी दी। शिवाजी की वह तीन
चुन थी—उसे निकाल देने पर जीने का गुप्त यात्रा निराल
आता।

"छोटी-छोटी दराजों में पुलिस बेहद दिलचस्पी लेगी। दिलहावदी के कारण डारा हिस्से की अमली गहनाई तो पना नहीं चल पायेगा। भई, बाह! नमूना सचमुच आनंदार है!"

लादीमिर इयीच ने खूब हँसे हुए कहा। "अब हमें बस, किसी मकल बई की ही जरूरत है जो ऐसा हो कि उस पर हम पूरी तरह से विश्वास कर सकें।"

"मैं एक बिलकुल ऐसे ही आदमी को जानता हूँ। मैं उसका जिम्मा ले सकता हूँ," मार्क तिमोफ़ेयेविच ने जवाब दिया।

इस निपुण बई के नाम का वही हवाला नहीं मिलता, मगर उसकी जासूसी त भव के गल्प मानने से पार्टी के निगम आदमी सबसे महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों का नजरदारी की भी असाधारण अनुभव प्राप्ति की विजय तक अच्छी तरह छिपाकर रखना संभव बना दिया। कई घण्टे गेगा हुआ कि पुलिस ने इस मेज के हर हिस्से को करीब-तरीब उधाड़ ही डाला, उसकी दराजों को निकाल डाला, उसे उलटा और उसे सभी तरफ से ठोक-बजाकर देखा। लेकिन इस छोटी-सी मेज ने अपने राज को एक बार भी जाहिर नहीं किया। यही वजह है कि अब इस मेज को मास्को में लेनिन संग्रहालय में एक सम्मानित स्थान प्राप्त है।

लेनिन के अगल उन माविया के साथ पत्र व्यवहार की पुलिस द्वारा बारीकी से जाच-पड़ताल अवश्यमावी थी, जिन्हें रूस में ही रहना था। उसका मतलब था कि उन्हें उसके निगम के सांकेतिक भाषा निकालनी थी जिसकी गुजिया तो आसान हो पर जो साथ हो पड़े तो हो कि पुलिस के अनुभवों से संतुष्ट-विशेषज्ञ भी उन्हें न पक पायें। उसके लिए लादीमिर इयीच ने गणितज्ञ जैसी गहन-गहन और गहिरा जैसी अनुप्रज्ञा से लाभ करते हुए संकेत निकाले और उनको परीक्षा की। साथ ही इस बात को भी ध्यान में रखना

जहरी या कि गिरफ्तार हो जाने पर मावियों के आन्ध्र और प्रफुल्लता को कैसे रखा की जाये।

"तुम जल्दी ही पूरे डाक्टर बन जाओगे," लादीमिर इयीच ने अपने भाई से कहा। "मुझे तुमसे कुछ राखरी परामर्श पना है। अगर कोई जेल में पहुँच जाये, तो वह अपने जो हिस्से पर नजर और मला-चंगा रख सकता है? जब मैं जेल में था तो मैं निगम और अपनी कोठरी के नकड़ी के फ़र्शों पर पापिज करने के मोको को कसो हाथ से नहीं जाने देता था। अगर यह अच्छा तरीका था, मगर यह काफी नहीं था। यदि ऐसा वैज्ञानिक कार्यक्रम होना चाहिए, जो आदमी को अपनी आर्थिक शक्ति और इच्छा शक्ति बनाये रखने में सहायता दे।"

इमीच ने अपने भाई की तरफ आश्चर्य से देखा। उस पृष्ठ "तुम जेल की बात क्यों सोच रहे हो? तुम तो विदेश जा रहे हो, न?"

"सभी कुछ हो सकता है," लादीमिर इयीच ने जवाब दिया। "आखिर मैं हमेशा के लिए तो विदेश नहीं जा रहा हूँ। इस तरह की राय हमारे सभी साथियों को मिलनी चाहिए। हर निगम को इसके लिए तैयार होना चाहिए और जानना चाहिए कि जब मैं अपने नजरदारी जा सकता हूँ।"

आखिर तम्बोव प्रदेश से शेस्तेरनीन दंपति आये और उन्होंने के पीछे-पीछे पतेलेइमोन लेपेशोन्स्की भी साथ पहुँचे। वे कमिशनर थे और लादीमिर इयीच के साथ निवासन में नाउवेरिग में रह चके थे।

गान्गा नदी के तट पर स्थित मकड़ी का यह छोटा-सा घर फौजी सदर-मुकाम जैसा लगने लगा। जैसे ही नजरदारी नाम गुपचुप बातचीत करने के लिए जाने के समये न इकट्ठा होत, फौजवा हाल के दरवाजे पर जाकर चौकीदारी करने लगते। लेकिन अब वह

जुगुप्सा कि वे नंगे हाथों में जोके के बल तार तार ही तार-तार निकाल रहे थे। वह मुह में डाली की तरह स्वाद कागज के गन्धों में डाल भर जायज नगर्भ सदा के समान जब घर में रहनेवाले सभी लोग नदी में नहाने के लिए जाते, तो फ्रीदका किनारे परबंठी निना लगी प्राप्ति से उन्हें देखती रहती समय ज्यादा चिता उसे नतीजामित इत्योच ही तार से ही होती थी। अभी वह तेज से चले जा रहे थे कि तभी अचानक पानी में सायब हो गये। फ्रीदका उनकी तरफ अपनी गरदन ताने उठल खड़ी हुई। मगर व्लादीमिर इत्योच तो सायब हो चुके थे। निमित्त मात्र में ही फ्रीदका नदी में कूद पड़ा। इसी बीच व्लादीमिर इत्योच दम लेने के लिए सामनेवाले किनारे के पास पानी के ऊपर आ गये थे। वह मजे में हंसते हुए किनारे पर जा चढ़े।

"मैंने तुझे डरा दिया था, न? क्या तू यह समझी थी कि मैं डूब गया हूँ?" उसकी गीली गरदन को थपथपाते हुए उन्होंने कहा।

उस शाम को पुलिस का प्रमुख उनकी मकानदारिन के पास आया। वह जानता चाहता था कि उल्यानोव परिवार वाले क्या करनेवाले हैं, उनके यहां कौन-कौन आते है, कहीं वे लोग गुप्त बैठके या जार के खिलाफ कोई षड्यंत्र तो नहीं कर रहे हैं।

मकानदारिन ने उनकी तरफ आश्चर्य में रखा। उसने पुलिस के प्रमुख से अपने साथ घर के बाहर आने को कहा। वहां बाड़ की इतनी तरंग से लोगों के आनन्दपूर्ण हसन और चिल्लाने की आवाजें आ रही थी। चक्की की तैलों की घटघट बुनाई से रंगी थी और समोवार से उठते नीले धुएँ का हल्का-सा लज्जा उन्ही की तरफ बल खाता आ रहा था।

तभी चुरीली आवाज में कोई गाने लगा।

"वह कौन है?" पुलिस के प्रमुख ने पूछा।

"उनका सबसे बड़ा बेटा 'अवशीयन इत्योच' मकानदारिन ने जवाब दिया।

"वही, जो साइबेरिया में निर्वासन में अभी अभी लौटकर आया है?"

"मेरे खयाल से इस बारे में आपको बेसी गतिवृत्त या अज्ञात है। मगर वही सबसे जोर में हंसता है और जोर से तबला सीटी बजाता या गाता रहता है। वह यहां के लोगों के साथ गाने मुक्काम नदी में तैरने जाता है। प्रता नहीं, आपने उसकी बातें मना सुना है, मगर जो भी हो, वह सही नहीं है। चकिनागी लोग अपना वक्त इस तरह नहीं काटते। ये सभी ईमानदार नोनवान हैं मकानदारिन ने मंभीरता के साथ अपनी बात पूरी की।

अचानक फ्रीदका का विशाल सिर बाड़ के ऊपर गिर आया पुलिसवाले की वरदी को देखते ही उसने अपना मुह फाड़ कर उनकी आखें खोपनाक तरीका से चमकाने लगे। पान्दनाका हृदय में घर के भीतर घम गया।

मरीया अलेक्सांद्रोवना तीन दिन बाद वापस आया।

सारा ही परिवार स्नेहन पर उठ मिले। मगर उस संध्या के बारे में किसी ने उनसे कुछ नहीं कहा, जो गरीबों के डिमाग में था। उनकी यात्रा सफल हुई या नहीं? वह भी कुछ नहीं जानी। तथापि घर पहुंचने के साथ उन्होंने एक सरकारी-सा तमगा अपने बटुए से निकाला और उसे व्लादीमिर इत्योच के हाथ में देन हुए बोलीं:

"लो, तुम्हारे लिए एक उपहार मार है।"

"इजाजत मिल गई?" व्लादीमिर इत्योच ने ससराने हाथ कहा और अपनी माँ को कसकर अपनी बाँटो में सींच लिया।

इस गान नहीं सकती, माँ, फिर मर जाऊँ। फिर फिर जाना-पहाना है।

सभी ने यह तय किया कि क्लादीमिर इल्यीच और नरैता माँ के उफ़ा खाना होने से पहले ही ग्राम का नाव से सैर करे। उन्होंने चेदमजन के पेड़ के नीचे ही नदी के किनारे बसवा दिया, गाने गाये और खेल मचा। मरीया अन्कमान्द्रोवना घर में गहरे पड़ के छूट पर कड़ा नाखाना रो माँ को मनाने लगती रही।

ग्राम के समय वे जगती पत्नी के गलबले लेकर बाजार और नरैताजा होकर वापस आ दिया। वे नदी के किनारे पर आ गया। पारंगत पर नीला कुन्दा का रहा था। सुरंग ख गया। हवा ताजा लटे घाम की गंध में गहक उठी और माना बाई डगारा पाने के साथ दिहो रा मंगीत फट पड़ा। नीरव पानी में एक मछली ने छपावा मारा, एक मेढक टरटरा उठा और पास की झाड़ियों में एक बगवन् कटे बार चहलचढ़ घोंगे की तंगी पीठ पर सवर गहरा उन्हें रात के लिए चरागाह ले जाता छोटा या एक लाट घासी में जाकर आँखों में ओझल हो गया। एक बार फिर नीरवता का दिग ही चरचराहट ने भर बिधा। पहले नारे निकल आये।

घर जाने की किसी का मन नहीं कर रहा था। सभी चारे के साथ छेर के पास बैठ गये। क्लादीमिर इल्यीच ने मीठी हवा की गहरी गाम तन और धानर्षी भरनी की गरमाटे का मन्ता लेने हुए मुखे पास के छेर पर अपनी कमर टिका दी। कल के अलग-अलग रास्तों पर चले जायेंगे। शेम्तेरनीन दपति सम्बोध वापस चले जायेंगे, लेपेशीन्स्की स्कोव जा रहे थे। क्लादीमिर इल्यीच अपनी माँ और बहन आन्ना के साथ बोल्गा नदी की यात्रा पर जा रहे थे। डाक्टर लेवीत्स्की अब 'ईराना' के संवाददाता थे, जबकि मरीया और दुमीत्री उमरे भाया बितरक बन गये थे। बस घामोशों में बेटे-बेटे के उम कठिन

गंठों के लिये सचदूरी को एकाग्र करला और मुक्त सडसिया में उन्हें निर्वासित करना चाहती है।



1. 1947-48 में राज. विद्यापीठ
स्थापित



विद्यार्थी (बम्बेनी) में सह. मकान,
जहाँ जेजिन के निदेशन में 'इन्फा'
का पहला सत्र प्रकाशित हुआ था।

इस मकान पर 'इन्फा' का पहला
प्रकाशित हुआ था।



1944
1945
1946
1947
1948
1949
1950
1951
1952
1953
1954
1955
1956
1957
1958
1959
1960
1961
1962
1963
1964
1965
1966
1967
1968
1969
1970
1971
1972
1973
1974
1975
1976
1977
1978
1979
1980
1981
1982
1983
1984
1985
1986
1987
1988
1989
1990
1991
1992
1993
1994
1995
1996
1997
1998
1999
2000
2001
2002
2003
2004
2005
2006
2007
2008
2009
2010
2011
2012
2013
2014
2015
2016
2017
2018
2019
2020
2021
2022
2023
2024
2025



1944
1945
1946
1947
1948
1949
1950
1951
1952
1953
1954
1955
1956
1957
1958
1959
1960
1961
1962
1963
1964
1965
1966
1967
1968
1969
1970
1971
1972
1973
1974
1975
1976
1977
1978
1979
1980
1981
1982
1983
1984
1985
1986
1987
1988
1989
1990
1991
1992
1993
1994
1995
1996
1997
1998
1999
2000
2001
2002
2003
2004
2005
2006
2007
2008
2009
2010
2011
2012
2013
2014
2015
2016
2017
2018
2019
2020
2021
2022
2023
2024
2025



भारत का पहला परमाणु परीक्षण
 1974 में भारत ने परमाणु परीक्षण
 'स्मॉल फिश' नाम से किया था।



शुद्ध 'भगोरा'। अन्तिम का प्रयोग
 'भगोरा' के सिरे पर ही हुआ था।





२११ २१ - २१२ २११ २१२ २१३
 २१४ २१५ २१६ २१७ २१८



२१९ २२० २२१ २२२ २२३
 २२४ २२५ २२६ २२७ २२८



विजय की सेवा में
 यह चित्र श्री विजय के
 नाम से बनाया गया है



हर मुकाम लेनिन सचकार पढ़ते थे—
 इस में क्या-क्या हो रहा है? दुनिया
 की क्या खबर है? लेनिन लेनिन
 ने अपने कमरे में। उन्हें पता नहीं
 था कि उनका चित्र खोना का रहा
 है



ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ
ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ



ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ
ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ



गान " गुन्तकद्वारा मे वसुधैव
 कुतुम्भः । वसुधैव कुटुम्बकम्, कामी
 मान्यं धर्मो ३० नमः ॥



का ५ बाह्य पर कैदिय मन्त्र के
 अन्तर्गत मन्त्र के ३० बाह्य पर
 इस चीक से प्रेनाइट का वन स्मरण है ।





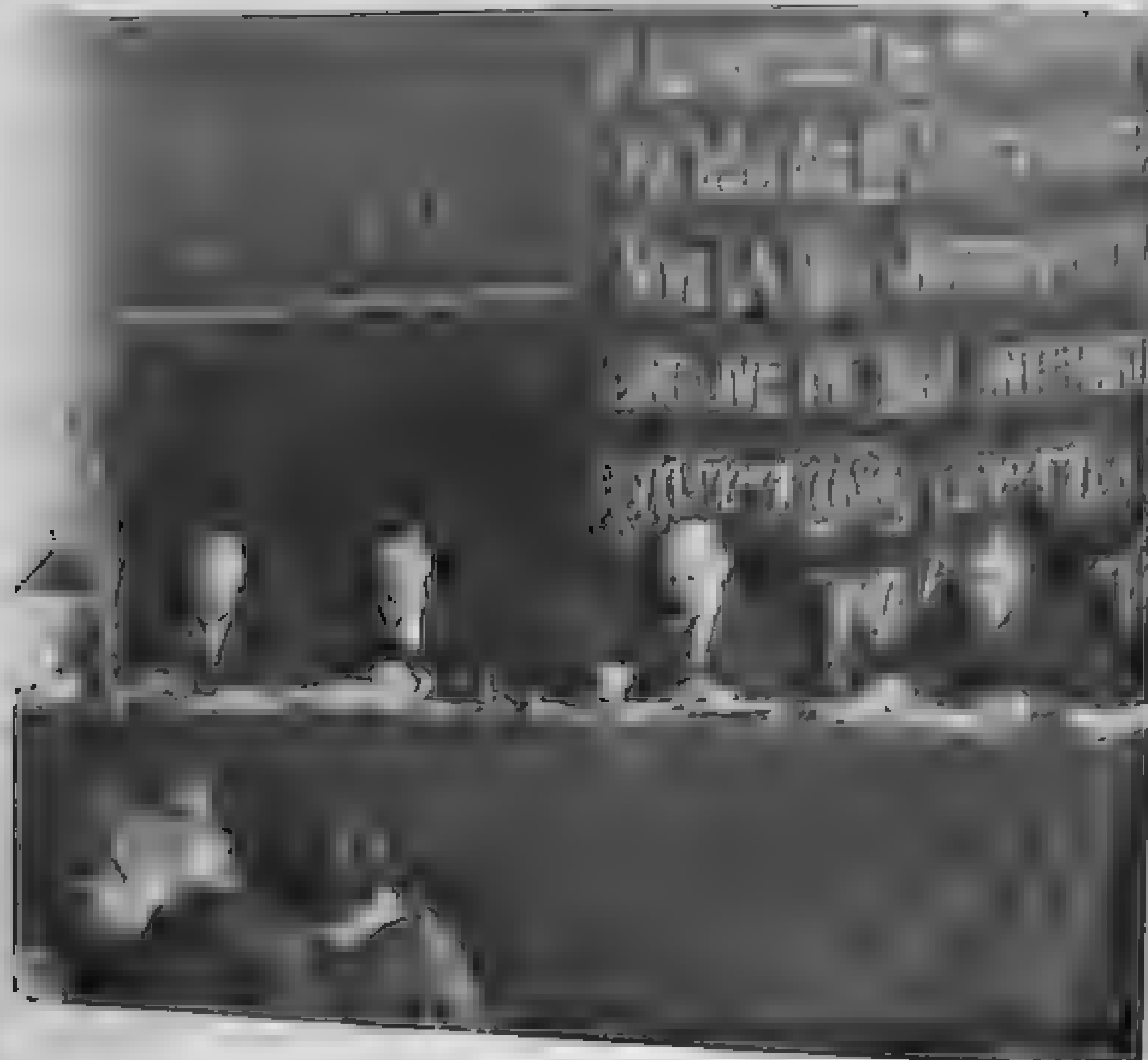
"रुस का विजयीकरण होगा।"
गोविन्दों की भाठर्धी काँग्रेस में
भाषण देते हुए लेनिन।



कमिन्स माव के विचारों में एक
नया ही विचारधारा बनाने में
मन में चाहता नहीं नरम
वर्गवाद को ही शक्ति
दिया। कमिन्स माव, प्रामाणिकता
को ही मनु चित्त वर्गों के
मन में प्रसारित होना।



11. 1. 1900
12. 1. 1900
13. 1. 1900
14. 1. 1900
15. 1. 1900
16. 1. 1900
17. 1. 1900
18. 1. 1900
19. 1. 1900
20. 1. 1900
21. 1. 1900
22. 1. 1900
23. 1. 1900
24. 1. 1900
25. 1. 1900
26. 1. 1900
27. 1. 1900
28. 1. 1900
29. 1. 1900
30. 1. 1900
31. 1. 1900
32. 1. 1900
33. 1. 1900
34. 1. 1900
35. 1. 1900
36. 1. 1900
37. 1. 1900
38. 1. 1900
39. 1. 1900
40. 1. 1900
41. 1. 1900
42. 1. 1900
43. 1. 1900
44. 1. 1900
45. 1. 1900
46. 1. 1900
47. 1. 1900
48. 1. 1900
49. 1. 1900
50. 1. 1900
51. 1. 1900
52. 1. 1900
53. 1. 1900
54. 1. 1900
55. 1. 1900
56. 1. 1900
57. 1. 1900
58. 1. 1900
59. 1. 1900
60. 1. 1900
61. 1. 1900
62. 1. 1900
63. 1. 1900
64. 1. 1900
65. 1. 1900
66. 1. 1900
67. 1. 1900
68. 1. 1900
69. 1. 1900
70. 1. 1900
71. 1. 1900
72. 1. 1900
73. 1. 1900
74. 1. 1900
75. 1. 1900
76. 1. 1900
77. 1. 1900
78. 1. 1900
79. 1. 1900
80. 1. 1900
81. 1. 1900
82. 1. 1900
83. 1. 1900
84. 1. 1900
85. 1. 1900
86. 1. 1900
87. 1. 1900
88. 1. 1900
89. 1. 1900
90. 1. 1900
91. 1. 1900
92. 1. 1900
93. 1. 1900
94. 1. 1900
95. 1. 1900
96. 1. 1900
97. 1. 1900
98. 1. 1900
99. 1. 1900
100. 1. 1900



11. 1. 1900
12. 1. 1900
13. 1. 1900
14. 1. 1900
15. 1. 1900
16. 1. 1900
17. 1. 1900
18. 1. 1900
19. 1. 1900
20. 1. 1900
21. 1. 1900
22. 1. 1900
23. 1. 1900
24. 1. 1900
25. 1. 1900
26. 1. 1900
27. 1. 1900
28. 1. 1900
29. 1. 1900
30. 1. 1900
31. 1. 1900
32. 1. 1900
33. 1. 1900
34. 1. 1900
35. 1. 1900
36. 1. 1900
37. 1. 1900
38. 1. 1900
39. 1. 1900
40. 1. 1900
41. 1. 1900
42. 1. 1900
43. 1. 1900
44. 1. 1900
45. 1. 1900
46. 1. 1900
47. 1. 1900
48. 1. 1900
49. 1. 1900
50. 1. 1900
51. 1. 1900
52. 1. 1900
53. 1. 1900
54. 1. 1900
55. 1. 1900
56. 1. 1900
57. 1. 1900
58. 1. 1900
59. 1. 1900
60. 1. 1900
61. 1. 1900
62. 1. 1900
63. 1. 1900
64. 1. 1900
65. 1. 1900
66. 1. 1900
67. 1. 1900
68. 1. 1900
69. 1. 1900
70. 1. 1900
71. 1. 1900
72. 1. 1900
73. 1. 1900
74. 1. 1900
75. 1. 1900
76. 1. 1900
77. 1. 1900
78. 1. 1900
79. 1. 1900
80. 1. 1900
81. 1. 1900
82. 1. 1900
83. 1. 1900
84. 1. 1900
85. 1. 1900
86. 1. 1900
87. 1. 1900
88. 1. 1900
89. 1. 1900
90. 1. 1900
91. 1. 1900
92. 1. 1900
93. 1. 1900
94. 1. 1900
95. 1. 1900
96. 1. 1900
97. 1. 1900
98. 1. 1900
99. 1. 1900
100. 1. 1900





जुवा धरभुत पथ में धार में मोच रह थ, जिन पर कितने ही
इमानदार रुसी नर-नारी अग्रसर हो रहे थे।

‘आओ, एक गाना गाय’ जामाशी का मोहने हुए ज़ादीमिर
इत्थीच न कहा, “अपना मनपसंद गाना।”

नभी भोर ने उमड़-पुमड़कर दुग्धन वाइन-मे छावे
मत्स्याचारों की पट्टाड्या, वृत्तों के काने नादे

हलकी आवाज में उनके साथियों ने भी उनके साथ गाना
शुरू कर दिया।

सिर पर नकन बाधकर हम्मे, दुग्धन की नरगाग है
हमस ता मनजान-भरिचित, भावी भाग्य इनाम है

नदी के उस पार से हवा अलाव के जलने और अंगारों पर
अलुओं के भुनने की गंध लेकर आ रही थी। यह छोकरी द्वारा
घाटी में जलाये अलाव की गंध थी। ज़रा ही देर में पास ही
जलाये गये एक और अलाव की लपटें भी लपलपाने लगीं। वे आग
की पृष्ठभूमि में छोकरी के चेहरों को देख सकते थे।

“इन आंगों को देखो,” ज़ादीमिर इत्थीच ने चित्तरमन्
होते हुए कहा। “हम भी रुस भर में ज्वालाएं जला रहे हैं और
ये ज्वालाएं ‘ईस्का’ द्वारा जलाई जायेंगी।”

“और कौन जाने,” लेपेशीन्की बोले, “शायद यही छोकरी
एक दिन क्रांति की आग को भी जलावे!”

छोकरी ने आग में और सूखी लकड़िया डाल दी और लपटें
और भी ऊपर लपकने लगीं। उन्होंने अलाव के अंगारों को कुरेदा
आग प्रनगिनन चिनगर्ग्य आलाप में ता की गोद में निनगरी
बहा जाकर एक-एक तारा बन गईं

घास में चिरचिराते टिट्टे और ऊपर भनभनाते मच्छर मच्छ
मीसम की सूचना दे रहे थे।

छोटो-सी गिरणी में मानो समझी चढ़ाने दिखती : गरी और
जिन पर लज्जित होर से वह छिन्ने हुए थे। यह मानसी छदर
गिरणी की गिरणी उन बड़ा की इस चढ़ाना में जो पकड़ना समझ
बना दिया था : जगह उन्हे बीटा का कुछ सिद्धिगरी इनार मिला
नई थी, उनकी जड़ों को कुछ और दगने मिला गई और इस तरह
पैड़ चढ़ान में घूमने के साथ-साथ गिरनि प्राप्त करते गये थे। अब
कोई भी तुफान उन्हें नहीं गिरा सकता था।

रमोईधर में बेगमान मोने के कमरे के अग्रमुखे दरवाजे में ने
देख रहा था। उसे उस वान का सुधान आ रहा था, जो कार्लमोन
ने उसे बनाई थी। "क्या यह सचमुच जार का सबसे बड़ा दुश्मन
?" यह तो विश्वरूप मामूली छाया जैसा लगता है। जंगों में
पर बड़ा है, दायां कंधा बायें कंधे से कुछ उठा हुआ है और बड़ा
मिर पर लम्बा, उठा हुआ है मान रहा हुआ और क्या लम्बे नगी
मरफ में बेखबर, वस, निचे चला जा रहा है। फिर वह अपने
नोटों को पढ़ना है, हाथों को बगलों में दाखकर गर्माना है और
फिर लिखना शुरू कर देना है।"

नायना नेयार हो गया था। मछुए की पत्नी ने मेज पर लंबे
की काफ़ीदानी रखी और डबल रोटी के कई छल्ले धर दिये।

"आइये, नायना कीजिये," मछुए ने आवाज दी।

ज्योतीमिर ज्योति ने पढ़नेवालापुस्तक समझाने हुए ज्योति में
प्रवेश किया। मेज पर बैठान उन्होंने मछुआ के रहन-सहन से वारे में
दिलचस्पी लाने लगा जग ही - वैसे रहने के चढ़ाना पर
आ पगल कैसे पैदा कर लेते हैं, क्या पैदा रहने हैं और जिनकी
मछुआ पकड़ लेते हैं? उन्होंने मछुए की गामांज पत्नी तर ही
जिदधर्मी जगा दी और उसे वानचीन में झींच लिया।

ज्योतिमिर ने इस उद्देश्य से जो जो जो वह व सच है
निर बनाएले ही यह व जगह के मछुआपुस्तक समझाने का वह
है व उन्हे जगह जगह है व जगह जगह जगह है और
जिद वहा में निदधर्मीन नव नव व वहा व जगह है
जानिकाने संघर्ष को नेयारी के लिए हम के मछुआ और दान-
विक पार्टी में संघर्ष व्यापित कर सकते थे।

उत्तजार के दो और बेहद लंबे दिन कट गये।

अगली सुबह उनके हमेगा के स्वाल, "बजे कौनो है?" के
जवाब में बेगमान ने कहा :

"बजे अभी मजब नहीं हुई है और हवा का रस भी अभी
नक नहीं बदला है। नव वारे के पहले आकर जाना फर्मभव है।
अब हमने बड़े दिन के पढ़िया लगे हैं जगह जगह जगह है
अवसर पर भी कोई सफर को निकलना है?"

"मैं इस वान को नहीं मान सकता," ज्योतीमिर ज्योति
ने कहा। "मुझे बड़े दिन के पहले लाकहीन पढ़चना है। हमें कद
ही चल देना होगा, जी हां, कल ही!"

मछुए ने जवाब नहीं दिया। वह घर के बामों में नगा रहा।

लेकिन दो पहर के जाने के बाद जगह जगह में से एक
छोटो-सी चपटे पैदेवाला नाव निराले जगह से निकल
करना शुरू किया। उन्हे डांड के हुंसे के आगे कई जगह जगह
दाकी और फिर इन पर एक वकी जगह जगह है

शाम को उन्हे कहा कि सभी कुछ जगह है जगह जगह
कि हमें पौ फटने से पहले ही निकल जाना होगा जगह जगह
में पड़नेवाले गांवों से अंधेरे में ही गुजर लगे थे जगह जगह
दारा वर्फ में बनाये रास्ते जगह पर ही जगह जगह जगह
अपने मेहमान के चमड़े के बड़ा की तरफ माफ़गरी ही जगह में

मैंने अपने दो काम कहे बता दिये। वह वह वापस आया, तो
उसके हाथों में महुआ के बड़े-बड़े फूलों के पत्रों के साथ-साथ

... जो कहते हैं मलिकर ने ही हो रहे थे। गृहस्थाभिनों ने
जहाँ हूँ महुँ महुँ, सोचो और कहो मैं जानता नई पर लगा
दिता। बन्दी-बन्दी बंद जानता करने के बाद व्याधीमिर उन्धों ने
गृहस्थाभिनों ने बन्धन हाथ मिलाया और कहा :

हमके लिए बहुत मुश्किल ! ”

नम्र से मरुतार मीरुओं की आवाज़ आ रही थी। कहते
ते ते उड़ित होकर चंड खाड़ी की तरफ़ नज़र पड़ करती गंगली
हालमें बसा।

नाब पर नगी आधी बल्ली को एक-एक छोर को पकड़े दोनों आदमी उसे आगे धकेल रहे थे। नाब का चपटा पैदा बज्र की अनमान मजह में नमड़ और टककर खा रहा था। वे लोग बड़ों में जमे होंगे पर डीकर खाने चल रहे थे। क्वासीमिर डब्योच एक हाथ में बल्ली को पकड़े हुए थे और दूसरे में नानादेन लिये हुए चल रहे थे।

डोंगल उन्हें एक गुप्त डेढ़-मिट्टे गन्ने ने ले जा रहा था।
जो जायद मित्र उसे ही मालूम था। हर पचास-सौ कदम के
बाद वह रुक जाता था और नाव की कालिदार चल्ती को अपने
ऊपर ले बैठता। वह उसे ऊपर से देखता, उसकी नाक पर
हँसी के झलकते हुए चिन्तों को देखता।

इस कठम सज्जन पर जोके मारते हुए जा रहे थे।

ममका विचार और मन ही बूझे थे।

कादम्बरिणी पो छल रही थी, जब मैं अचानक जान बूझ
हि चलाया था. जैसे दिन निकलनेवा हो

टापूओं के बीच बर्फ के क्षेत्र अब गायब हो गए हैं। इन क्षेत्रों में बर्फ के सामने इन बर्फ पानी में डूबने का कारण बनने के कारण दोनों यात्री अपनी यात्रा पर मजबूर हुए हैं। इन क्षेत्रों में बर्फ बैठकर गये। उनके बाद फिर बर्फ आ गई। वे इन क्षेत्रों में बर्फ के पानी में गये।

“अब हमें उन शत्रु पर पहुंचना है,” जेनेमान ने जवानों में नामिने की तरफ इशारा करते हुए कहा।

ज्वालाभिन् इन्धोच अत्र भी नाव पत्र दुकी आइये अत्र न
कलकल पकड़े हुए थे, जो उनके हाथ को भरोड़े में रही । ज्वाला
को तन्फ देखने हुए वह वेगमान के साथ-साथ चलने की कोशिश
कर रहे थे ।

* 'हम कितना बदन बुरे हैं,' उन्होंने कहा।

$$\begin{aligned} (1) \quad & \frac{1}{a-1} - \frac{1}{a-2} + \frac{1}{a-3} - \frac{1}{a-4} + \frac{1}{a-5} - \frac{1}{a-6} + \frac{1}{a-7} - \frac{1}{a-8} + \frac{1}{a-9} - \frac{1}{a-10} + \frac{1}{a-11} - \frac{1}{a-12} + \frac{1}{a-13} - \frac{1}{a-14} + \frac{1}{a-15} - \frac{1}{a-16} \\ & + \frac{1}{a-17} - \frac{1}{a-18} + \frac{1}{a-19} - \frac{1}{a-20} + \frac{1}{a-21} - \frac{1}{a-22} + \frac{1}{a-23} - \frac{1}{a-24} + \frac{1}{a-25} - \frac{1}{a-26} + \frac{1}{a-27} - \frac{1}{a-28} + \frac{1}{a-29} - \frac{1}{a-30} \\ & + \frac{1}{a-31} - \frac{1}{a-32} + \frac{1}{a-33} - \frac{1}{a-34} + \frac{1}{a-35} - \frac{1}{a-36} + \frac{1}{a-37} - \frac{1}{a-38} + \frac{1}{a-39} - \frac{1}{a-40} + \frac{1}{a-41} - \frac{1}{a-42} + \frac{1}{a-43} - \frac{1}{a-44} + \frac{1}{a-45} - \frac{1}{a-46} \\ & + \frac{1}{a-47} - \frac{1}{a-48} + \frac{1}{a-49} - \frac{1}{a-50} + \frac{1}{a-51} - \frac{1}{a-52} + \frac{1}{a-53} - \frac{1}{a-54} + \frac{1}{a-55} - \frac{1}{a-56} + \frac{1}{a-57} - \frac{1}{a-58} + \frac{1}{a-59} - \frac{1}{a-60} \\ & + \frac{1}{a-61} - \frac{1}{a-62} + \frac{1}{a-63} - \frac{1}{a-64} + \frac{1}{a-65} - \frac{1}{a-66} + \frac{1}{a-67} - \frac{1}{a-68} + \frac{1}{a-69} - \frac{1}{a-70} + \frac{1}{a-71} - \frac{1}{a-72} + \frac{1}{a-73} - \frac{1}{a-74} + \frac{1}{a-75} - \frac{1}{a-76} \\ & + \frac{1}{a-77} - \frac{1}{a-78} + \frac{1}{a-79} - \frac{1}{a-80} + \frac{1}{a-81} - \frac{1}{a-82} + \frac{1}{a-83} - \frac{1}{a-84} + \frac{1}{a-85} - \frac{1}{a-86} + \frac{1}{a-87} - \frac{1}{a-88} + \frac{1}{a-89} - \frac{1}{a-90} \\ & + \frac{1}{a-91} - \frac{1}{a-92} + \frac{1}{a-93} - \frac{1}{a-94} + \frac{1}{a-95} - \frac{1}{a-96} + \frac{1}{a-97} - \frac{1}{a-98} + \frac{1}{a-99} - \frac{1}{a-100} \end{aligned}$$

अब वह छात्रों को शिक्षित करने के लिये प्रयत्न करने लगा। छात्रों के बीच में वह बहुत ही लोकप्रिय हो गया। “हठ” कभी-कभी चिन्तापूर्ण होता है, वह कभी-कभी हँसता है, कभी-कभी रोता है, कभी-कभी सारा सारा दिन सोचता है।

वे एक बड़े आँसू नपाट हिमवाह के पान पर चढ़े।
उन्हींच रुक दम लेना और अपने यके हाथ-पैरों से अलग हो
वाहते थे, मगर उन्होंने पैर धरा ही था कि हिमवाह रुक गया और
उनका बाला पैर हिमवाह पानी से न गिरा

(Musical notation continues)

ति मांगी हिमपात पानी में डूब गई और उना जून में भी पानी भर गया। बत्ती चरमरा उठी...

उदात्त और न साथ हिमपात अलग-अलग होने लगे। पैरों के नीचे की चक्र भी फिसली जा रही थी।

व्लादीमिर इल्यीच ने अपने सहयात्री की तरफ नजर डाली। वेर्गमान का चेहरा स्याह था और आंखें फटी हुई थी। नाव के किनारे को पकड़े वह कमर तक पानी में छपछपा रहा था।

"नाव पर! जल्दी से नाव पर!"

बत्ती पर लटके-लटके दोनों ही नाव पर दोनों तरफ से झपटे। उनके बोझ से बत्ती झुक गई और चरमरा उठी। उन्होंने डांड के कंडों को जकड़ा और अपने को किनारों पर से उछालकर दोनों एक साथ ही नाव के अंदर आ पहुंचे।

व्लादीमिर इल्यीच को अचानक ज़ोरों की कंपकंपी ने जकड़ लिया। दांतों को कटकटाने को तो वह न रोक पाये, पर उनकी हंसी फूट पड़ी और वह बोले, "हां, भई, पानी तो बेशक ठंडा है..."

वेर्गमान नमदे के एक बड़े बंडल को खोल रहा था। कांपते हाथों से उसने उसमें से व्लादीमिर इल्यीच ने चूट निकाले वे उस नरम नरम थे, मानो अभी-अभी अर्गोटी पर से उतारे गये हों। जूनो के भीतर एक लोड़ा जमी भोजे थे जिन्हे मछुआ की पत्नी ने उनमें सहजकन रख दिया था। मछुआ ने अपने सहयात्री को अपनी तरफ कृतज्ञता के साथ देखते पाये।

व्लादीमिर इल्यीच ने बुटों से भोजे निकाले और वेर्गमान से पूछा कि उनके पैर भीगे तो नहीं। उसने जवाब दिया कि नहीं भोज ३ वह विरगमच का जकड़न चोगा पहने हुए था, जिसमें वह भी डूबे हुए थे। व्लादीमिर इल्यीच ने अपने भोजे और बूट

बदले और बदल को बदलने के लिए अलग-अलग अलग निकले लगे।

इसी बीच वेर्गमान ने नमदे के बंडल में से एक बंडल निकाल लिया था। उससे उसकी डांड को हार्निशान के साथ बंधा। वह गरमागरम काफ़ी की गंध से महक उठी।

"भई बाहू! क्या बात है!" व्लादीमिर इल्यीच ने गरम काफ़ी की चमरी नीचे हल किया।

एक-एक प्याला काफ़ी पीने के बाद वे जगह-जगह पड़े। वे चक्र के अगले छोर पर पहुंच गये और नाव को अपने ऊपर से खींचकर ले जाने के लिए उससे निकल आये।

अब वे नागू टापू ने आघा किलोमीटर ही रह गए थे। वहां से हिमतोड़क ने पानी में खुला रास्ता बना दिया था। वहां उनके आवा से स्टाकहोम जानेवाले स्टीमर का इंतजार करना था।

यात्रा की यह आखिरी मंजिल ही सबसे विकट थी। आखिर वह पानी की इस पतली पट्टी पर पहुंच गये। एक और महाप्रयास करके वे नाव में चढ़ गये और निजक डेड स्टीमर का इंतजार करने लगे।

वेर्गमान ने आड़ी बत्ती और दूसरी चरमरा को उठाया था। अब उनकी जरूरत नहीं थी। अपनी नाव वह वहीं चालें पर रोककर मछुआ के पास छोड़कर स्टीमर पर बैठकर घर लौट आया।

कोहरा बिखर गया। बर्फ़ीला मैदान सब अलग-अलग नज़र, हरित-नील दिखने लगा था। दिन निकल रहा था।

नाव में बैठे-बैठे दोनों स्टीमर का आगमन का पता प्रसार देखने के लिए उत्तर-पूर्व की ओर नजर गायें हुए थे।

सबसे दूरवर्ती टापू के आगे जिनके पूरे नाव पर बत्ती नजर आया। आ गया! पानी की पतली पट्टी ने नाव को वहां तक

ही जा रहा था। दोना जहाँ अपने गलूबदों को हिलाने लगा,
स्टीमरवालों ने उन्हें देख लिया।

स्टीमर से उनके लिए एक नाव उतारी गई, जिसमें एक जहाजी
बंदा हुआ था।

ब्लादीमिर इल्फ़ीच ने वेर्गमान से हाथ मिलाया, फिर ऊपर
गए गये लगे लिया।

"अलविदा! आपकी यात्रा सफल हो!" वेर्गमान ने आहिस्ता
से कहा।

११०

न० खोज

पूछा

मेरी याद के अनुसार यह घटना १९१७ की है—जब ३ मरीन
की। उस समय मैं बख़्तरबंद पलटन में शामिल था।

एक रात को मैं अपनी कार लेकर नावोचिम्बो ग्राम में गया।
वहाँ हमारे सैनिक प्रतिनिधियों की बैठक हो रही थी, मगर कार
का इंजन बंद किया और इंतज़ार करने लगा, क्योंकि मुझे कुछ
प्रतिनिधियों को वारकों को वापस पकड़ाना था।

बैठक ख़त्म हो गई। मेरी कार का इंजन चलाया गया
वस, वे बैठे और हम चल देंगे।

तभी हमारी पलटन-समिति के प्रधान जवानों के साथ पास
आये और कहने लगे:

"मेरे तुम्हें एक पार्टी-आदेश दे रहा है।

"कैसा पार्टी-आदेश?" मैंने पूछा।

"बताता हूँ। अभी बारह बजे हैं। १२ बजे

"ठीक है, बारह ही बजे हैं। तो फिर..."

"तो फिर यह—अभी दस मिनट के भीतर मैं एक साथी
को लेकर तुम्हारे पास आऊंगा। वह साथी जवाब दे रही है। उसे
जाना है। समझे?"

"समझा," मैंने जवाब दिया। "आर उन साथी का नाम
क्या है?"

यह सुनते ही हमारे प्रधान बहदू नामक दो साथी वीर वीर
आवाज़ में बोले

१११

१११

‘कृपया व. करो’ यह पार्टी-आदेश है उस पुनः करना होगा। हाँ, पर गाँव और ममल लेना अगर उन मार्यों को कुछ भी हुआ, तो तुम सीधे इसआकी गिरजा पहुँचोगे।

‘तो किसलिए?’

‘अपनी अस्तिम क्रिया के लिए और किसलिए! समझें अब!’

उन्होंने कहा और वहाँ से चले गये

में हैरान बंटा इतजार करने लगा। इंजन घरघरा रहा था। थोड़ी देर बाद देखता क्या हूँ कि हमारे प्रधान चले आ रहे हैं। उनके साथ असेनिक कपड़े पहने एक नागरिक भी आ रहे हैं। जब वे कुछ नज़दीक आ गये, तो मैं मुह बाये रह गया – असेनिक कपड़े पहनन-वान ना हमारे साथी वर्तमान हो थे। मैं उन्हें देख आर उनका भाषण सुन चुका था। उन्होंने क्षेतीन्स्काया प्रासाद की बालकनी से भाषण दिया था। इतनी जल्दी क्या कोई भूल सकता है?!

साथी लेनिन वार में बैठ गये और शिष्टतापूर्वक बोले:

‘साथी, पहले तो मोड़का चलना है, और, फिर लीगोव्का। और मेहरबानी करके जितना तेज़ चला सकें, चलाइये।’

यहाँ ज्यादा कुछ बताने को है नहीं। मेरी कार हमेशा ही बढ़िया हालत में रहती थी, जरा ही देर के भीतर हम मोड़का पहुँच गये थे वहाँ जोर्जेनिक समानाग्रन प्रासाद का कार्यालय था।

व्लादीमिर इल्योच प्रासाद कार्यालय में ज्यादा देर नहीं रुक। कुछ ही मिनट में वह बायस आकर कार में बैठ गये और हम जहर के दूसरे छोर – लीगोव्का – की तरफ चल दिये।

मेरा मन साथी लेनिन को एक बार फिर देखने की कर रहा था। इर्मिला येन मिर पमाया। मगर जैसे ही मैंने अपना भिन्न प्रमाया, ना देखा क्या कि निजिन सड़क पर गड़ कार हमारी कार के पीछे-पीछे आ पहुँची है।

मैं बायें मुड़ गया, वह भी बाये मुड़ गई। मैं दायें घूम गया –

वह भी दायें घूम गई। उसकी गिनिया बसों हुई थी और वह मचन समय कोई इशारा नहीं दे रही थी। मैंने उगर्क इगर्क चीक नगी सर्गी। मैंने यह देखने के लिए अपनी कार को रुक थोड़ा दिया कि उसमें कौन है। मैंने पाया कि उसका ड्राइवर एक ईसाई है, कौन मनाफिर सभी स्वेतगार्डी अफसर हैं।

व्लादीमिर इल्योच ने बायें पीछे की तरफ रुक आर रुक लिया था, इसलिए उन्होंने मुझसे पूछा

‘आप मुझसे कुछ कहना तो नज़ा चाहें या साथी?’

‘जरा पीछे की तरफ देखिये, साथी वर्तमान’

व्लादीमिर इल्योच ने पीछे की तरफ देखा आर कहा

‘एक कार के अलावा और कुछ तो नज़र नहीं आता।’

‘यह हमारे पीछे लगी हुई है।’

‘पीछे कैसे?’

मैंने कहा, ‘मेरे खयाल से ये लोग ज़रूर ही मेन्सिफ पुर्तिस के अफसर हैं। तभी तो वे आपके पीछे इस तरह से गड़ चलन।’

इस पर लेनिन ने कहा, ‘मुझे इसमें ज़रा भी ग़ार नहीं है कि हम उनसे बचकर निकल सकते हैं। मुझे आप पर विश्वास है।’

आप खुद समझ सकते हैं कि इन ज़रूर ही मचन के बायें मुझे क्या हो गया होगा। मैंने कार को उस ज़रा के साथ ज़रूर कि जैसे पहिये सड़क की छू ही न रहे थे। मानो कार हवा में उड़ रही हो! हाँ, एक ही खयाल था मेरा, एक ही योजना न मेरी जायें, नहीं तो पहले मोड़ पर ही कार रुकना जायगी। लेकिन यह कोई खुशी देनेवाला खयाल तो था नहीं – मैंने समझाया आगिर लेनिन थे!

मैंने पीछे देखने की हिम्मत नहीं हो रही थी। मैं उनकी नेती के नायक जा रहा था कि सड़क पर मैं आर उठना नामुम्किन था। तभी मैंने सुना कि व्लादीमिर इल्योच वह गड़ रहे

यनी नक वा हम उसमें बहुत आगे नहीं निकल पाये थे ...
 व यही भी वे पीछे ही आगे नज नहीं चला सकते आगे ? ऊपर
 तोपों की आवाज

मैं कार को पहले ही जितना तेज हो सकता था, चला रहा था।
 मैं सिर घुमाकर पीछे देखने की जुरत नहीं कर सकता था, मगर
 आगे की आवाजों से बहुत दूरी में वह चेहरा जानना था कि वे
 जीन्सों की आवाजें कब भी हमें पकड़ नहीं सकते - नहीं पकड़ सकते।

हम लीगोव्का के पास पहुँच चुके थे। अगली सड़क पर मुड़ते
 समय मैंने देखा कि सामने ही एक बड़ा गढ़ा है। गढ़े के चारों तरफ
 एक जलर जंगला था और जंगले पर आगही के लिए एक लाल
 सालटेन जल रही थी।

अचानक मेरे दिमाग में एक विचार आया। मैंने कार को
 रोका, बूदकर बाहर आया, लालटेन बुझाई और ठोकर मारकर
 जंगले को गिरा दिया। इसके बाद मैं लपककर कार में बैठ गया
 और उसे होशियारी के साथ गढ़े के धरावर से निकालकर ले गया।
 लेकिन हा अब मैं कार को बहुत तेज नहीं चला रहा था। हम
 भटक रहे थे। हमें डोरा पर पहुँचे ही थे कि पूरा अजनबी मुनाई दिया। जो
 यही हुआ! हमारा पीछा करनेवाले गढ़े में जा गिरे थे - तो भी
 पूरी चाल से!

बेसक छूँव शोर मचा - चीजें, पुलिस की सौटियाँ - सभी कुछ!
 जैसे क्रयामत ही आ गई हो!

मगर बुद्धिजीवी नीर पर, हमारा उस शोर से नूनने का कोई
 उगास नहीं था और हम पूरी गफ्तार से साथ लीगोव्का की तरफ
 हो जाते रहे आखिर जब हम लीगोव्का पहुँच गये, तो मैंने एक
 आदमी को मस्तर जलित की तरफ देखने की हिम्मत की। मैंने निर
 धमका और देखा कि वह हम रहा है। मैंने मचमच की भी हमने
 ही हा और मैं भी उनके साथ मिलकर निकल पड़ा।

उस तरह हम हमने हुए अपनी मजिल पर पहुँच गये और
 किन्तु मैं तो नम्र पर।

(“मार्था इवोनोव” नामक कहानी में)

विद्रोह के दिन - २४ अक्टूबर, १९१७ का ललित मुवह
 से ही बहुत बेचैन थे। वह जानते थे कि जिनकी ज़िन्दगी फल
 की गई है और उन्हें कहीं-कहीं लगाया जानेवाला है लेकिन फिर
 भी उनसे निश्चित बैठकर इस बात की प्रतीक्षा करते नहीं बन।
 रहा था: “क्या हमारे साथी निश्चयात्मक ढंग से काम कर रहे हैं?”
 वह लगातार यह जानते रहता चाहते थे कि हर बात किस ढंग
 रही है।

मुवह ही वह भार्गवीता फोफानोवा को कई बार बीबीगोव्का
 पार्टी समिति के दफ्तर भेज चुके थे। उन्होंने उनसे कहा था कि वह
 अपनी आँखें खुली रखें - वह देखती जायें कि सड़कों पर क्या हो रहा
 है और मुगकिन हो, तो यह भी जानने की कोशिश करें कि घटनाओं
 का रुख क्या है।

लेकिन वह इन्हें बताती क्या? मंगलवार हमेशा ११ नवम्बर
 दिन होता है। दफ्तरों और कारखानों में काम हो रहा था। रंगमंच
 और सिनेमा खुले हुए थे। अलबत्ता सड़कों पर हमेशा ११ नवम्बर
 शायद दामों की तादाद कम थी और बरदी पहने लोग ज्यादा थे।

दिन में यह पता चला कि निकोलायेव्स्की पुल को जला दिया
 गया है। फोफानोवा वसील्येव्स्की डोण पर काम करने की ओर
 बीबीगोव्का हलका पहुँचने के लिए उन्हें काफी बख्तर सादकर, दनादनी
 पुल को पार करके आना पड़ा था, क्योंकि बाकी सभी गन्ने गद थे।

मांजी अपनी छोटी-छोटी नावों से गहरी नीचे की नदी में आनन्द
 ले जा रहे थे।

व्लादीमिर इत्योच अपने हाथों को पीछे बांधे हाल में
इतना डर रहे थे। उन्होंने अपने नकली खानों को उन
दिखा था, जो इनके दृष्टिकोण से अलग थे।

मगर में क्या हो रहा है? सब कुछ पंगे चला रहा है?
मरानजान्ग के घर में घूमने की उन्हात पृष्ठा। मगर मार्गरीता
फोफानोवा उन्हें जोरें पान खान नहीं बना पाउ। उन्होंने उस सन्ता
पर हुक्मशायर आर्दमियों को ही देखा था लेकिन यह उन्हें कोई
नहीं बता पाया कि नेवा के पुल क्यों सठा दिये गये हैं।

"जी, मगर अपना कोट मत उतारिये," व्लादीमिर इत्योच
ने कहा, "कृपया यह पुरजा हलका समिति में पहुंचा दीजिये।"

यह केंद्रीय समिति के नाम पत्र था।

बोबोर्न हलका समिति के दफ्तर में फोफानोवा ने पत्र जिम्मेदार
साथियों के हवाले कर दिया। उन्होंने प्रत्यक्षतः स्मील्नी टेलीफोन
किया होगा, क्योंकि उन्होंने फोफानोवा से कहा कि वह जाकर
लेनिन को यह बतये कि केंद्रीय समिति ने लेनिन को घर से निकलने
की आज्ञा नहीं दी है।

"तो वे लोग मुझे बाहर नहीं निकलने देंगे?" व्लादीमिर
इत्योच ने मार्गरीता फोफानोवा के वापस आने पर कहा। "उन्हें
मर्ग सुरक्षा की चिन्ता है। उन्हात पृष्ठा। मगर में इस खान से सहमत
नहीं हो सकता, उन्हें अपना विचार बदलना होगा।"

लेनिन ने जल्दी-जल्दी एक पुरजा और लिखा, वह जाहिरा
तार पर बहुत मजबूत रहा होगा, क्योंकि जब मार्गरीता ने उसे हलका
समिति के सचिव को सुपुर्द किया तो नादेज्दा बोल्शेविकोवना उस
वजन ने अभयता दृष्ट आई, जिसमें गर्मिती की डेज हो रही थी।

क्या व्लादीमिर इत्योच बहुत नाराज हैं?" उन्होंने पूछा।
"बिल्कुल।"

"फिर भी आपको उन्हें जाकर यही संदेश देना होगा कि अभी

वह बाहर नहीं निकल सकते हैं। उन्हें अगले मर्ग की प्रतीक्षा करनी
पड़ेगी।"

मार्गरीता फोफानोवा ने घबराकर लेनिन को मर्ग दे दिया।
वह देख सकती थी कि लेनिन फोनन क्या हो रहे थे।

आपको उनके पास फिर जाना पड़ेगा। उन्होंने अन्तरा
किया, "अब और इंतजार नहीं किया जा सकता - लो को दिया
घरा सभी दरवाद हो सकेगा।"

"ठीक है, मैं जल्दी जाऊंगी," मार्गरीता ने अपनी रजामर्द
जताई, "मगर, एक शर्त है - पहले बंदिये को खाना खाइये। मैंने
कितना अच्छा खाना पकाया है आपके लिए और आप इसे बिना
हाथ भी नहीं लगाया!"

व्लादीमिर इत्योच मुसकरा दिये।

"चलिये, मैं खाना खा लूंगा, लेकिन आपको समिति में
जाकर और लगाना होगा। मैं केंद्रीय समिति की एक पुरजा को
लिख रहा हूँ।"

वह अपने कमरे में फिर चले गये और मार्गरीता खाना गरम
करने के लिए रसोई में घुस गईं।

"साधियो!" व्लादीमिर इत्योच ने जल्दी-जल्दी लिखा,
'मैं ये पंक्तियां चौबीसवीं तारीख की शाम को लिख रहा हूँ।
परिस्थिति अत्यंत विषम है। वस्तुतः अब यह पूर्ण स्पष्ट है कि
विद्रोह में तनिक भी विलंब करना सांघातिक होगा।

उन्होंने कागज को मोड़ा और उसे जगोटेपर म ले गये।

"लीजिये, यह रहा। जल्दी-से-जल्दी लौटकर या जाइये। अगर
आप ग्यारह बजे तक वापस नहीं आइं तो मर्ग पर ठीक तब, मैं
वह करने को अपने आपको आजाद नमंजगा।"

फोफानोवा रजाना हो गई और तारीख पर तब जाकर नहीं
आई। सभी दरवाजे पर आइनों राहिया न दन्तक है। लेनिन उन्हें

सुनकर बहुत नाराज हुआ। उन्होंने राहिया को अपने साथ आने से मना कर दिया कि वह निर्मात्मीन किया और अपने वह पूछना शुरू किया कि शहर में क्या हो रहा है।

लेकिन राहिया भी क्या बता सकते थे? वह कोई सैनिक-वर्गिकों की निर्मात्मीन र मध्य तो था नहीं। मार्ग जानों की जानकारी सिर्फ मार्ग के मध्यमालय - मोन्नी - म मार्ग करनेवालों को ही थी।

राहिया ने मार्ग मोन्नी र दा प्रवेशपत्र र। लेकिन मध्यमालय यह था कि वहाँ पहुँचा कैसे जाये? हमें इतनी रात में चलती नहीं थी और पैदल जाने के लिए जगह बहुत दूर थी - कम से कम दस दिनों की।

कोई बात नहीं, किसी-न-किसी तरह हम पहुँच ही जायेंगे,"

व्लादीमिर इत्योच ने कहा। उन्होंने फाफामोवा के नाम एक पुरजा लिया और दाद वदनम रग लेलिन र दिग वग वदले बिना बाहर निकलने लगे। उन्होंने एक लकड़ी का लकड़ा आगे पर चरमा चढ़ाया, छोड़ी पर इस तरह रुमाल बांध लिया, मानो दाद में दर्द हो और फिर पर एक पुरानी मुन्नी-नूनी टोपी पहन ली।

"चलो, बदल गया भेस! अब चलें यहाँ से," उन्होंने कहा, "बत्ती बुझा दीजिये।"

राहिया ने लंबे वदन कर दिया, वे मोन्नी पर से उतरकर नीचे आ गया।

वदन नृत्यमान थी। आखिरी ट्राम दिगों की तरफ जा रही थी। व्लादीमिर इत्योच उनके और उसके पासशन पर जा चढ़ा। उन्होंने के पीछे-पीछे राहिया भी उस पर आ सवार हुए।

मार्ग में उनके आवाज और कांड समाप्ति नहीं था। व्लादीमिर इत्योच राहिया के सामने बैठ गये और उनसे पूछने लगे कि ट्राम किस ओर जा रही है। वह बच्ची से खिड़की के बाहर अंधेरे में आगे बढ़ाये हुई थी।

"चुप रहिये!" राहिया ने धुमकता रग कहा "एसा न हो कि वह कहीं आपको बोलते चुन चुकी हो। मार्ग आपका आवाज से आपको पहचान ले।"

लेकिन व्लादीमिर इत्योच चुप नहीं हुए।

"डिपो जा रही है, न?" उन्होंने उससे फिर पूछा।

उनके प्रश्नों से नाराजगी रग हुए वह दृष्टि।

हो।

"किसलिए?"

"तुम्हें इससे क्या? तुम यह सब जानना चाहते हो।"

"एक मजदूर।"

उसने उनकी तरफ एक नजर डाली और बोली:

"बड़े आगे मजदूर बतनेवाले! 'कहाँ' 'किसलिए'।" वह नकल करते हुए बोली। "अगर कोई समझ ही नहीं, तो क्या करे? हम जा रहे हैं पूंजीपतियों से लड़ने के लिए और निर्मात्मीन आया समझ में!"

व्लादीमिर इत्योच को उसका जवाब बहुत पसंद आया।

वे लोग आखिरी स्टॉप पर ट्राम से उतर गये और निर्मात्मीन सड़क पर पैदल ही चलने लगे। सभी भक्तों के इन्काउट रग व सड़क पर कोई नहीं आ-जा रहा था। जगता था कि अब वे निर्मात्मीन के बाहर हैं और बिना किसी परधानी के मोन्नी पहुँच जायेंगे। तभी मोड़ पर अचानक दो धुड़सवार नजर आये। वे नरम आगे निकल गये, मगर फिर ठहर गये और आगे में होने लगे मार्ग वे तोपखाना स्कूल के अफसर छात्र थे।

"आप सीधे आगे निकल जाइये," राहिया ने व्लादीमिर इत्योच से धीरे-से कहा, "मैं इन लोगों का पता लगाऊँगा।"

धो फटने-फटने नारा ही शहर विद्रोहियों के हाथ में आ चुका था। अब सम्मानी सरकार या कलकत्ता सरकार, जिसपर प्रामाद है नामने के चोंक और उससे लगी कुछ मइकों तक ही सीमित था।

ज्वादीमिर इत्योच नामने का भी आगम मिये चित्त मानी जान जम म चले मुवह मोने-मारे यह मम र सभी नामने को नाम अपील को पूरा कर चुके थे।

पेजोग्राद में विद्रोह सफल हो चुका था और अब सारी सत्ता सैनिक-क्रांतिकारी समिति के हाथों में थी।

इतिहास में पहली बार विद्रोहियों को रेडियो व्यवस्था का उपयोग कर जान ता असमर प्राप्त हुआ और उन्होंने उसके मिये अपनी अपील सारे लोगों को प्रचारित कर दी।

उसी मुवह एकदम क्वांत और धके हुए लेनिन ने पेजोग्राद सोवियत को बैठक में भाग लिया, जो चौबीस घंटे से ज्यादा ने लगातार चल रही थी।

अब नामनेमिने मजदूरों और मीनमों ने अपने प्रिय ज्वादीमिर इत्योच को मंगा, उन्होंने गढ़े प्रोचन जय-जयकार और तालियों की गड़मड़ाहट के साथ उनका स्वागत किया।

मजदूर वर्ग के नेता मंच पर आ खड़े हुए। उन्होंने खामोजी छा जाने पर ऊंची और साफ आवाज में कहना शुरू किया:

“नामियो! मजदूरों और किसानों की चानि, जिसकी प्राकरपतता पर बोल्शेविक लगातार जोर देने रहे हैं, संपन्न हो गयी है!”

अगले दिन सोवियतों की अखिल-रूसी कांग्रेस ने ज्वादीमिर इत्योच लेनिन को जन-समिन्तार परिषद् का अध्यक्ष निर्वाचित किया।

ज्ञा० बोंन-बुयेविच

अक्तूबर क्रांति के प्रारंभिक दिन

अक्तूबर क्रांति के बाद के पहले दिनों में पेजोग्राद में उत्तम का वातावरण छाया हुआ था। हर कोटे किसी बगले के इन्तार में लगता था। स्मोल्नी में आले-जाले लोगों का सारा बसा हुआ था।

यहां, स्मोल्नी में ही बोल्शेविकों का प्रधान सम्मेलन था। उनका नाम था सैनिक-क्रांतिकारी समिति। ज्वादीमिर इत्योच को, अपने से मिलने आनेवाले सभी लोगों का उन्होंने स्वागत किया और उनसे उस दिन बड़ी घटनाओं के बारे में और वास्तव में इस बारे में सवाल किये कि सिगिर प्रासाद में और उसके पहच-मार्ग पर क्या हो रहा है।

बोल्शेविकों में यह खबर बड़ी तर्ज के साथ मेल गई कि ज्वादीमिर इत्योच स्मोल्नी में हैं। बहुत-से लोग उन्हें जल्दी चानि थ आर वे वहीं आ गये। इनमें से प्रत्येक को अपने यजन-वर्गों के भीड़ लग गई। फिर उन लोगों ने भी अपने-अपने चित्त-वटनाओं से कोई बाल्लुका न था। विदेशी मजदूरों की महिन सत्ता अन्ववारों के संवाददाताओं ने उनके कार्यालय में पहुंचने की राशि को। वे यह देख चुके थे कि सबसे ज्यादा लोगों का चानि-मना गरी हो रहा है, इसलिए जाहिर था कि यहीं वह रह गेला नलि, जहां से विद्रोह का निदेशन किया जा रहा है।

* ज्वादीमिर बोंन-बुयेविच 3-11-1917 को सम्मेलन में भाग लेने के लिए अपने प्रमुख कार्यकर्ता।

एक विशिष्टतामय मनुष्य को स्थापित करना वही आदर्श है।

इसलिए मैं यह कहना चाहता हूँ कि हमें इस आदर्श को ध्यान में रखते हुए ही जीवन जीना चाहिए।

इस वय किताब तथा कि मनुष्य के लिए हमने ये कोई फलस्वरूप नहीं छोड़ दिए हैं।

मनुष्य तीन मान का एक सुव्यवस्थित जीवन मनुष्य और वह मैं उन्हें पाली बाँटकर खुद होने का आदेश देता हूँ।

अब हम में ही सभी धर्मों-धर्मों का एक आकर खुद ही जाने है। एकदम सन्तान काफ़ी हुआ है। न कोई धर्मवाद, न कोई धर्मवाद। धर्मवादों का मतलब खुद है। कमाइल बनाना है कि उसे फलस्वरूप आदेशों कादिन, जो इन चीजों के लिए तैयार हो-मान तक है देने के लिए।

मार्ग ही बताए एक कदम आगे बढ़कर खुद ही गये। कमाइल में खुद ही फलस्वरूप नहीं छोड़े, उनके साथ ही उनके दो मनुष्यों को निरूपित किया।

कोई लड़कई ही तो हम जानते ही हैं... हमने-हमने हमने धर्मों औरों में इन धर्मों और मान को अधुना ही छोड़ दिया।

हमने धर्मों प्रवेक्षण बनाये। धर्म संस्था ९ माना प्रवेक्षण आदेशों इत्यादि को दिया गया।

हमने धर्मों प्रवेक्षण बनाये। धर्म संस्था ९ माना प्रवेक्षण आदेशों इत्यादि को दिया गया।

हमने धर्मों प्रवेक्षण बनाये। धर्म संस्था ९ माना प्रवेक्षण आदेशों इत्यादि को दिया गया।

हमने धर्मों प्रवेक्षण बनाये। धर्म संस्था ९ माना प्रवेक्षण आदेशों इत्यादि को दिया गया।

हमने धर्मों प्रवेक्षण बनाये। धर्म संस्था ९ माना प्रवेक्षण आदेशों इत्यादि को दिया गया।

हमने धर्मों प्रवेक्षण बनाये। धर्म संस्था ९ माना प्रवेक्षण आदेशों इत्यादि को दिया गया।

हमने धर्मों प्रवेक्षण बनाये। धर्म संस्था ९ माना प्रवेक्षण आदेशों इत्यादि को दिया गया।

हमने धर्मों प्रवेक्षण बनाये। धर्म संस्था ९ माना प्रवेक्षण आदेशों इत्यादि को दिया गया।

हमने धर्मों प्रवेक्षण बनाये। धर्म संस्था ९ माना प्रवेक्षण आदेशों इत्यादि को दिया गया।

हमने धर्मों प्रवेक्षण बनाये। धर्म संस्था ९ माना प्रवेक्षण आदेशों इत्यादि को दिया गया।

हमने धर्मों प्रवेक्षण बनाये। धर्म संस्था ९ माना प्रवेक्षण आदेशों इत्यादि को दिया गया।

हमने धर्मों प्रवेक्षण बनाये। धर्म संस्था ९ माना प्रवेक्षण आदेशों इत्यादि को दिया गया।

हमने धर्मों प्रवेक्षण बनाये। धर्म संस्था ९ माना प्रवेक्षण आदेशों इत्यादि को दिया गया।

हमने धर्मों प्रवेक्षण बनाये। धर्म संस्था ९ माना प्रवेक्षण आदेशों इत्यादि को दिया गया।

'अश्वेत' सार जिनसे ही जाता न निर्गिर प्रासाद पर भावा
 कल हल हा हल्ला दिया लाल गाड़ी सैनिकों और नासैनिकों
 न सैनिक प्रमुख शक्ति सीड़ों भीतर जाने और बाहर निकलने
 न रास्ते पर राजा का दिया २५ २६ अगस्त की रात ही
 शिशिर प्रासाद आंतिकारी फौजों को कब्जे में आ गया। अस्थायी
 सरकार को गिरफ्तार करके पहले में पीटर-पाल किला भेज दिया
 गया। कोरेन्स्की स्त्री के वेश में एक गुप्त रास्ते से होकर निकल
 गये और अमरीकी दूतावास की कार में बैठकर बच भागे।

काले चमड़े का कोट और चमड़े की पतलून पहने साइकिल
 सवार एक सैनिक गलियारे में तेज फौजी कदम बढ़ाता जा रहा था।
 उसके कंधे पर चमड़े का थैला लटका हुआ था। अपने बायें हाथ
 से उसने थैले की अपनी बगल में दबा रखा था, जिससे वह झटके
 न खाये।

"सैनिक-आंतिकारी समिति का मुख्यालय कहां है?" उसने
 दरवाजे पर खड़े दोनों लाल गाड़ों से पूछा।

'किससे मिलना है?"

लाल गाड़ी में गये उनके संदेश पहुंचाना है।

एक सतरी मुड़कर अपने साथी से कहने लगा:

"इसका मतलब है कि हमें नायक को खाना होगा। उस
 संदेशकर्ता के पास प्रवक्ता नहीं है, वह भयानक जाना चाहता
 है लाल से मिलना चाहता है।"

नायक ने सैनिक से पूछा कि वह कहा से आया है और उसे
 किससे मिला है।

"मैं शिशिर प्रासाद से आया हूँ। मुझे कमांडर पोद्वोडस्की
 ने भेजा है।"

'मेरे पीछे आओ।"

"मैं संदेश लाया हूँ। मंदिर न अपने कमरे में प्रवेश करने
 हुए कहा। "मुझे खुद लेनिन से मिलना है।"

"क्या बात है, साथी?"

"क्या आप ही लेनिन हैं?"

सैनिक ने अप्रचक्ष्ण उत्सुकता से व्लादीमिर इल्यीच से वरक
 देखा: हर्ष से उसकी आंखें चमक उठी। उसने गर्दी से अपने गले
 का बटन खोला, उसमें से एक कागज निकाला उसे सादर नांगल
 के हाथ में दिया, सलामी दी और बोला:

"संदेश!"

"धन्यवाद, साथी," व्लादीमिर इल्यीच ने कहा और उसी
 तरफ अपना हाथ बढ़ा दिया।

सैनिक जैसे संकोच में पड़ गया उसने अपने दोनों हाथों से
 व्लादीमिर इल्यीच के हाथ का भिन्नाया समुपकरण और चमड़ी
 के साथ उलटा घूमकर फौजी चाल से बढ़ा न चल दिया।

बाहर जाते-जाते उसने लेनिन के कमरे में ध्यान पारक
 को अपने थैले में रख लिया।

"शिशिर प्रासाद पर अधिकार कर लिया गया है अस्थायी
 सरकार को गिरफ्तार कर लिया गया है कोरेन्स्की बल्लर मारा गया
 है!" व्लादीमिर इल्यीच ने संदेश को जोर से पढ़ा।

लेनिन ने वाक्य पूरा ही किया था कि वह आवाज 'हुरा'
 की आवाज उठी, जिसे बराबर के कमरे की लाल गाड़ी ने दुहरा
 दिया।

सारे ही कमरे और गलियारे "हुरा" के गहनमेंही लगे न
 गूँज उठे।

हम लोगों ने सुबह काठ और बज-गलान ने कर पर
 उल्लान ने भरपूर - भावनी में जाना शुरू किया। मैंने व्लादीमिर
 ११

उन्नीच ने प्रस्ताव किया कि वह मेरे घर चलकर सोये। इनके पलने ही मैंने मोरडस्वेल्टकी हत्या की। टेलीफोन करके नगरपाल मजदूरों के दस्तों से कह दिया था कि वे आसपास की सड़कों को निरापद रखें।

हम लोग स्मोल्नी से निकले। सारा शहर अंधेरे में डूबा हुआ था। हम लोग कार में बैठे और मेरे घर की तरफ चल दिये।

व्लादीमिर इत्योच बहुत ही थके हुए थे और उन्हें रास्ते ही में झपकी आ गई थी। घर पहुंचकर हमने कुछ रुखा-सूखा खाता खाया। अब व्लादीमिर इत्योच की सुविधा के लिए सभी कूट करने की कोशिश की। लेकिन मैं उन्हें खाने पलंग पर सोने के लिए बने मजिक्न में ही गंजी कर पाया जो एक छोटे से कमरे में था। कमरे में एक मेज, सागज और म्याली और मेरा पुस्तकालय भी था। आखिर वह तैयार हो गया और हम वेष रात के लिए अलग हुए।

मैं बगलवाले कमरे में बोंफे पर पल गया और मैंने निश्चय किया कि मैं तभी सोऊंगा कि जब मुझे यह विश्वास हो जाये कि व्लादीमिर इत्योच सो गये हैं।

ज्यादा सुरक्षा के खयाल में मैंने हर गाने को जगा दिया था और बाहर से दरवाजे पर साकल भी चढ़ा दी थी। मैंने यह सोचकर अपना पिम्बाल भी निकालकर रख लिया कि घर में घुसने और व्लादीमिर इत्योच की हत्या करने की कोशिश की जा सकती है। आखिर क्या कुछ संभव नहीं था।

जल्द ही पर समय आने के लिए मैंने व सभी टेलीफोन नंबर भी लिख दिये जो मुझे याद आये। साथियों के, म्याली के मजदूरों की हत्या। समितिवा क, डूड-मिनियनो ने यह इसलिए कि संकट के समय में भूल न जाऊं," मैंने अपने मन में कहा।

व्लादीमिर इत्योच ने अपने कमरे की बत्ती जला दी। अपने अपने में पढ़ा 'ज्या वह सो गया है'। रात भी आवाज नहीं आई थी। मुझे अपनी आ नई। मैं सभी पूरी तरह से सोया नहीं था कि अभी मुझे व्लादीमिर इत्योच के दरवाजे के सोने के प्रकाश की तरफ पनली-सी पर्टी प्रकाश होती दिखाई दी।

मैं चौकन्ना हो गया। मैं चुन गया था कि यह फिर वरद आहिस्ता से पलंग से उतरे, धीरे से कमरे का दरवाजा खोला और इस खान में लमकती करन के बाद कि मैं ना गया हूँ, पांच दरवाजे अपने कमरे में मैंने व पास चले गया फिर वह उभरा सामन बैठ गये, दावान खोली, कुछ कागज लिये और लिखन लगे। दरवाजे की दरार में यह सब मुझे दिखाई दे रहा था।

व्लादीमिर इत्योच कुछ लिखने कुछ लिखें जा कर रहे अपने लिखे की पढ़त और फिर खनक कागज पर कुछ लिखने लगते। आखिर उन्होंने एक साफ़ प्रतिलिपि तैयार करना शुरू कर दी।

रात दल गयी थी। पनोवद की लिखन जारी थी। वह रही थी—व्लादीमिर इत्योच ने बत्ती गुल की और पलंग पर जाकर सो गये। मुझे भी नींद आ गई।

सुबह मैंने घर पर सभी से कहा कि वे पादम लामोजी रख, क्योंकि व्लादीमिर इत्योच ने लगभग सारे रक्त खान किया है और उनके लिए सोना जरूरी है।

अचानक उनके कमरे का दरवाजा खुला और वह पूरे अपर पहन, एकदम नरोनाजा, मराकनत रूप निकल आये।

'समाजवादी खान ने बहुत दिन की बधाई।' इत्यादि हमसे कहा।

उनको चेहरे पर थकान का निशान भी न था। बताया था, जैसे वह रात भर आराम में सोया थे, क्योंकि वह ऐसे अनानिजर चौबीस घंटों के बाद दो-तीन घंट में जरा सा विश्रुत नहीं गये थे।

कई साथी आ गये थे। जब सभी लोग चाय पीने बैठ गये और मादजडा सोल्मनलीबीवना भी आकर बैठ गई, जिनोंने राम हमारे घर ही गुजारी थी, तब व्लादीमिर इल्यीच ने अपनी आय से एक सप्ताह गिनाले और उसे अपनी विम्वान भूमि-मवधी आज़ाप्ति पदकर मुनाई, जिसे उन दस निर्धारित दिनों में तैयार करने में लगे हुए थे।

19 रोज़ बाद हम पैदल स्मोन्ती की तरफ़ चले दिये और फिर एक ट्राम पर सवार हो गये। सड़को पर शांति और व्यवस्था को देख व्लादीमिर इल्यीच का चेहरा चमकने लगा।

जाम को, सोवियतों की दूसरी कांग्रेस में, शांति के बारे में आज़ाप्ति के स्वीकार कर लिये जाने के बाद व्लादीमिर इल्यीच ने प्रतिनिधियों को माफ़ और गुजनी हुई आवाज़ में भूमि-मवधी आज़ाप्ति पदकर मुनाई। उसे बड़े जोश के साथ एक स्वर में स्वीकार कर लिया गया।

दानील्का पेन्नोप्राद में लीतेइनी सड़क पर स्थित एक छोटे स्थान के तहख़ाने में रहता था। वह इसी स्थान में पैदा हुआ था और उसके हर निवासी को जानता था।

पहली मंज़िल पर काउंटेस अंबास्यका रहता था। दूसरी मंज़िल पर राजा पिरोगोव-पिश्चायेव का निवास था। उनमें ऊपर की मंज़िल पर अंतःपार्षद ग़ोरोबोव रहते थे और सबसे ऊपर की मंज़िल पर राज्य-पार्षद अर्दातोव। सभी गितावकले से अलग-अलग हलवे और महत्व के खिताब। बस, दानील्का के माना-पिता 7 दिना खिताब या पदवीवाले साधारण लोग थे।

पिछले दिनों में, शांति की उद्घोषणा के बाद में कितनी ही बातें हो चुकी थीं। दानील्का तो अब अचरजों में डूब गया था लेकिन उस दिन...

दानील्का के पिता अम्बुवार लेकर घर आये, जहाँ लोसा और अपने बेटे की तरफ़ देखने लगे।

“तो,” उन्होंने कहा, “अब से तू रूसी जनतंत्र का नागरिक है। इसमें यही लिखा है। व्लादीमिर इल्यीच ने निम्न से यह आज़ाप्ति पर दस्तख़त किये हैं।”

दानील्का को यह बड़ा मानदार खिताब जैसा लगा, लेकिन यह बात पूरी तरह से साफ़ नहीं थी कि कौन कौनसे लोग इस खिताब का क्या मतलब है।

“क्या यह राज्य-पार्षद से ज्यादा महत्वपूर्ण है?” उसने पिता से पूछा।

“भूमि-मवधी आज़ाप्ति - जाम को, सोवियतों की दूसरी कांग्रेस में, शांति के बारे में आज़ाप्ति के स्वीकार कर लिये जाने के बाद व्लादीमिर इल्यीच ने प्रतिनिधियों को माफ़ और गुजनी हुई आवाज़ में भूमि-मवधी आज़ाप्ति पदकर मुनाई। उसे बड़े जोश के साथ एक स्वर में स्वीकार कर लिया गया।

“शांति के बारे में आज़ाप्ति - जाम को, सोवियतों की दूसरी कांग्रेस में, शांति के बारे में आज़ाप्ति के स्वीकार कर लिये जाने के बाद व्लादीमिर इल्यीच ने प्रतिनिधियों को माफ़ और गुजनी हुई आवाज़ में भूमि-मवधी आज़ाप्ति पदकर मुनाई। उसे बड़े जोश के साथ एक स्वर में स्वीकार कर लिया गया।

ज्यादा महत्वपूर्ण है ' पिता ने जवाब दिया।

"अंतःपार्षद से भी?"

"हां, अंतःपार्षद से भी।"

"काउंट से भी?"

'हां।'

"और क्या राजा से भी ऊंचा?"

"राजा से भी बहुत-बहुत ऊंचा," पिता ने हंसकर कहा।

दानील्का अपने दोस्तों से मिलने और उन्हें अपनी जानकारी से परिचित कराने के लिए बाहर भाग गया।

उसे बान्या दोजोरेव मिला।

'मज़बूत बहुत-बहुत ऊंचा खिनाब मिला है ' उसने शैली बघारते हुए कहा। "राज्य-पार्षद से भी ऊंचा, अंतःपार्षद से भी ज्यादा महत्वपूर्ण, काउंट से भी बड़ा, राजा से भी ऊंचा! मैं हूँ रूसी जनतन्त्र का नागरिक। अखबार में नहीं लिखा है। खुद व्लादीमिर उल्यानोव-लेनिन ने आज्ञा पर दस्तखत किये हैं।"

दानील्का आगे भाग गया। उसे ल्यूका कोज़ुलिना मिली। उसने वही कहना शुरू किया:

"मुझे बहुत बड़ा खिनाब मिला है... बहुत ऊंचा, बहुत ऊंचा..."

दानील्का उस दिन कितने ही दोस्तों से मिला और उसने उनमें से हर किसी को यह खबर सुनाई। आखिर वह बिलकूल बक भव और अपने मतान के बाहर बैठकर आगम करने लगा।

बड़े-बड़े वह सोचने लगा 'मन्त्रा उल्यानोव-लेनिन को उसका - दानील्का - के बारे में कहा में पता चला होगा? पिता ने लेनिन को बताया होगा? वह सोच में डूबा हुआ ही था कि गया देखना है कि मान बीलावावा किरील्ल भागता हुआ चला आ रहा है। उसका दम धका हुआ था और वह चिल्ला रहा था:

मानुस है, में राजा हूँ? मैं हूँ रूसी जनतन्त्र का नागरिक। दानील्का इतनी हैरत में आ गया कि उस हिचकिचा आन लगी। "क्या मतलब? कैसा नागरिक?" उसने गर्वपूर्वक कहा। "नागरिक मैं हूँ। अखबारों तक में नहीं लिखा है 'मैंने ही कागज़ में ' "बाह रे तू!" किरील्ल ने मोटी बजान हवा कहा 'तब ऊपर कौन कागज़ बरबाद करेगा?"

यह दानील्का की बरदाश्त के शीर्ष था, वह उसी क्षण किरील्ल के सामने जा खड़ा हुआ और उसे समझ गत हाथ जमा दिया।

दोनों एक-दूसरे पर मुक्के बरसाने लगे।

"नागरिक मैं हूँ!" दानील्का ने निर्गुण्य में निन्दितार कहा।

"नहीं, तू नहीं, नागरिक मैं हूँ" गगन गान्गावाल विगोन्स की चीख ने सारी सड़क को गुंजा दिया।

इसी वक़्त एक नौजवान गजदूर उधर से गुज़रा 'उसने दोनों छोकड़ों को अलग किया। मगर उन्होंने यह नहीं चाहा 'देखा कि लगभग दस वारे में था। लेकिन आगिर उद्वान बाद बका ही थी। गजदूर खिलखिलाकर हंस पड़ा और अपने अपने जूतों में एक अखबार निकाला। तीनों अपने सिर गिराकर उसे लोरे छोड़े पान लगे।

"जायदादों और असैनिक श्रमिका के उन्मत्तन के बारे में आज्ञा" शीर्षक के नीचे लिखा था कि कुर्ज़िन व्यापारी निम्न-पूर्जर्पात जैसी श्रमिकों और उसी तरह राजा, काउंट राज्य-पार्षद अंतःपार्षद जैसे सभी खिनाब का उन्मत्तन कर दिया जायगा। इसके बजाय रूस के सभी निवासी आगे से सभी जनतन्त्र के नागरिक के नाम से ही जाने जायेंगे।"

आज्ञा के नीचे हस्ताक्षर थे 'प्रधान जन-समिन्धन पार्षद उल्यानोव (लेनिन)।"

"तो, देखा तुमने, बात तो तुम दोनों ही ही ठीक थी,"

मजदूर न रहा। 'तुम सभी जनतन्त्र व नागरिक हो, उमन
जानीवरा ने तुरफ उजाग किया और नन भी, 'उमने किमीन्ग
की तरफ इशारा करने हुए कहा, "और में भी। हम सभी अब
ननों जनतन्त्र व नागरिक हैं। व्लादीमिर इल्योच लेनिन ने हम सभी
मेहनतकश लोगों के लिए ही यह आज़ाप्ति लिखी है।"

पहले तो दानील्का को यह जानकारी बड़ी निराशा हुई कि
आज़ाप्ति अपने उमी के लिए नहीं, बल्कि हर किसी के लिए लिखी
गई है। लेकिन फिर वह इस तरीजे पर पहुंचा कि इस तरह तो
यह आज़ाप्ति भी अच्छी है, क्योंकि व्लादीमिर इल्योच ज़्यादातर लेनिन
न अपनी आज़ाप्ति में हर किसी को - उसके माता-पिता को और
उसके सभी शर्मल चोर परिचिता को भी - शामिल कर लिया है
उन्होंने किसी को भी रहने नहीं दिया। शाबाश लेनिन!

लेकिन काउन्सिल प्रेजिडेंट्स का राजा पियोगोव-पिश्चायेव अब -
पापंद गोरोगोव और राज्य-पापंद यदालोव को लेनिन की आज़ाप्ति
में खुश होने नहीं लगी। वे बड़ी जल्दी-जल्दी में देश में भाग गये।
चलो, अच्छा पीछा मूटा! अब लेनिन की सरकार के बड़े मरान म
नय परिचार रहने के लिए आ गये। वे सभी दानील्का के माता-
पिता की तरह साधारण लोग हो थे। सभी मेहनतकश लोग वे
थे व केवल नागरिक ही नहीं, देश के मालिक भी थे।

कला० बोंच-बुर्योच

सोवियत राज्यचिह्न

हर ही चीज का हमारे देश में नये ढंग से निर्माण किया
जा रहा था। और, इसीलिए, एक नया राज्यचिह्न भी जरूरी था
ऐसा, जैसा मानवजाति के इतिहास में नहीं बना था - मगर
पहले मजदूर-किसान राज्य का राज्यचिह्न।

१९१८ के प्रारंभ में एक नये राज्यचिह्न का निर्माण शुरू
दिया गया। मैं उसे तुरंत व्लादीमिर इल्योच के पास ले गया।

व्लादीमिर इल्योच अपने कार्यालय में दो स्टूलों पर दो कुर्सी
तथा कई अन्य साधियों से परामर्श कर रहे थे। मैं बिना देर
की मेज पर रख दिया।

"क्या है - राज्यचिह्न? आओ, देखो मेरी को और यह सब
पर झुककर उसे देखने लगे। सभी लेनिन के आग्रहान आकर नट
हो गये और राज्यचिह्न के चित्र को देखने लगे।

लाल पृष्ठभूमि पर उमन मुरज की दिशों के दोनो तरफ
गेहूं के पूले थे। बीच में एक-दूसरे को काटते शस्त्र और हथौड़े
थे। नीचे पूलों से एक तलवार उठ रही थी, जिसकी मोर सफ
किरणों की तरफ जा रही थी।

"हे तो दिलचस्प!" व्लादीमिर इल्योच ने कहा। "बिना
बिलकुल सही है। लेकिन यह तलवार किसलिए है?" उन्होंने हम सभी
की तरफ बारी बारी से देखा हम सब कह रहे थे और अब तक

* पाकोव स्वेर्दलोव (१८८५-१९१८) और काउन्सिल प्रेजिडेंट्स। १९१८-१९१९ -
कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत राज्य के प्रारंभिक लोग।

तब मैंने जब वह नव मंजरी र प्रथितान्त्रिक की स्थापना नहीं
 कर के थी जब नव आन्दोलन के तब गाँव और प्रभावशाली म
 निलान नहीं पा लगे। तबिल हम समान र समर्थन नहीं है। आत्ममग्न
 की नीति हमारे लिए पुरानी है हम किसी पर हमला नहीं कर रहे -
 हम तो अपने दुश्मन से लड़ रहे हैं। हम जो लड़ाई लड़ रहे,
 वह स्वायत्त है और स्वयंसेवक हमारा मिशन नहीं है, हम उसे हाथ
 में लेकर पकड़ना चाहते हैं, तबिल अपने स्वयंसेवक राज्य की तब नव
 रखा कर सके, जब तक हमारे दुश्मन हैं, जब तक हम पर हमला
 किया और हमें धमकाया जाता है, मगर इसका यह मतलब नहीं
 कि यह हानन हमेशा ही बनी रहेगी... जब संसार भर के लोगों
 का प्रभाव इधर-उधर और स्थापित हो जायगा, तब हमारे लिए
 तलवार की जरूरत नहीं रहेगी... हमें अपने समाजवादी राज्य के
 नागरिकों में इसको निशान देना चाहिए और स्थापित
 इन्हीं ने पेंसिल उठाई और चित्र की तलवार को काट दिया।
 वैसे यह अच्छा नागरिक है। मेरे खयाल में हमें इसे मजूर कर
 लेना चाहिए। बाद में हम जन-कमिश्नर परिषद् में इस पर फिर
 मजूर बन लेगे और विचार कर लेंगे। हम उसे मन्तवी नहीं कर
 देना चाहिए।”

उन्होंने रेखाचित्र के कोने में अपने दस्तखत कर दिये।

मैंने चित्र कलाकार अंद्रेयेव को दे दिया, जो उस समय लेनिन
 के तबिल में ही थे वह उस समय अंद्रेयेव के तबिल में पर बैठे
 लेनिन की मानें बना रहे थे। अंद्रेयेव ने चित्र की अनुरक्ति करने
 पर उसे जीवन बना दिया और उभार दिया। तलवार को उन्होंने
 हदनी के तबिल निकाल दिया।

लेनिन द्वारा मणोपित शर्तों के तबिल में समाजवादी
 तलवार के नागरिकों के तबिल को पर उठाई १९१८ को मजूर
 कर दिया गया।

मोवियन गैस र गैस-बल्लू म भी लीकिया और डीकिया है यान
 अनाज के गुनहारे पुरे इनके गुनहारे की निम्न म थेंग हन है,
 मोवियन जन गानि और तबिल व इन गुनहारे प्रभाव की स्थापना
 म रहने है। इन्ही प्रभावों के तबिल व तबिल-तबिल की तबिल मजूर
 हा रहे है।

कारखाने के मुख्य वर्कशाप में सभा शुरू हो चुकी थी, लेकिन बाहर अभी भी बहुत बड़ी भीड़ थी। हर कोई व्लादीमिर इल्योच की प्रतीक्षा कर रहा था।

आखिर एक कार आई और फाटक पर खड़ी हो गई। कार का दरवाजा खुला और सभी ने लेनिन को देखा।

व्लादीमिर इल्योच ने मजदूरों का अभिनंदन किया और अपनी स्वाभाविक तेज चाल से वर्कशाप के दरवाजे की तरफ चल दिष्टे। सभी उत्तर पीछे-पीछे आगे चले गये और अज्ञाना निर्जन हो गया।

डाइवर ने कार को घुमाया और उसे फाटक से कोई पंद्रह कदम दूर खड़ा कर दिया और बैठकर उनका इंतजार करने लगा। कुछ मिनट बाद उसके पास काले कपड़े पहने एक स्त्री आई। उसने पूछा:

"साथी लेनिन अभी-अभी भीतर गये हैं, है न?"

"मुझे क्या पता, कौन गया है!" डाइवर ने जवाब दिया।

"ऐसा कैसे हो सकता है? आप कैसे डाइवर हैं—क्या यह भी नहीं जानते कि आप किसे ले जा रहे हैं?"

डाइवर ने उस पर खीझ आ गई—कैसी डीठ आंखें हैं।

"मुझे नहीं मालूम!" उसने नाराजी से जवाब दिया।

ओरत पलटकर कारखाने के फाटक की तरफ चली गई।

आधे घंटे बाद सभा खत्म हो गई। वर्कशाप का दरवाजा खुल गया। व्लादीमिर इल्योच बाहर निकल आये।

उनके पीछे-पीछे कई सज्जनों की भी आंखें लागीं और नीतर ही थे कि जहाजियों की बरदी पत्न पर आंखों पड़ने से खड़ा हो गया और उसने अपनी बांहें फैला दीं।

"अरे धकेलो मत!" धकेलो मत! फर्श-फर्श आवाज से वह चिल्लाया।

उसका चेहरा फूला हुआ था और आंखें अंधार में डूबी थीं। वह उस पोशाक के लिहाज से ही भिन्न था।

उसने अपने हाथों से दरवाजे की चाल को जमाने लगा था और आंखों को अज्ञान पर टिका रखा था।

मजदूरों ने समझा कि यह लेनिन की स्तुति करने के लिए आया है और इसलिए उन्होंने जबरदस्ती आगे बढ़ने की कोशिश नहीं की। इसी बीच लेनिन अपनी कार के पास पहुंच गया।

उनका हाथ दरवाजे पर पहुंच भी गया था कि मजदूरों ने उससे कोई सवाल पूछा। वह जवाब देने के लिए अपनी तर्जुमा मंडे।

तभी अचानक एक गोली चली, फिर एक और। लेनिन गिर पड़े। मजदूरों ने जहाजी को अलग धकेल दिया और अपनी तरफ लपके।

डाइवर अपनी पिस्तौल को रिमाइन हुआ कार में लाने उत्तर आया। उसका ध्यान कार के आगे वाले स्त्री ने लगाकर खड़ी एक स्त्री की तरफ गया था—वही, जो लेनिन के जाने में पड़ रही थी। वह भीड़ में अपनी तरफ लपका और अलग पीछा करना लगा। मगर तभी वह मजा और उमन लेनिन को जमीन पर पड़े देखा।

डाइवर लपका और उनका पास पटना कि अब बंद गया। "अरे, अस्पताल ले जाओ इन्हें जल्दी से," किसी ने चिल्लाकर कहा।

लेनिन ने अपना सिर उठाया और तनसार खाने में शीन "नहीं, मुझे घर ले जानो।"

मे ॥ वह भी न जानता है ॥ तब उसने मजदूरों में
कहा। "मैं इन्हें किसी अस्पताल नहीं ले जाऊंगा।"

मजदूर लेनिन पर झुक गये—वह उन्हें उठाकर कार में पहुंचाना
चाहता था। लेकिन वह धीरे धीरे खींच बारी मजिस्ट्रेट में चला उठे और
बोले:

"मैं लूट जा सकता हूँ।"

उसका चेहरा पहलू से हो गया था। वह कार में बैठ गये,
मगर बैठे न रह सके और एक तरफ सीट पर ढह गये। ड्राइवर
ने दरवाजा बंद किया, उछलकर कार में बैठा और तेजी के साथ
खाना हो गया।

उसी समय वह औरत पकड़ ली गई, जिसने लेनिन पर
गोलियां चलाई थीं। वह भीड़ में खो जाना चाह रही थी, लेकिन
जना में कुछ बच्चों ने उस दख लिया था और उन्होंने चिल्लाना
शुरू कर दिया:

"यह रही! यह रही! इसी ने लेनिन पर गोली चलाई है!"

यह ३० अगस्त, १९१८ की बात है।

माजिस्ट्रेट उस के मजदूर और किसान, दुनिया भर के मेहनतकश
अनुसार में लेनिन के सम्बन्ध के बारे में विज्ञप्तियों का बड़ी चिन्ता
और आशा के साथ पढ़ा करते थे।

अखबारों ने लिखा कि जिस स्त्री ने लेनिन की हत्या करने
की कोशिश की थी, उसे जनता ने दुश्मनों ने भजा था। उन्होंने
गोलियों से बड़े पैर लहर में बुझा दिया था।

लेनिन का जन्म बहुत ही गरीब थे। डाक्टरों को उनके बचपन
का बहुत ही कम आशा थी।

लेकिन आखिर एक वह दिन भी आया, जब अखबारों में
यह सुखद समाचार छपा कि लेनिन की जानत अब अच्छी है।

कारखानों में फिर सभा हुई। एक मजदूर ने अखबार में छपी

खबर की जानकारी पढ़कर मुनकर। उसके बाद "क" के सम्बन्ध में
जन के आगे आगे आने वाले हैं।

इसने उनसे कुछ ताकत भरा सही कहा। "मैं
उन्हें गोलीयों से नहीं बचाया। सोचो तो, उन्होंने उनका सारा
जीमार हो गये थे!"

वह क्षण भर के लिए चुप हो गई, फिर उसने पास गोलियों
पर निगाह डाली और जोर से उन लोगों को सम्बोधित की जो
किसी के दिमाग में थे:

"हम अपने गुरुविष्मन्त हैं कि हमारे पास लेनिन है।"

व्लादीमिर इल्यीच की बीमारी के समय उनके पास कितने ही पत्र आए मजदूरों । कितने ही प्रतिनिधिमंडल भी आने लगे थे । हर कोई परामर्श था, हर कोई जानना चाहता था कि उनकी नसबंदी कैसी है । मैं ही व्लादीमिर इल्यीच उठने-बैठने लग और कुछ हवाखोरी के लिए बाहर निकलने लगे, लोगों को बता दिया गया कि वह अब ठीक होने लगे हैं । हर किसी के लिए यह बड़ी खुशी की बात थी । लेकिन मजदूर फिर भी चिंतित थे, वे कहते थे कि यह तो बड़ी अच्छी बात है कि वह ठीक हो रहे हैं, लेकिन हम उन्हें अपनी आंखों से कब देख पायेंगे ।

हमने डाक्टरों से पूछा कि व्लादीमिर इल्यीच समा में भाषण करने लायक कब हो पायेंगे, तो हमें यह जवाब मिला : "तीन महीने से पहले नहीं ।" लेनिन के बारे में एक फ़िल्म बनाकर दिखाता जरूरी था । फ़िल्म कैमरामैन बोल्श्यान्स्की को बनानी थी । लेनिन को यह पता नहीं चलने देना था कि उन पर फ़िल्म बनाई जा रही है, क्योंकि वह सभी जानते थे कि उन से दूरे । हमने बोल्श्यान्स्की से साथ यह व्यवस्था की कि वह पहनें उजने, धूपदान दिन से आने मतयोगियों के साथ केमरामैन आ जाये और उनके सहयोगी अपने कैमरा पगवातार से चार कोणों से शस्त्रों में जगह-

* डार टोप - मोलहवी सड़ों में लव में डाली गई ४० टन न खादा बदन को लोप, भी लवों केमरामैन से पड़ो । डार टोप २००० नवा लोहार्से को कला की एक बड़िया मिलाव है ।

जगह छिपाकर लगा दें । आगेगीन इल्यीच आग नें न नर नसी नसने पर टहलते थे ।

यह सारा ही काम बहुत तेजी से साथ किया जाना था, क्योंकि मूल फ़िल्म की कई प्रतियां तैयार हो जानी थीं । उन कई सिनेमाघरों में दिखाया जाना था, ताकि देश भर में यह खबर और लोग व्लादीमिर इल्यीच को केमरामैन से जगहों में देख सकें ।

सितंबर, १९१८ की बात है । शस्त्र न मुताबक १२०० की टेलीफोन द्वारा बोल्श्यान्स्की को खबर दी गई कि वह पूरी तरह से तैयार रहें । इधर व्लादीमिर इल्यीच से कहा गया कि आप डाक्टरों की हिदायत के मुताबिक उन्हें पर न दें । शस्त्र टहलने के लिए जाना चाहिए ।

व्लादीमिर इल्यीच तैयार हो गये ।

निश्चित समय पर मैंने व्लादीमिर इल्यीच को शस्त्र दिखाया कि उनकी हवाखोरी का वक्त हो गया है । वह चुनन उठ नार हुए, टोपी पहनी और बोले :

"आज मैं ओवरकोट नहीं पहनूंगा । मैं शस्त्र मुताबक है ।"

प्रबंध कार्यालय के साथियों ने बोल्श्यान्स्की को शस्त्र न दिया कि व्लादीमिर इल्यीच चल पड़े हैं । फ़िल्म बना पर तब करते हुए मैं और लेनिन दरवाजे से निकले और पगवातार की तरफ चल दिये ।

व्लादीमिर इल्यीच के दरवाजे न निकलने के बाद न खबर उनकी वापसी पर उसके बंद होने तक ही हम बात फ़िल्म पर बंद हो गई ।

इधर हम बातचीत में रहे हुए चल रहे थे और उधर सभी कैमरामैन लेनिन के एक-एक शब्द उनके पड़ते देखते थे । फ़िल्मा रहे थे । वे सभी छिप हुए थे, क्योंकि अगर व्लादीमिर

इल्यीच ने उन्हें देख लिया होता, तो वह गलटकर वापस चले गये।

वे जाना था कि फिल्म में क्लादीमिर इल्यीच की अच्छी रजत आए, लेकिन मैं धीरे-धीरे उनमें अलग निमग्न नग। यह बात उनके ध्यान में आ गई और वह कहने लगे:

“आप दूर क्यों रह रहे हैं? लोग हवाखोरी के लिए जाते हैं, तो साथ-साथ ही घूमते हैं।”

मैं उनके नजदीक आ गया और हमने अपनी बातचीत जारी रखी। इसी तरह हम जार तोप तक जा पहुंचे। मेरे यह कहने पर कि और आगे चला जाये, क्लादीमिर इल्यीच ने कहा:

“सुझाव तो आकर्षक है, मगर हो नहीं सकता। मुझे चार वजे के पहले-पहले एक लेख पूरा करना है और दो साथियों से मिलना है, जिन्हें वक्त दिया हुआ है।”

हम मुड़कर वापस जाने लगे। हम कुछ ही कदम गये थे कि क्लादीमिर इल्यीच बोले:

“देखिये, देखिये! वह कौन भागकर जा रहा है? उसके कंधे पर क्या है? .. अरे, हां! यह तो कोई सिने-कैमरामैन है!”

“हां, है तो। वह सिने-कैमरामैन ही है और यहा कई और कैमरामैन भी हैं। वे सब आपकी फिल्म बना रहे हैं।”

“आप तो अभी जांचन किसन दी? ” उन्होंने पूछा। “और आपन मुझे बताया क्यों नहीं?”

“जाना कि आप सभी लंघन नहीं होने और यह बहुत जरूरी है।”

“तो यह कहिये कि आपने मुझे बना दिया! लेकिन आपने ऐसा क्यों किया, क्लादीमिर इमीलियेविच?” उन्होंने उल्लाहना भरे स्वर में कहा।

“मैं यह पहली बार आपकी चर्चा कर रहा हूँ, क्लादीमिर इल्यीच,” मैंने वादा किया। लेकिन मैंने यह भी कहा कि आपकी फिल्म बनाना जरूरी है, सभी लोग हैं कि आप अच्छे गये हैं, और सभी आपको खूबना गेहना है - फिर चले गियेमा : परदे पर ही सही। आखिर अभी आप कम से कम तीन महीने और मसाओ में भाषण नहीं दे पायेंगे।

“यह वाद में देखा जायेगा! ” क्लादीमिर इलीच ने जवाब दिया।

“डॉक्टरों का सही कहना है। आप मजदूर बन चुकित हैं। इसीलिए हमने यह तय किया कि आपकी हवाखोरी के पिछम बनायें और उसे हम मजदूर कलवों में डिलावे। यह मजदूर बन क एक बहुत ही जरूरी चीज है।”

“चलिये, अगर ऐसा ही है, तो दूसरी बात है। मैं आपका सब पाप माफ़ करता हूँ।”

हमने इस योजना पर खूब हंसी-मजाक किया और आपस में प्रसन्नतापूर्वक बातें करते हुए चलते चले गये।

“भई वाह! यह तो पूरा फ़िल्मी पागल है! आपका मसमर आज मुझे बना दिया!” क्लादीमिर इल्यीच ने प्रसन्न मन में कहा।

जब फिल्म बनानेवालों ने देखा कि ‘पागल’ का पता चल गया है, तो वे अपनी छिपने की तरफ़ में निजम पाव आर करी बातचीत को खुले तौर पर फ़िल्माय कर मस पाव है कि फिल्म का यह हिस्सा बहुत सफल बन पाया था, क्योंकि इनमें क्लादीमिर इल्यीच को प्रसन्नतापूर्वक हमने दिखाया गया था। कुछ मित्राकर यह बड़ी सजीव और रोचक फिल्म थी।

जब बोल्ल्यान्स्की ने क्लादीमिर इलीच को परदे पर यह पूरा फ़िल्म दिखाई, तो उन्हें जार तोप के गमवाता दृश्य आश्चर्यचकित आया।

यह पूर्वजावन के लिए ही रात "अलादीमिर इल्सीच" की प्रदर्शन में इराकली नामक फिल्म हर सिनेमाघर में दिखाई गई। ऐसे एक समानांतर फिल्म के दिखने के रूप में पहले मामलों के मतभेदों में और फिर नगर तथा देश के अन्य भागों में दिखाया गया। इस फिल्म में खूबसूरतों ने दर्शकों को बयान करना सिखाया है। जैसे ही अलादीमिर इल्सीच परदे पर नजर आते, हर कोई अलग ही जान और तात्त्विक बजाते लगता। हान नागों से गंजने लगता।

"अलादीमिर इल्सीच सिंदावाद!"

१९२७ में काशिनो ग्राम के गहनवाला ने एक छान-सा बिजलीघर बनाया।

बड़ी मुसीबतों का वक्त था वह - मधुमे वरगी मामला भी ग्रामप्य था।

और ऐसे वक्त में काशिनो के किसानों ने याने-प्राण अपनी जड़ों से और अपनी खुद की उछा में प्राता बिजलीघर बनाया शुरू किया। बड़ी मुश्किल से उन्होंने टेबोरोस का तार काटे और प्राप्त किये। यह तार बहुत मोटा था और सामान्य तारों से बड़ा बनाया गया था। उसे जमीन पर बिछा दिया गया और पनामा, चिमटों और हाथों से उसकी बटों को मोटा गया। उसे याने उस पर उनके पास काफी तार हो गया।

फिर वे खंभे लगाने के लिए लगाने में बहुत ने माय अथ उन्हें बिजली पैदा करने की मशीन - डायनामो की तकनीक की

अगर इस बात को ध्यान में रखा जाय कि उस वक्त का मामूली कील खरीद पाना भी लगभग असम्भव था तो इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि डायनामो का तानित करना कितना मुश्किल रहा होगा।

काशिनो के किसान मान्यो गये। डायनामो की तकनीक में जहां भी वे जाने, अपना नाम यह कहकर ही शुरू करते कि बिजली के पास नारे देश में बिजली लाने की योजना है और हम उसी योजना के अनुसार काम कर रहे हैं।

ल्लादीमिर इल्याच नलवीर खिन्नवाने के लिए बैठना पसंद नहीं करते थे। लेकिन वह दूसरों के काम की कदर करते थे। आखिर फोटोग्राफर शहर से वापसकर इसी अवसर के लिए आया था।

लेनिन ने कहा:

“ठीक है, आप बाहर चलकर तैयारी कीजिये। हम नादेज्दा कोस्तान्तीनोव्ना के साथ मिनट भर में आते हैं।”

फोटोग्राफर बाहर लपका और अपना कैमरा ठीक करने लगा। बरा ही देर में उसे बच्चों ने घेर लिया। हर कोई कैमरा के बिल्कुल पास सबसे आगे ही बैठना चाहता था।

ल्लादीमिर इल्याच और नादेज्दा कोस्तान्तीनोव्ना बाहर आये। फोटोग्राफर ने उन्हें बीच में बैठा दिया और उनके आसपास किमान छोड़े हो गये। लेकिन बच्चे अब भी बीच में पड़ते थे। सभी लेनिन की वजह से बैठना चाहते थे। फोटोग्राफर को मरगा आ गया और वह कदम लगा कि अगर बच्चे जानि में नहीं बैठे, तो फांटा मरवा दी जायेगी।

ल्लादीमिर इल्याच ने ऊपर आनिपूर्यक बैठाने की हाजिरी की। उन्होंने कैमरा की तरफ इशारा करते हुए कहा:

“देखो, उन काले छेद की तरफ देखते रहो।”

बच्चे बाय छेद की तरफ नाहने लग। फोटोग्राफर एक नये काले कपड़े में छिप गया और वही का वहीं जमकर रह गया।

लेनिन ने उगमे बच्चे ‘जैलये’ बच्चे मही पड मे जम न जाय।

सभी लोग तब पड शोन ‘धवराइय नही, हमान बच्चे बहुत मजबुत है।’

बच्चे फिर इधर-उधर हिलने-डुलने लग गये थे, क्योंकि बड़े इन्हीं के चारों में बाने कर रहे थे। फोटोग्राफर चिल्लाया “हिलो मत।”

लेनिन यह देखकर मुसकरा दिये और सभी फोटोग्राफर ने मरगा दवा दिया।

इसके बाद सभा हुई। सभी एक ऊंचे खंभे के पास जमा हो गये, जिससे एक बिजली का लैंप लटका हुआ था। उसे पटने कभी नहीं जलाया गया था। खंभा पर ली आनियों और लाख फीतों से सजा हुआ था। खंभे के पास एक मजबूती।

आसपास सिर्फ काशिनो के ही किमान नहीं थे—दूसरे शहरों के रहनेवाले भी वहां मौजूद थे। कई लोग तो बहुत दूर-दूर से आये थे। लेनिन मेज के पास गये और भाषण दन लग।

“आपका गांव काशिनो आज एक बिजलीघर बनाना शुरू कर रहा है। बहुत शानदार काम है यह। लेकिन यह सिर्फ शुरुआत है। हमारा कार्यभार यह है कि हमारे सारे जन्मगत में बिजली की रोशनी की बाढ़ आ जाये...”

जब लेनिन का भाषण समाप्त हुआ, तो वाद्यवाद ने “इंटरनेशनल” की धुन बजाई। उसी समय भंगोरे में बिजलीघर में डायनामो चालू कर दिया।

चीक में बिजली का लैंप जलने लगा। हर घर में रातिया जगमगा उठी।

पहले काशिनो के निवासी चिराम इस्तेमाल किया करने थे जो बड़ी फीकी, हरी-सी रोशनी दिया करते थे।

अब बिजली की जगमगाती रोशनी को देखकर किसी ने कहा “अब हमारे यहां इल्याच के लैंप रातनी दे रहे है।”

लेनिन ने किसानों से विदा ली और बाय की तरफ चल दिये। एकदम अंधेरा था। नवंबर की ठंडी हवा शहरे पर थपड़ मार रही थी।

गांव से कुछ दूर निकल जान के बाद ल्लादीमिर इल्याच ने पीछे की तरफ एक बजर डाली। मरगा खानों के बीच में काशिनो के मकानों की जगमगाती छिड़कियां दिखाई दे रही थीं।

लेनिन छिड़गी के फास खड़े थे। उनके हाथ पतलून की जेबों में गूर गहरे घुस गए थे। ऊर्जा महराजी छत घोंगरी बाड़ी गिरि-क्रियोगाने जहाँ हमारे में ठंड घोंगरी सोचने थी। सरदियों के आगिरी हस्तों बेहद ठंडे थे।

गिरिजी में ज्वादीमिर इलीच गोली से बदलकदनी अस्वागार की इमारत लोडस्काया मीनार जिम पर लना जवाब धसर आकाश की पृष्ठभूमि में स्पष्ट नजर आता था और जो मानेज की इमारत से दूरे जाने की अनिश्चित यहा से कम ऊंची प्रतीत होती थी, कमलिन की दीवार का कुछ हिस्सा और कारकों को दख सकत थे। चोंक में जहाँ पत्थर धंस गये थे, वहाँ गड़े बन गये थे। अस्वागार ने निडोन्काया मीनार की तरफ जाती राह-रोशनियों की कतार हुकदार घास जैसी लगती थी।

लोडस्काया मीनार से लेकर अस्वागार तक की सड़क और चौक पर पड़ी बर्फें सदियाली और गंदी थी। बस, छतों और कैमलिन-प्राचीर के ऊपर की बर्फें ही चीनी जैसी सफेद थी।

कैमलिन से आगे के पत्थर के मकान जमे हुए से लगते थे। मग्रहालय और सम्बांसेव पुस्तकालय के आगे की भिमनियां तो नजर आती थी, मगर किसी के भी धूप का सच्चा तक नहीं उठता दोख रहा था। शहर में ईंधन नहीं था।

सरदी ने भास्को को ठंड के बर्फानी घेरे में जकड़ रखा था। गृहयुद्ध के फलस्वरूप देश को निर्जीव और निडान करनेवाले

दुश्मनों—भूख और विनाश—में अथ भीषण जालों को शामिल हो गया था।

देश में टाइटिस का गयेकर प्रयोग था।

लेनिन ने एक ठंडी सांस ली। फिर उन्होंने अवागार इच्छा से अपने दाहिने हाथ को जेब से निकाला और अपनी मेढ़री तरफ चल दिये।

एक साधारण-सा कलम जल्दी में कुछ शब्दों को लक्षित करते हुए कागज पर दौड़ने लगा। लिखावट ऐसी निपटो न जा सके। उनके दिमाग में विचार पर विचार आ रहे थे और उन्हें सभी को लिख डालना था। बस भवनों में पता लगाया जाय कि उनके पास काफ़ी जलाऊ लकड़ी है या नहीं। नहीं तो उन्हें जलाऊ लकड़ी प्रदान की जाये... धातु उद्योग में काम करनेवाले मजदूरों को चीनी और सैकरीन का राशन बढ़ाया जाये... शिक्षा की जन-कमिसारियत ग्रामीण इलाकों के लिए पुस्तकों के प्रकाशन में विघट रही है... आपूर्ति से साधियों को अवगत और न्योफान परवाहा है... कामेनेव को नोट लिखना है... रिदगी उद्योगालि जो अपनी बेवार् पेश कर रहे हैं... उन लड़कियां जो मानते हैं या नहीं?...

अण भर के लिए कलम हवा में ही जा रहा था।

सम्मेलन-कक्ष का सफेद मोमजामा-मड़ा दरवाजा आहिस्ता से खुला और उनके सचिव ने भीतर निगाह डाली।

“व्लादीमिर इलीच,” उसने धीरे से आवाज दी। लेनिन ने जवाब नहीं दिया, वह अपने काम में लगे रहे। “व्लादीमिर इलीच...”

लेनिन ने अपना सिर उठाया और गोल ‘हा-हा, बालिव’ और नाट लिखने के लिए एक रागश और उठा लिया।

‘क्याचीमिर इत्युचि, साशी गोर्जुनोव आपसे मिलने के लिए
आये हैं।’

'ठीक है,' सेनिम ने कहा।

सचिव अपने पीछे दरवाजे को धीरे से बंद करने का आदेश देकर
गंगा और कलमिंदर दोनों सामने के नाम अपना नाट्य प्रदर्शन
करने में लगे रहे ।

[illegible]

“आइसे, जेओजीव अलेखसेविन, आइसे। तशरीफ रखिये,”
 “आगमगुर्गी ती तरफ ले जाते हूँ। आदीगर धर्याप
 न। (१५५)।

तब ही वह अचानक चिल्लाती थी और तब ही आरामपुरी तक आये और
उस क्षण में ही वह अपने पैरों को छिगाते हुए जल्दी
से बैठ गये।

गंगा नदी का नाम क्या है ? " मिताबाज राजा ? "

अपनी माता को बर्बाद करने के लिए मैंने अपनी माता की मदद की।

अने अन्धी यातून वीज मिळत राहते, अन्ननिर्माण
अवरोधित, अन्न कम, मधुमेह विकार होतो.

अथ भविष्यत्पुत्राणां नामानि । अथ भविष्यत्पुत्राणां नामानि । अथ भविष्यत्पुत्राणां नामानि ।

[illegible]

जतिन, १९२६ की चरद से,



माता के लिए गाई गांव की
 भस्मा पकड़ लाना मिला है चानर
 विधवा के लिए चानर करने में।

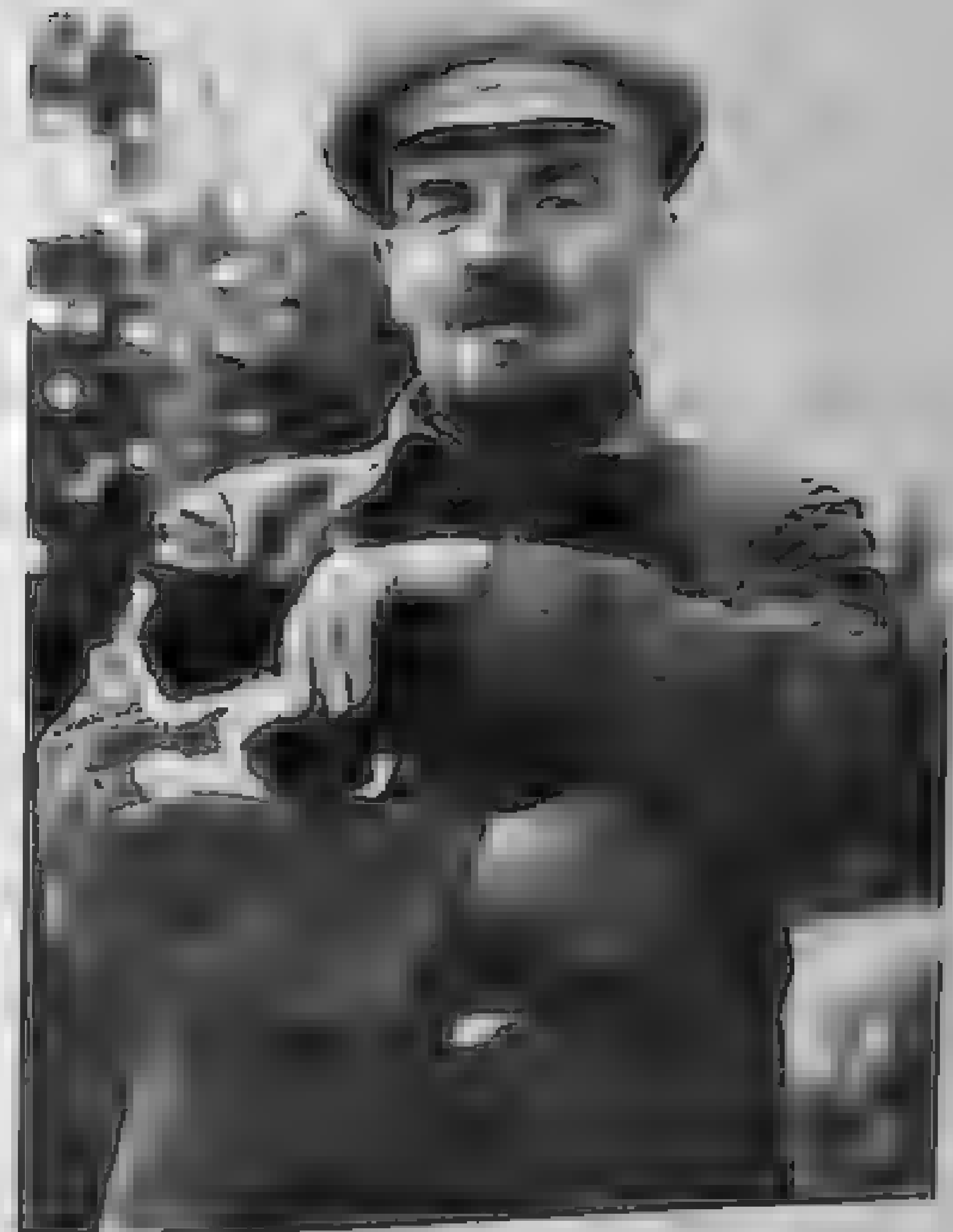
नर्मि को दूधाना बहुत पसंद था।



लक्ष्मीनारायण धाम पर भगवत्
 मङ्गलार्चना मन्त्रों के साथ
 इसी मन्त्रों का प्रतीक लीनको
 'पद्म' मन्त्रों का शङ्कराक्षर 'क्षम'
 मन्त्रों का पूरे मन्त्र।



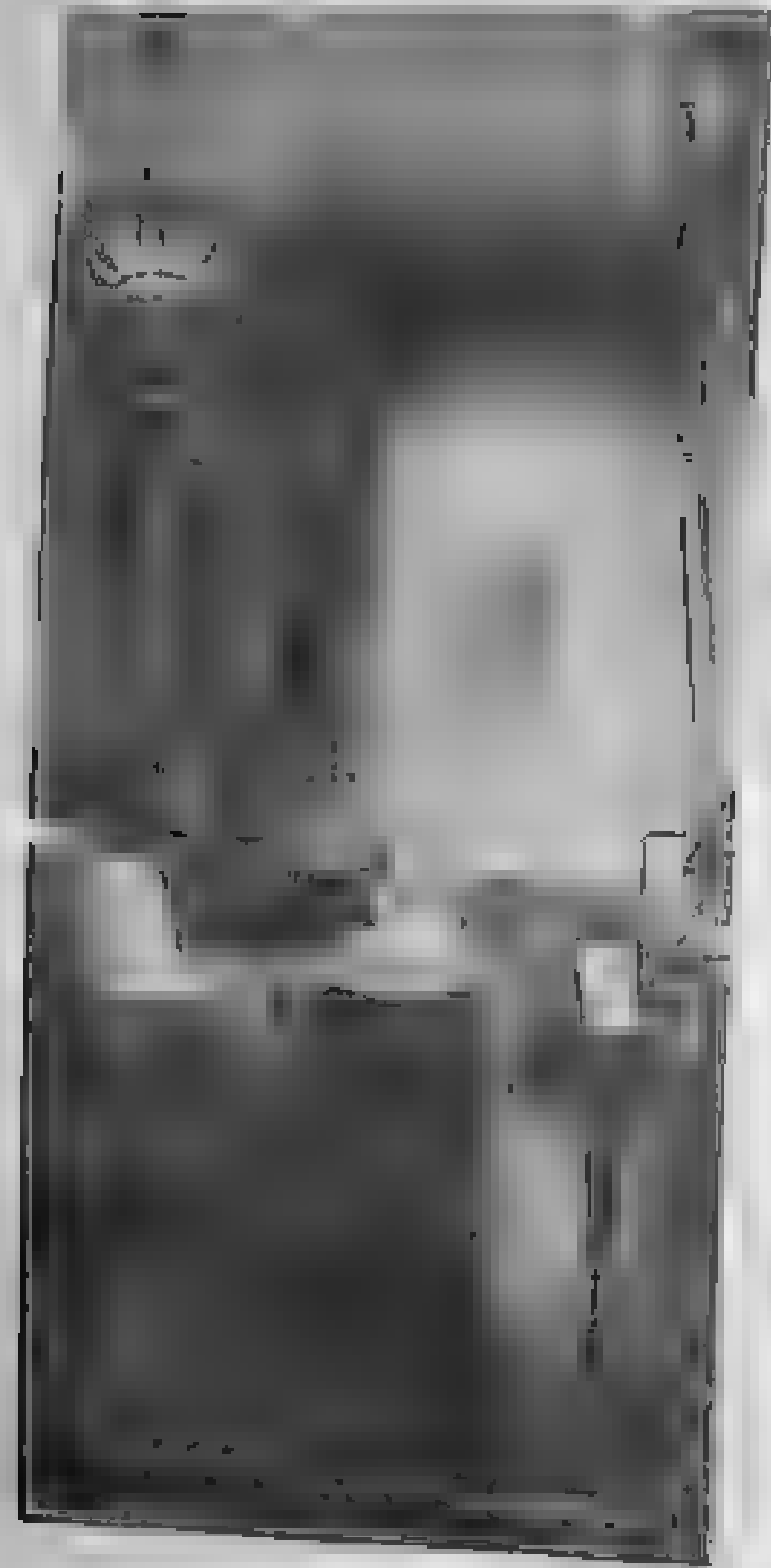
मङ्गलार्चना मन्त्रों के साथ



गोर्गी • ज्वाइन्सिंग इंगोय क
 फमदा। ज्वाइन्सिंग इंगोय क
 की लागोर था। ज्वाइन्सिंग इंगोय को
 ज्वाइन्सिंग इंगोय को संपत्ति सम्पत्ति से और
 उन्हाय वहाँ कुछ भी नहीं बचता

ज्वाइन्सिंग इंगोय क फमदा। ज्वाइन्सिंग इंगोय को
 की लागोर था। ज्वाइन्सिंग इंगोय को संपत्ति सम्पत्ति से और
 उन्हाय वहाँ कुछ भी नहीं बचता

ज्वाइन्सिंग इंगोय क फमदा। ज्वाइन्सिंग इंगोय को
 की लागोर था। ज्वाइन्सिंग इंगोय को संपत्ति सम्पत्ति से और
 उन्हाय वहाँ कुछ भी नहीं बचता



गोर्की का यह मकान अब स्मारक-समूहालय बन गया है। लेनिन का नाम सड़क प्रगर है।



कोर्शुनोव ने लेनिन पर तजर डाली और देखा कि ज्यादातर इन्हीं उनकी ओर ध्यान में दृष्ट रहे हैं।

कोर्शुनोव को लग रहा था कि लेनिन इस उल्का के घारे में अच्छी तरह जानते हैं, वैज्ञानिक व विभाग और आकाशाचों में यवगत है और इसलिए अपनी बातों में वह एक बहुत ही व्यक्त व्यक्ति के अत्यंत मूल्यवान समय को नष्ट कर रहे हैं। वह हकसाने लग।

‘वह उल्का... मगर आप तो इसके घारे में सभी कुछ जानते हैं...’

‘आप यह कैसे सोचते हैं, लेओनीद अलेक्सेयेविच?’ लेनिन ने कहा। ‘इसमें ज़रा मुझे कुछ नहीं मान्य था कि कर्ण उल्का गिरी है। जी, सच...’

अपना सिर एक तरफ झुकाकर और वैज्ञानिक की तरफ आगे बढ़कर उन्होंने मुसकराते हुए धीरे से कहा:

‘साल तक याद नहीं था मगर।’

कोर्शुनोव भी मुसकरा दिये।

‘अजब बात है!’ लेनिन ने गंभीर होकर अपनी बात जारी रखी, ‘कड़ियों का खयाल है कि जन-कमिसार परिषद् का अध्यक्ष और जन-कमिसार सभी कुछ जानते हैं। यह वेसिस्पेर की बकवास है। हम कम, बहुत कम, शर्मनाक तौर पर कम जानते हैं। हमारी आप लोगों से जितनी ज्यादा मुलाकातें हों, उतना ही अच्छा है। अपनी बात जारी रखिये, लेओनीद अलेक्सेयेविच। और जल्दी मत कीजिये।’

कोर्शुनोव ने उत्साहित और उत्कलित होकर अपनी सोची बातों को बताना शुरू किया, जिससे वह लेनिन को अस्से से अवगत कराना चाह रहे थे।

“अगर इस बात को ध्यान में रखा जाये कि संसार की तुलनासे यही उल्का का भार सारे पृथ्वी पर आर दूसरी-मेक्सिको-सबसे बड़ी उल्का का भार से है, तो उनके मुकाबले हमारी साइबेरियाई उल्का तो गन्धमूक चिराग है। अभयवर्ण, इसकी सही स्थिति अभी तक मालूम नहीं की गई है।”

“आर आप इस उल्का की खोज में जाना चाहते हैं?” कोर्शुनोव चुप हुए, तो व्लादीमिर इल्यीच ने पूछा।

“जी, हाँ,” उन्होंने जवाब दिया। “यही बात है। मैं इस उल्का की खोज में जाना चाहता हूँ। मैं इस बात को समझता हूँ कि इस तरह की अनुसंधान-यात्राओं का अभी समय नहीं है... लेकिन मैं इसके लिए कम से कम बीजों की भाँति जल्दी से तैयारी कर रहा हूँ। यह सोचकर मैं खुश होता हूँ कि विदेशों में तो हमारी उल्का का अध्ययन के लिए संस्थाएँ तक स्थापित की जा रही हैं जब कि हम...”

“सही, विदेशी संस्थाओं का इससे क्या सरोकार!” लेनिन ने तेजी से कहा। “वे अपना समय बरबाद करते क्या करती? क्या हमें आपको अपने अनुसंधान-कार्य के लिए क्या क्या चाहिए?”

“मैं सभी बातें निराश्रुत हूँ,” कोर्शुनोव ने जेब में कुछ मुँदे हुए कागज निकालकर कहा। “मैंने एकदम तुरन्त बीजों को ही रखा है, व्लादीमिर इल्यीच।”

लेनिन ने सूची को पढ़ता शुरू किया और जैसे-जैसे वह पढ़ते गये उनकी आँखों में चमक पड़ने लगी। आखिर उन्होंने कागजों को सट पर रख दिया, बाँधे हाथ में उन्हें पकड़ा और फिर वैज्ञानिक की तरफ देखा। उनका चेहरा पर चमकी और उदासी दोनों की भाँति थी।

कोर्शुनोव ने लेनिन की तरफ देखा और अनिश्चयान्मक स्वर में बोले

“चाहें, तो... मैं इसे कुछ और आटा कर सकता हूँ, हम इतनी रोटी को जरूरत नहीं और हम आप कुछ शकस्तता के बिना भी काम चला सकते हैं... हम सूची में से एक विशालाकार उल्का को भी निकाल सकते हैं, और... और...”

लेनिन की आँखें वैज्ञानिक से आगे, कमरे के कोने पर टिकी हुई थीं। लगता था, जैसे कमरे में दूसरे व्यक्ति की मौजूदगी की बात भी इस वक्त उनके ध्यान में नहीं है।

“एक विशालाकार उल्का भी निकाल सकते हैं,” कोर्शुनोव ने फिर कहा। “मैंने आपसे कहा था कि मैंने इस उल्का को खोज के साथ प्रयत्न किया और खड़े हो गये।”

उन्होंने अपने हाथों को फिर अपनी जेबों में खूँस लिया और कोर्शुनोव की आँखों से बचते हुए, बार-बार छिड़की के बाहर देखते हुए कमरे में इधर-उधर टहलने लगे।

“आप लाइगा में जा रहे हैं—बीहड़ जंगल में,” लेनिन ने बहुत आवाज़ से कहा। कोर्शुनोव की यह समझने की भाँति कोर्शुनोव ने हाँ में हाँ मिलाया। “मैंने कहा था कि मैंने इस उल्का को खोज के साथ प्रयत्न किया और खड़े हो गये।”

वह चुप हो गये।

“बेशक आप इन बातों को खूब अच्छी तरह से समझते हैं,” व्लादीमिर इल्यीच ने अपनी आँखों को पल्ले में नज़र आया हुआ नज़रों से रखा। फिर उन्होंने सूची को उठाया और इसे आँखों से पढ़ने लगा। “एक पाउंड रोटी प्रति दिन प्रति व्यक्ति सही है। निम्न पाँच पाउंड चीनी, तंबाकू...” उनकी आवाज़ में कभी सख्ती का

जानी, कभी माराजी, तो कभी वह अचानक बेहद उदामी से भर जाती।

"चीनी कम भी ले जाई जा सकती है, मगर तंबाकू जरूरी है। मच्छरों के खिलाफ हमारे पास अकेली यही चीज है," कोर्सनोव ने दृढ़ स्वर में कहा।

व्लादीमिर इल्यीच ऐसे बोलते रहे, मानो बीच में किसी ने कुछ कहा हो नहीं था:

"उपकरण गेटियों ने लिए समूर। उपकरण पाटियां!" उन्होंने दुहराया।

कोर्सनोव खड़े हो गये, उनके चश्मे के लेंस चमचमाने लगे, जिनमें मिड़कियों का अंश पड़ रहा था। उनकी आवाज में ऐसे आदमी जैसा संकल्प भरा हुआ था, जो मानो आखिरी बाजी लगा रहा हो।

"व्लादीमिर इल्यीच!" उन्होंने ऊंची और सख्त आवाज में कहा। "मैंने लेंस चमचमाने लगे, उनके चश्मे के लेंस चमचमाने लगे, जिनमें मिड़कियों का अंश पड़ रहा था। उनकी आवाज में ऐसे आदमी जैसा संकल्प भरा हुआ था, जो मानो आखिरी बाजी लगा रहा हो।"

कोर्सनोव फिर बैठ गये।

"हे भगवान!" व्लादीमिर इल्यीच ने हेरान्ती से चिल्लाकर

कहा। "वैशक, जाना जरूरी है। लेंसों की जरूरत है। हमारे लिए हम आपकी मांगी हर चीज आगवा ले। मगर ये चीजें आपने जो मांगा है, वह काफी नहीं है।" कोर्सनोव ने जवाब दिया। "आपका अनुसंधान करने के लिए इसी तरह तैयारियां ही करनी हैं।" कोर्सनोव ने आपने अपनी सूची में जितनी चीजें लिखी हैं, वे सब जरूर ले बाहर जाने को भी काफी नहीं है! यह तो तब भी नहीं है उफ़, कैसी बुरी बात है!" लेंसिन ने फिर कहा। "मेरा बगीचान है कि हम आप जैसे लोगों को आपकी जरूरत चीजें हर चीज नहीं दे सकते—हर चीज, जो आपके लायक है।" कोर्सनोव ने जवाब दिया। "हम आपको सब कुछ देंगे, बस, हमें मरदान शक्ति।"

लेंसिन की तरफ़ धकटकी लगाकर, कोर्सनोव ने मरदान में अस्पष्ट-सी आवाज निकली: "ओफ़, यह चीज भी मैं कहना चाहते थे, मगर राहत से आने साथ ही पेट्रोगोव ने कहा था कि हमें पसीने में न डूबना पड़े।"

लेंसिन वैज्ञानिक के पास आगे और सहज-सुलभ स्वर में पूछने लगे:

"लेओनोद अलेक्सेयेविच, अगर हम आपकी उस सूची में सीमित सूची की ही चीजें दे पायें, तो?" कोर्सनोव ने जवाब दिया। "आपका अनुसंधान करने के दिखे कागज को हाथ में लेते हुए कहा, 'आपका अनुसंधान किस चला लेंगे?'"

"इससे ज्यादा की तो मैं आज्ञा करने की जरूरत भी नहीं करता, व्लादीमिर इल्यीच! जैसे ही उन्हें विपरीत चलेगी हम सारी तैयारी करके चल देंगे। यकीन रीति, इस आदमी को हमारी चीजों की जरूरत है भी नहीं चाहिए। आपका अनुसंधान करने के लिए हमें तैयार है।" कोर्सनोव ने जवाब दिया। "आपका अनुसंधान करने के लिए हमें तैयार है।"

"तो, आप जाने के लिए तैयार हैं?"

जी, हा।"

“और आपको किसी और चीज की जरूरत नहीं है।”

“जी, नहीं। और कुछ नहीं चाहिए।”

लेनिन हमेशा वही बातें कहता था। वह कुछ नाश्ता से नजर आने वाला किन्तु उन्होंने मेज़ पर लेनिन अपनी निगाह फंकी और उनके होठों पर मुस्कान दीख गई।

अच्छा नाश्ता ” उन्होंने स्तम्भर्ग आवाज़ में त्रितोड क साथ कहा “जरा यहाँ खिड़की के पास ना आइये लेओनीद अलशमैयाविच।

“किसलिए, व्लादीमिर इल्यीच?”

“अरे, मैं आपसे कह जो रहा हूँ, वस इसलिए।”

“व्लादीमिर इल्यीच, अगर आपको सूची मंजूर है, तो मुझे अब आपका और समय नहीं लेना चाहिए।”

“जी, नहीं,” लेनिन ने स्तम्भपूर्वक कहा। “मैं अभी आपसे पूरी तरह सहमत नहीं हूँ। जरा इस खिड़की के पास आइये, तो।”

कोशुनोव हिचकिचाते हुए उठे और लेनिन के पास चले गये।

व्लादीमिर इल्यीच ने वैज्ञानिक के पैरों की तरफ देखा और बोले:

“जो मैंने सोचा था, वही है न! मेहरबानी करके यह बताइये कि क्या आप अपनी यात्रा पर से जूते की पहनकर जाने की भाव रखेंगे? अरे यहाँ आपके गालों में निकलने निकलने ही जवाब दे देंगे।”

“ऐसे तो बुरे नहीं हैं ये,” कोशुनोव ने जवाब दिया, “काम चल जायेगा, इन्हों से और फिर इनकी मरम्मत भी तो करवायी जा सकती है।”

“हाँ, मरम्मत तो करवायी जा सकती है,” लेनिन ने निवारपूर्वक कहा। “मेरे खयाल से आपके पास और जूते नहीं हैं।”

“जी, नहीं।”

“मुझे दुख है कि इस बात से उदास हो सकते हैं, लेनिन अपनी बात कहते गये। उन्होंने कोशुनोव का अपनी कमरे पर वापस जाकर बैठने का इशारा किया। और फिर उन्होंने कोशुनोव पर एक गहरी नज़र डाली कि उसी गहरे नज़र ने नहीं मान गये हैं और कमरे में फिर इधर-उधर घूम गये।

“हमारे यहाँ अद्भुत लोग हैं,” उन्होंने कहा, “विदेशी लोगों को ही ले लीजिये। जरा एक छोटे-से रूम लेंगे जो हमारे यहाँ कीजिये—घास उगी किसी सड़क पर, जहाँ गुश्नर और अन्य धूम रहे हैं। लकड़ी का पुराना भू भूतान में गाँवों में पर गये प्रयोग रह रहा है। वह रोटी और गहली के सामूनों में गायन पर ही जी रहा है, मगर मानवयुक्त अंतरग्रहीय यात्राओं की माध्यामों को हल कर रहा है! और मुझे यकीन है कि जल से न निकलने के कारण उनका घर भी टूट जाएगा और मर जाये, जहाँ भी उनकी के पथ के राहो हैं, जो फटे जूते पहनकर हमारा गान ही नाचने की, माउवेरिया की यात्रा करने को तैयार हैं।

“लेनिन आप? आप हमारे से क्या कहा जाये?” कोशुनोव ने अपने मन में कहा। “आप ही कौन अन्ती यात्रा में हैं? एक ऐसे देश में, जहाँ आधे लोग ‘समाजवाद’ जवाब का जवाब तक नहीं जानते, आप समाजवाद का निर्माण कर रहे हैं।”

और अचानक उन्हें लगा कि वह बात लेनिन पर ही मच से बंधे हुए हैं, कि दोनों एक ही लक्ष्य की गिराई कर रहे हैं, कि वही लक्ष्य ब्रह्मांड के रहस्यों को उद्घाटित करने के गान में उन निशानों-चिह्नों की, गुह्य-जगत् का ताजमना के पुनर्निर्माण में लगे भूखे मजदूरों की, जमीन को लकड़ी के जवाब में जानने विमानों की प्रेरक शक्ति है...

जब कोशुनोव वहाँ से रवाना हुए तो वह उन दिनों का आदर उनकी आँखें चमका रही थीं। अनैवाज दिनों के बारे में, अपने

नाम के शान्त में विनाशकारी भीषण निर्माण था, यो यो रूप
जो जलते-पूजते थे, यो यो निर्माण में निर्माण और भाव यो यो
पार कर गये।

... एक दिन आयेगा, जब देश भर में कल-कारखानों की
निर्माण धूम उगलती होगी, जिनमें से कई का तो अभी तक
निर्माण भी नहीं हुआ है: ट्रैक्टर और मोटरगाड़ियां बनाने के
कारखाने, जो अभी तक एक मेहराबी छतवाले छोटे-से और सड़े
झुतर में काम में डूबे आदमी के ही सपने हैं... जब पुष्किल और
तोल्स्तोव की रचनाएं सर-सर में मिल सकेंगी, क्योंकि जानहीन और
अधजंगली इस सार्विक साक्षरता का देश बन जायेगा... और जब
कूदरती तौर पर, वैज्ञानिक अनुसंधान-दल उत्तरी ध्रुव पर पहुंचेंगे
योंगे तो मरना है कि जोई नागन की महराडिया में पड़े या पार्की न जाय-
मरना भी मरना चला जाय, और इन अनुसंधान-दलों के मरना को
मरना भी मरना चला जाय या जग में नवाक के अनुरोध को लेकर एक
महान नये राष्ट्र के नेता के समय को नष्ट नहीं करना पड़ेगा...
और इस देश में मरना ही एक नई मरना रहती होगी, जिनमें मरना
म मरना ही मरना ही एक नई ही मरना रहती यह मरना जोकर
रहना।

यकला अभी मरना पर लफ १ दिन कम था, रुड है
यपने जाने मरना का मरना, बुधला-पतला धोड़ा गाड़ी को किसी
नये मोचन के न मरना है, बंद दरवाजोंवाली दुकानें हैं, जिनके
नये नये नामपत्र पर मरना-मरना के नाम लिखे हैं। मरना
नया पत्र थोक व्यापारी २० २० कोशिक, लोहिये" आदि-
आदि। जकन यह अभी की बात है।

लाल सैनिकों का एक छोटा-सा दस्ता चल रहा है,
बर्फगाड़ी पर सड़े लोहे के पाइपों को खींचा जा रहा है—कहीं किसी
मरना की तामीर या मरम्मत की जा रही होगी, किसी झुतर की

खिड़की में से कार्ल मार्क्स का चित्र और दो शान्त मरना मरना
दिखाई देता है: "... जिनाब!" मरना मरना मरना मरना
एक स्त्री किसी इमारत से निकलती जिन २० २०

औसत कद का एक गठीला आदमी मरना मरना मरना -
क्रेमलिन—में अपने कार्यालय में मरना मरना मरना मरना
रहा था और अपने विचारों को नये मरना मरना मरना मरना
वह आनेवाली मरना और नई मरना मरना मरना मरना
देश रहा था—ऐसी वास्तविक मरना मरना मरना मरना
इस के चेहरे को पलट देंगी।

कई मजदूर और किसान व्लादीमिर इत्योच को उपहार भेजा करते थे। उन में इस समय गांधी पत्रिका के अभाव का आश्चर्य लेनिन को नहीं आया और नीला उपहारवस्त्र भेजा करने, उपहारों में आश्चर्य भी आया परन्तु समझे कि कारखानों में काम करनेवाले मजदूरों ने व्लादीमिर इत्योच का नाम ही खान का मोट भेजा जो नोबोल्दा की लकड़वाजीवाला न इन्टर गांधी पत्रिका पत्रकारों ने भेजा तो पत्रकारों के कपड़ा मिल के मजदूरों ने गरम कंबल।

जब भी ऐसे उपहार आते, लेनिन बहुत नाराज होते।

"यह क्या बात है, व्लादीमिर इत्योच, वे अपने दिल से आपका ही उपहार भेजते हैं, नारे नहीं और महत्त्वों उनसे रहते।

"ठीक है, मैं इस बात को जानता हूँ," लेनिन जवाब देते, मगर वह नहीं मंजूर है। उसी का मित्रान में है। पुराने समय में हमें आश्चर्य आता था कि गांधी पत्रिका की अपेक्षा दिया करते थे। अब बहुत आ गया है कि इस प्रथा का अंत कर दिया जाये। जी हाँ, इस प्रथा का खात्मा कर दिया जाना चाहिए!" वह जोर देकर कहते।

पत्रकार लेनिन को गोमल प्रदत्त के क्लोत्सी नगर की स्तोदोल्काया कपड़ा मिल के मजदूरों का पत्र मिला।

व्लादीमिर इत्योच ने पत्र को पढ़ा मजदूरों ने लेनिन का आश्चर्य आता ही पाचवी ब्रह्मसूत्र के अन्तर्गत वह अपनी बधाईया सर्वा भी अच्छे स्वास्थ्य की कामना की थी और आगे लिखा था :

"...हम आपको अपने आदर का एक अच्छा शोध भेज रहे हैं, लिखा था कि उपहार कपड़े का एक टुकड़ा है।

पत्र के नीचे दस्तखत थे : दोनोवन नदी, पुराने का मजदूरों ने उस पर अपने दस्तखत किये थे।

व्लादीमिर इत्योच एक उपहार और पत्र भेज कर नाराज हुए, मगर वह मजदूरों का उत्सव का उल्लास भंग नहीं करता चाहते थे।

व्लादीमिर इत्योच ने कलम उठाया और मजदूरों का बहाना लिखा :

"प्रिय साथियो,

आपकी शुभकामनाओं और उपहार का निम्न हार्दिक धन्यवाद। मैं आपको एक राज बताता हूँ और वह यह कि मुझे आगे से कभी उपहार मत भेजिये। और उन मजदूरों में यथासंभव अधिकतम मजदूरों को अवगत करवा दीजिए।

आपका

आ० उ-गोर्नोव (लेनिन)।

जब क्लोत्सी के मजदूरों को लेनिन का पत्र मिला तो वे बहुत प्रसन्न हुए। लेकिन वे समझ गये कि लेनिन को पत्रकार समझ नहीं है। उन्होंने व्लादीमिर इत्योच को जतन से आश्चर्य माना। क्लोत्सी के सभी मजदूरों ने उस पर विचार किया और उन्होंने उन आदेशों को केवल सारे नगर में ही नहीं, बल्कि पत्रों में प्रकाशित कर दिया।

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने अपनी घड़ी पर नज़र डाली, बावय को पूरा किया और किताब को बंद कर दिया।

“आज के लिए वस, मैं थक गई,” उन्होंने उच्छ्वास लेते हुए कहा।

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने अपनी घड़ी पर नज़र डाली। नियत समय पूरा हो गया है। वह अपनी आरामकुरसी से उठे और खिड़की के पास चले गये। बाहर फुहार गिर रही थी—नवंबर की टंडी वर्षा। लिंडन के पेड़ की काली, मखमली डालियों पर पानी की स्फटिक जैसी बूंदें चमक रही थीं। नाराज और परेशान गौरैया भीगी पगडंडी पर फुदक रही थीं। अचानक वे सभी एक साथ उड़ी और खाली पक्षीघर पर जाकर बैठ गईं।

पगडंडी पर कुछ लोग नज़र आये। सबसे आगे सिर पर हुड पहनने वाला दो आदमी थे। उनके पीछे छज्जदार टोपिया पहन मोटे शर्ट के साथ पहने दो आदमी थे। आदमी था कि अगला था। सभी बातें मरी आये थे, क्योंकि वे बड़ी व्यापारी के सामने खड़े यह सोच रहे थे कि भवान पर पहुंचने के लिए कौनसी पगडंडी पकड़े।

हमस मिशन लोग आये हैं। व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना नीचे चली गई। मरीया इल्यीनिच्ना उसी के पास लपकी आ रही थी।

“ग्लूखोवो के लोग व्लादीमिर इल्यीच से मिलने आये हैं,” उन्होंने बताया।

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने तब तक आगे बढ़ा कि व्लादीमिर इल्यीच का मुलाकात के लिए निकलने के लिए कर रहा था।

लेकिन वह तो जंगल पर झुके लगे थे।

“क्यों, क्यों आये हैं?”

“ग्लूखोवो के मजदूरों का प्रतिनिधिमंडल व्लादीमिर इल्यीच के लिए खत लेकर आये हैं,” उनकी बहन, मरीया इल्यीनिच्ना ने कहा। “अभी लाकर देती हूँ।”

व्लादीमिर इल्यीच जल्दी-जल्दी अपने ऊपर जूतों के बंधन लगा रहे थे।

“मेरी इनके मुलाकात को बहुत उच्छास है।”

“लेकिन डाक्टरों का कहना है...” नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने कहना शुरू किया।

लेकिन क्या डाक्टरों का कहना सही है? वह पर सोच में पड़े हैं कि लेनिन के निगमनसे अच्छी उबा गार्न आर आनोर्जी ही है। इस मुलाकात से उन्हें अवश्य खुशी होगी और बुरी से तो किसी की सेहत नहीं बिगड़ती।

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने आंखों की आंखों में मनीषा इल्यीनिच्ना से बातें की और कहा:

“अच्छी बात है, व्लादीमिर।”

लेनिन और ग्लूखोवो के मजदूरों ने आगमन में अनेक वर्षों से संपर्क बनाकर रखा था और वह उनके प्रतिनिधिमंडलों के मिलने बिन नहीं जाने देनेवाले थे। वे अब तीन पहर के थे और व्लादीमिर इल्यीच हर चेहरे को शोर से अपने हुए इनके मिलने के लिए आ रहे थे।

एक मध्यवर्ती स्त्री सबसे आगे थी। उसने अपने शाल पर साल रुमाज़ बांधा हुआ था अपने बाएं हाथ में वह एक फावड़ा

निजे हूँ थी। उसने अपना दाया हाथ लेनिन की तरफ बढ़ाते
कहा :

"मेरा नाम पेनगेवा गोनोदोवा है। मैं कताईखाने में काम
करती हूँ। मैं तुम्हारे लिये एक अच्छा काम ढूँढ रही हूँ।"

"हां, हां, मुझे गाना है," व्यादीमिर इत्योच ने
मुसकुराकर कहा।

उसके पीछेवाली घुमावदार लाइन के साथ मुसकुरा रही थी।
उसकी छोटी बाहर की तरफ निकली हुई थी, मानो उसकी मोटी
नूनहरी बेजिया उसके निर को पीछे खींच रही हो।

"मैं तुम्हारा मजदूर पर काम करती हूँ। क्लाव्डीया गुमेवा मेरा
नाम है।"

बाहरी इतने पहने मुगटिन जरीर का एक बूढ़ा कालीन को बड़ी
सावधानी के साथ धार कर रहा था। उसकी बड़ेगी चाल-डाल के
बावजूद वह भाफ था कि अपने काम में वह पकड़ा है।

"मैं इसीकी कुल्लोचन हूँ। मैं लोहार हूँ।"

व्यादीमिर इत्योच ने ऊँचे कानर की नीली कमीज पहने
नवपुष्पक की तरफ देखा।

उसने कहा : "तुम्हारे लिये मैं तुम्हारे लिये एक काम
ढूँढ रहा हूँ।"

उसने कहा : "तुम्हारे लिये मैं तुम्हारे लिये एक काम
ढूँढ रहा हूँ।"

उसने कहा : "तुम्हारे लिये मैं तुम्हारे लिये एक काम
ढूँढ रहा हूँ।"

उसने कहा : "तुम्हारे लिये मैं तुम्हारे लिये एक काम
ढूँढ रहा हूँ।"

उसने कहा : "तुम्हारे लिये मैं तुम्हारे लिये एक काम
ढूँढ रहा हूँ।"

इस भी वह नहीं लग रहा था कि वह एक अच्छा काम ढूँढ रहा
है। उसने पुछना चाहते थे, किन्तु वे चुपचाप रह गये।

"हमने एक प्रस्ताव स्वीकार किया है। हमने कहा है कि
शरह के बारह हजार मजदूरों ने काम किया है। हमने कहा है कि
पेनगेवा ने अपनी बात जारी रखी। हमने कहा है कि
तुम अपनी सेहत का खयाल रखोगे, क्योंकि तुम बहुत बड़े
जबरन है।"

"मैं कोजिग कहूँगा," व्यादीमिर इत्योच ने कहा।
मरोया इत्योचिना और नदिना इत्योचिना इत्योच ने कहा
थी और उन्होंने देखा कि एक मनोहर मुसकुरा उन दोनों के
मुख पर है।

"हम तुम्हारे लिए मजदूरों का एक बड़ा काम ढूँढ रहे
हैं। पेनगेवा ने कहा और लेनिन को फाइल दे दी।

व्यादीमिर इत्योच ने उसे खोला और उसमें एक बड़ा
कागज देखा। खत बड़े-बड़े बाने और बड़े-बड़े बाने के
साथ था। इन बानों पर उनका ध्यान खींचा गया था।

... इस वक़्त जब जर्मन कानि केन का काम कर रहे थे
उतनी ही जबरन है, बिना किसी काम के। उन्होंने कहा कि
और हर्ष के दिनों में..."

"शुक्रिया, बहुत-बहुत शुक्रिया इन लोगों के लिए। मैं तुम्हारे
कहा।

उसने कहा : "तुम्हारे लिये मैं तुम्हारे लिये एक काम
ढूँढ रहा हूँ।"

व्यादीमिर इत्योच ने कहा : "तुम्हारे लिये मैं तुम्हारे लिये एक काम
ढूँढ रहा हूँ।"

उनी चुन लेगी। फूल एकदम निर्मल सफेद हैं और तुम्हारी मेहनत के लिए अच्छे हैं। देखो, जरा छिड़की के बाहर...”

व्लादीमिर इल्यीच छिड़की पर गये। फूलों की बगारी के बराबर बेना... उन्होंने पास का कमरा में घुसने। उनकी... कोठिया में बिजली हुई थी और हर पाँच पर एक परतदार फर्श था हुआ था। हवा में झूमते इन सन्धे पौधों को देखकर उन्होंने कल्पना की कि पुष्पित होने पर वे कितने सुंदर दीखेंगे...

कुरुतेन्सोव ने लेनिन के चेहरे की तरफ देखा, जो भावावेश के कारण या अचानक कमजोरी महसूस होने के कारण जर्द पड़ गया था, और सोचने लगा: “हमारे प्यारे इन्सान! हमारे लिए तुम... में धार निर्वाणन में मिटना मरना है! तुम्हें सम्भवतो में विदेश में भेजा जाए हमारे लिए काम दिया, न जहर वाली गोमिहों से घायल हुआ और काम की ज्यादाती और हम सब के कारण तुम बीमार पड़ गया।”

“निर्मल सफेद फूल,” मानो अपने से ही बोलते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने कहा। “शुशिया! बहुत जानदार उपहार है यह।”

लोहार अंतःप्रेरणा से उनको पास चला गया और उन्हें हलके से अपने आलिंगन में ले लिया।

“मैं मजदूर-लोहार-हूँ, व्लादीमिर इल्यीच, हम हर चीज को बेमैली गढ़ देंगे जैसा तुमने सोचा है।”

व्लादीमिर इल्यीच ने अपनी आँखें अन्धकार के दर्द-मिद लपट की ओर से हटाई और इसी तरह खड़े रहे। पलायेवा ने अपने कमरे में दीवार में अपनी आँख में टपकते आँसू को पोंछ लिया।

नीचे के कमरे में जो फूलों और गमले में लगे ताड़ के पौधों से सजा हुआ था, खाने की मेज लगा दी गई थी, सोमवार में पानी उबल रहा था।

मरीया इल्यीनिच्ना ने प्रतिनिधियों में से निकल कर बाहर निकलने का इरादा किया। मगर हाँ भी माना जाता नहीं था। अचानक विचार आए, लेनिन के साथ ही वे।

साथों, साथियों, साथों... मरीया इल्यीनिच्ना... छाया किया। खुद उनका गला भी रुंध गया था... वे प्रतिनिधियों के साथ वे खुद व्लादीमिर इल्यीच के हाथों की चोरी...।

मरीया इल्यीनिच्ना की प्लेट के बराबर अनायास ही गती लगी हुई थी। सबसे ऊपर ‘प्राव्दा’ का। मोटे अक्षरों में एक संदेश आँखों को पकड़ रहे थे: “जर्मन पजीवाद... का भाग...।” “जर्मनी में भूख”, “बुल्गारिया में जेल...।” “मजदूरों की हड़ताल”।

विषय पजीवाद... ही...। मरीया इल्यीनिच्ना...। कुरुतेन्सोव ने अनायास ही...। मगर ध्वजान ही...। बुल्गारियाई और पोलिश मजदूर—सब सत्ता प्राप्त कर लें।

“लेनिन की इस बात का विश्वास है, मरीया इल्यीनिच्ना ने कहा।

“आपको काम करना होगा,” पलायेवा...। “आपको काम करना होगा,” पलायेवा...।

मरीया इल्यीनिच्ना ने विरोध करते हुए कहा। “जी, नहीं। ऐसी बरसात में मैं आतना मत न करूँ। जीव दूँगी। आप सब यहाँ से सकते हैं। फिर आप मुझे अपने साथ लाये पौधों को भी रोप सकते हैं।

प्रतिनिधियों ने आँखों-आँखों ही...। वे खुश थे, क्योंकि कोई भी लेनिन के पास न...। चाहता था।

“आप लोगों का किसी तरह ही मदद की जा सकती है?”

मरीया : मज़दूरों को कोई परमाणी नहीं है। मरीया इत्थीनिच्चा ने पूछा।

मनुखोवो के मज़दूरों को उस वक़्त कितनी ही चीज़ों की जरूरत थी! युद्ध-जनित विनाश की जकड़ अभी भी काफ़ी मज़बूत थी। लेकिन उन्होंने इसके बारे में एक शब्द भी नहीं कहा।

“हमारा तो बस एक ही अनुरोध है और एक ही सपना है : व्लादीमिर इत्थीच वैसे ही स्वस्थ हो जायें, जैसे वह थे।”

प्रतिनिधि सारी रात सोये नहीं। वह चुपके-चुपके बातचीत करते और घर की खामोशी को सुनते हुए बैठे रहे। जब सुबह मरीया इत्थीनिच्चा आई, तो उन्होंने छूटने ही यह मानम किया कि लेनिन ने रात कैसे गुज़ारी।

“वह रात बहुत अच्छी तरह सोये,” मरीया इत्थीनिच्चा ने जवाब दिया। “वह सुबह बहुत ख़श उठे और उन्होंने आपके पत्र को फिर पढ़ा। वह उससे बहुत प्रभावित हुए हैं।”

दिन धूपदार और साफ़ था। सड़ों का पानी जमा हुआ था। रात में वर्षा गिरने लगी थी और अब पाँच घंटे लग रहे थे, मानो पृष्पित हो गए हों। रात में ठंडा पड़ने पर फ़शनी मरीया हिमकणों को जाँचकर गिनती करती थी और वे राखी जमीन पर पृष्ठों की पड़कियाँ जैसे लग रहे थे।

हम बसंत में, जब वसन्ती फिर जीवन को अगड़ाई लेती है और जंगल और मैदानों में कापल फूटती है तो इस मकान में व्लादीमिर इत्थीच ने अपने अन्तिम वर्ष व्यतीत किये थे, यहाँ पर वेनी के पक्षों पर बहाना आ जाते हैं। वे साफ़ गर्व के कमीज़ पहने गले पर गमकरी की तरह सीधे खड़े हुए अपनी शाखाओं को गोर्की प्रतिनिधि में दुनिया के हर हिस्से की तरफ़ फैलाते हैं।

स० अलेक्सेयेव

बुलफ़िंचें

गोर्की में पार्क में दहलते समय व्लादीमिर इत्थीच अक्सर एक जगह पर ठहर जाया करते थे वहाँ पर बड़े वृक्ष के पास फ़र का एक ऊँचा पेड़ था जिस पर चने नरफ़ झूलिया थीं।

व्लादीमिर इत्थीच वहाँ जाकर खड़े हो जाते और फिर ऊँचा उठा लेते। देर-देर तक वह वही खड़े रहने और ऊँचा उठाने करते। भला वहाँ ऐसी क्या चीज़ थी?

बुलफ़िंचें।

जाड़े का मौसम था आमतौर पर सभी पक्षी वर्ष में उड़ गये थे। पेड़ों पर भी बर्फ़ थी। यदि गारे दक्षिण उड़ गये थे। पार्क में बस, अकेली बुलफ़िंचें ही बाकी रह गई थीं। वे बर्फ़ के जाड़े से खुश थीं।

व्लादीमिर इत्थीच को इन मवेशी और मुँदर चिड़ियों का देखना बहुत पसंद था। लो, यह वही एक गाने वाला पक्षी बुलफ़िंच और एक और गुलाबी छातीवाली चिड़िया भी पसंद था। वेनी। और अब तीसरी आ पहुँची—नगर छाती इतनी बल है, शंडे की तरह। इसकी सूरत में ही पता चल जाता है कि यह बड़ा बड़ा और शरास्ती चिड़िया है—उसके सिर पर सारा पर खड़े हुए थे। सारी बुलफ़िंचों में यह बुलफ़िंच पनी तिराकी की एक लेनिन वसे और चिड़ियों से ज्यादा पसंद करने लगे थे।

लेनिन भी व्लादीमिर इत्थीच की आदतों से बड़े से बड़े जानती थी कि व्लादीमिर इत्थीच उनका लिए गोर्की को बहुत आयेगे या फिर मन का बीज, जो उनका सबसे मनपसंद खाना है।

भी फटल : माँ वरफिच भूज १ पा. पा. पा. पा. जानी अर
नित्त का इंतजार करने लगती।

अस कार पा. वरफिच वही नवन लीनो : सगर म यरा
रतन ही आती ही म

लेनिन को नाल छातीवाली बुलफिच को अपने पर इतराने
उठना पड़ा उठना लगता था। वह अपना गिर पीछे ही तरफ फेंकती
हुई मानों कहती थी : "क्यों, हूँ न मैं संगार में सबसे सुंदर पक्षी?"

"हां, सब है," लेनिन उत्तर देते।

बुलफिच डाल से डाल पर, भूज से फर पर और फर से
झाड़ियों पर फुदकती रहती। वह लेनिन के गिर के बराबर से उड़ती
निकल जाती, हवा में गोता खा बर्फ पर जा उतरती और फिर
जागर किसी जंजी डाल पर बैठ जाती और वहां से लेनिन की
तरफ निरखी नजर से देखती, मानों वह रही हो : "बोलो, वंसी
हूँ मैं! हूँ न मैं सबसे निराली? सब?"

एक बार पार्क में टहलते समय व्लादीमिर इत्योच का ध्यान
उस बाल से तरफ गया कि वह निराली बुलफिच नहीं नजर नहीं
आ रही है। लेनिन दूसरे रास्ते पर टहलने के लिए निकले
और फिर नीचे की आ गम, लेनिन वरफिच अब भी नहीं
नजर आई।

लेनिन परेशान होने लगे :

"क्या हो गया उसे?"

उस प. वा कि बुलफिच फर से पर गडे गो। उसे यगोर्का
ईकलव माम नजर न काम लिया था और धर ल जागर पिछे से
पा. दिया था। वह म बुलफिच, लेनिन का गारा उ नाम जाना रहा।

लेनिन वरफिच को भी नहीं आ न पा सके, पर येगोर्का
अवश उतर मामन प. ओकरा कहा, पार्क में फिर आया था
आर उरन फिर प. देगाय थे।

व्लादीमिर इत्योच की येगोर्का पर निगाह पड़ी, जो अपने
पिता का पोस्तीन का लंबा-चोड़ा टोप और दाढ़ न बड़े ब. नमद
के झूले पहने हुए था।

"तने यरा एक जान छानिवाली वरफिच नहीं कही?"

"कही न," येगोर्का ने मर म निगरनता वा नकिन
उमने सोचा कि अगर लेनिन पूछ बैठे : "क्या प. प. न?"

"जी नहीं, मैंने तो नहीं देखा उसे नमोर्का न गया।

"कहीं वह बर्फ में तो नहीं जम गई?" लेनिन ने पर न
हुई।

"जी नहीं, वह तो गरमागरम धर म नजर में देरी न,"
येगोर्का कहना चाह रहा था, लेनिन तभी उमन अपने ही रास
लिया।

ओकरे की आंखें नीचे झुका गईं। उमने उर पि. म पि
लेनिन बहुत बिकन हो गया।

"जम ही गई होगी," लेनिन ने अकसोम म म म म।

वा हो सकचा है कि उसे किसी का ग. गो।

"नहीं," येगोर्का ने अपना निर उठाया। मरी वा मरी
नहीं है। वह जिंदा है। वह लौट आयेगी।"

"लौट आयेगी?"

"लौट आयेगी, लौट आयेगी।" येगोर्का बिकन वा।

अगले दिन व्लादीमिर इत्योच फिर ल. पर पड़े योर्का
का कहना सही था। नाल छातीवाली बुलफिच पर नजर न
बैठी हुई थी। और पास ही येगोर्का नजर गया था।

व्लादीमिर इत्योच ने वरफिच की नजर उठा फिर येगोर्का
को तरफ और मुसकरा दिये।

"नमस्ते!" उन्होंने येगोर्का ने नहा नमस्ते। उन्हें न
बुलफिच से कहा। "कहां चली गई थी न?"

युलफिच ने अपनी चौच खोली और येगोर्का की तरफ तिरछी नजर डाली।

येगोर्का की फलजा मुह को आ गया। उसने युलफिच की तरफ देखा। कहीं लेनिन समझ गये, तो?

युलफिच एक बार चटकी: सनझी, येगोर्का इसना बुरा लड़का नहीं, तो भैया, उसका भेद खोलने का क्या फायदा?।

३० बोरोन्कोवा

लेनिन को बच्चे प्यारे थे

अलेक्जान्द्रा निकोलायेवना कोयोसोवा गोर्की के पास बस नामक गाँव में अध्यापिका थीं। यह १९१७ की बात है—वर्ष की चिड़चिड़ा समय था वह।

बसंत में एक बार नाइज्दा कोन्स्तान्तीनोवना बुझकाया और लेनिन की बहुत, मरीया इत्यीनिच्ता उनके पास आइ।

“साथी, बात यह है, मरीया इत्यीनिच्ता ने कहना शुरू किया। लेकिन बड़ा बड़ा बता दे कि उन दिनों ‘साथी’ लोगों के लिए एक विलकुल ही नया संबोधन था। उसका मतलब था कि जिस ‘साथी’ कहा जा रहा है, उस पर पूर्ण-पूर्ण विश्वास है। ना मरीया इत्यीनिच्ता ने कहा साथी, बात यह है कि हम अपने राज्य काम के बच्चों के लिए एक शिक्षणाला खोलना चाहते हैं। व्लादीमिर इत्यीच कहते हैं कि बच्चों को अच्छी नज़र मिलनी चाहिए—वे बुरे नज़र आते हैं और बुरी तरह रहते हैं। क्या आप वहाँ शिक्षिका का काम करने के लिए चल सकती हैं?”

अलूगी कैसे नहीं, अलेक्जान्द्रा निकोलायेवना ने माचा, अगर व्लादीमिर इत्यीच ने ही इस शिक्षणाला का खर्चन का ज़रफा किया है?”

जी हाँ अलूगी “उन्होंने जोर से कहा।

गोर्की में बड़े भवान के पास ही एक छोटा भवान था। उनमें में गरमियों में शिक्षणाला खोल दी गई। लेकिन बच्चा की उस में इतना फर्क था दो साल से लेकर चौदह साल तक—कि शिक्षणाला को बाल-सदन बना दिया गया

बाल-मदन

बाल-सदन के उद्घाटन में मरीया इल्यूमिन्सना भी आईं। पूरा समागह था।

धोखा था। कर्म सामान बढ़ाया गया। मैंने उन्होंने अपना धनाई—आरपार टांगों पर लकड़ी के तख्ते ठोक दिये गये। पलंग भी इसी तरह बनाये गये। कुछ कुप्पा भाग्य ने भी की—कर्मिया भी फाँकों में निगल गये या पट्टे में। उसी तरह लकड़ों की हामी में आग बनवना व निगल भी बना करवा मिल गया। तदन्ती तौर पर कण्डों की सिनाई भी अपने-आप ही करनी पड़ी। इसमें कितना मजा आया, यह बतलाना मुश्किल है।

धीरे-धीरे बाल-सदन की जिंदगी का अपना ढर्रा बन गया। बड़े बच्चे स्कूल जाते। शाम को वे अपनी पढ़ाई करते। कापियों की तब बहुत ही कमी थी—कागज का टुकड़ा-टुकड़ा कीमती था, न स्याही ही थी। बच्चे चाक से स्लेटों पर लिखा करते और कच्चे जंगली अखरोटों से स्याही बनाते थे,

लेमिन अक्सर बच्चों के पास आते रहते थे।

“कहो, पढ़ाई-लिखाई कैसी चल रही है?” वह बच्चों के साथ बैठ जाते और उनकी कापियों को देखते। वह हमेशा कहा करते, “पढ़ो, पढ़ो और पढ़ो! ज्ञान के बिना आदमी अंधा है।”

काशिका का महत्त्व

गर्भमया में बड़े लम्बे चलने पर उसे थका लेते और मोरोङ्की नाम का खून सोलते लगते। खून का मैदान भी वे अपने आप ही बगाने मोरोङ्की व अपने मरान्नी समय भरती पड़ते थे और पड़्या गर्दा जानबान फुर की कस्तारों से घिरे रास्ते पर टहलने जाते समय

लेनिन अकसर उधर से गुज़रा करते, उनके चेहरे खिलते तोते तो वह देखने के लिए खड़े हो जाते। अकसर वह उधर से जाते ही अचानक रुक जाते। वह हिस्सा लेने कहा, वा केन म यमी मन्मा प्रा जाती कि क्या कहा जाये! यह होम हुआ हो अन्त में अन्त लगा देती।

शिक्षिकाएं छोटे बच्चों के लिए निम्नानुसार अपनी-अपनी सी प्रलेखान्द्रा निकोलायेवना अपना अधिष्ठाता बनकर उन्हें पढ़ना और गाथा बिताना करती थीं। वह उनके लिए चित्रों की तैयारी करके देना करती थीं।

लेंनिन उनके पास आते ही रहते थे। पर विरोध भी स्थापना करते थे, लेकिन सिर्फ कागज के। कागज ही पर उनके मस्तिष्क ने ऐसी कला से मोड़ते कि कोई बैसा नहीं कर सकता था।

एक बार उन्होंने कागज का मेढ़क बनाया। उसका नाम निग
या और चार पैर। मेढ़क को दवा दो, तो वह मर जायगा। बच्चा
ने उसे देखा और बहुत खुश हुए। वह उठकर जाकर मेढ़क को देखा
और किलका/रियाँ मारते। उनकी शिक्षिका उनसे पूछी कि तुम
बहुत खुश हुईं और लेनिन को भी बहुत प्यार है।

वर्षों की गैरलियाँ

उस समय गोवर्गों के भक्तान के गिर्द कोई बड़ा नदी थी।
 बागी तरफ पने जंगल थे, जिनमें बड़ा भरो था।
 ऊँचे पेड़ थे और उनके नीचे रमणीय तो था।
 बड़े जंगल में बेरियाँ और खुबियाँ बने रात भर।

प्रेम ही मूल अनिमित्त विन ही मूल या ही है +

जंगल में घूम रहे थे, एक-दूसरे को घकेल रहे थे, तैल नें वे, अनात्मक मामलों में पड़ कर पीछे से एक बर्फ की गोली तथा म डाली गई थी। घाव उभर बीच धनात में गिर पड़े। सभी मोचने लगे किमत फल है इसे? घान अब एक र बार एक गोलीया की प्रोफार शुरू हो गई। वहाँ था कि लेनिन अपना वाला ओ-धनकोर और समूर की टोपी पहने एक पेड़ के पीछे छिपे छड़े है और सभी पर बर्फ की गोलियां बरसा रहे हैं। वच्चे भी खेल में शामिल हो गये और उन पर गोलियां फेंकने लगे। उनकी शिक्षिका ने उन्हें डाटा:

"यह क्या कर रहे हो, बच्चों? कोई ऐसा करता है? और वह भी लेनिन पर!"

लेकिन कौन सुनता है! बमबारी शुरू हो गई। लेनिन फेंक रहे हैं और बच्चे फेंक रहे हैं। लेनिन गोली फेंकते हैं, पेड़ की आड़ ले लेते हैं और छड़े होकर हमने लगते हैं। उन्हें कोई नहीं मार पाता।

देर तक गोलियां चलती रहीं। उन्हें भूकिल से दो-तीन गोलियां भी लग गयीं। और गोली लगने पर वह रुक पड़े और चिन्ताग्रस्त रहते:

"जायाग! मेरी निगाह अच्छी है—तू अच्छा निजानेवाज बनेगा। देश का अच्छा सिपाही बनेगा!"

जंगल में भेंट

राज्य प्राम में जानबूझ कर निगा बर्फ नारा नहीं था। बाल मजल में बड़े रचना न इनमें बहायना देने का फेंकना किया। जंगल में जाकर उन्होंने लोहा लोहा पहनिया बटोरी और उनके दर लगा दिया। फलझड़ काफ़ी बीत चुका था और बारिश हो रही थी।

लेनिन कहीं से बार में बैठकर नाकी गोपम जा रहा था। जंगली लीकदार रास्ते पर बार बड़ी मज्जिन में जा रही थी। घान फिर वह रुक ही गई—एक पत्रिका बार में फस गया था।

लेनिन गाड़ी से उतरे। उन्हें बच्चों की आवाज सुनाई दी और वह उन्हीं की तरफ चल दिये। जब बच्चों ने देखा कि आनेवाले लेनिन है और उनकी कार फंस गई है, तो वे मदद देने का निग लपके। उन्होंने डालियों को तोड़ा, उन्हें पहियों के नीचे लगाया घान गाड़ी लीक में से निकल आई।

लेनिन ने देखा कि बच्चे भीगे हुए हैं और उन्हें ठंड लग रही है। वह भुसकराये और बोले:

"अच्छा, बोलो, सवारी कौन करना चाहता है?"

सवारी भली कौन नहीं करना चाहता था? सभी जानते थे। लेनिन ने चेहरे को गंभीर बना लिया और बच्चों को आग्रह किया:

"बच्चों, पैदा गाड़ी में।"

बच्चे बार में लद गये। कार भर गई और लेनिन ने पैदल की जगह नहीं रही। बच्चे संकोच में पड़ गये और कार में उतरने लग।

अनादीमिर इल्थीच उनकी बात समझ गये।

"बैठे रहो, बैठे रहो!" उन्होंने कहा। मैं नहीं पहचान कि तुम बीमार पड़ जाओ। मैं सारे दिन दफ्तर में बैठा रहा हूँ मैं जरा पैदल चलकर टांगें सीधी करना चाहता हूँ।

गाड़ी चलने लगी।

"बाकी बच्चे बच्चों को भी आकर ले जाता है।" लेनिन ने ड्राइवर से चिल्लाकर कहा और खुद पैदल चल पड़े।

जो बच्चे वहाँ रह गये थे, वे दूर तक उनकी आवाज सुनते रहे। जब उन्होंने पीछे की तरफ मुड़कर देखा तो बच्चों ने उनकी

तरफ अपने हाथ हिलाये। जब तक वह नज़र आते रहे, बाँचा न अपनी आँखें उन पर जमाये रखीं।

एक मेहमान और

बाल-शदन में इसी तरह दिन गुजरते रहे—एक साल, दो साल, तीन साल... लेनिन अक्सर वहाँ आते रहते थे, बच्चों से बातें करते थे, उनके साथ अक्षरंज खेलते थे। पर इस बात का पूरा ध्यान रखते कि मातृ ही खाये।

लेनिन को बच्चों का गीत सुनना बहुत पसंद था। उनका एक प्रिय "काल-कोटरो की पीड़ा से उत्पीड़ित!" गीत था। उन्हें "ओल्गा धरे जंगल की सैर" भी बहुत पसंद था। खास तौर पर तब, जब छोटे बच्चे इस गीत को गाते थे। वह मुसकराते हुए बैठे उनके गीत सुना करते थे।

एक बच्चा शदन से चला जाता, तो दूसरा आ जाता। नये बच्चे के लिए कहा जाता "हमारे यहाँ एक मेहमान आने आया है।"

गोर्की के बाल-शदन की क़्याति दूर-दूर तक फैल गई थी। ब्रे-धरदार बच्चे सभी जगह से चिंच-झिंचकर वहाँ आते रहते थे।

लेनिन का परमा नदी के किनारे एक बच्चा घर बना बना प्रिय था। बाल-शदन में एक मुलाक़ात दिन बह बहा रहे प्रसन्नता वह रहा है कि जब एक एक बार बाल-शदन फटे। कपड़े पहने एक लड़का शदन पान आ खड़ा हुआ।

यहाँ लेनिन कहां रहते हैं?" उसने पूछा।

"क्यों, तुझे क्या करना है?" लेनिन ने पूछा।

"मेरा उनसे मिलना जरूरी है," लड़के ने जवाब दिया,

मेरा दुनिया में कोई नहीं है—मा मर गई और पिता मार गया। और लोगों ने मुझे कहा कि लेनिन के पास चला जा—उनके बाल-शदन में।"

लेनिन उठ खड़े हुए।

"ठीक है, चलो। मैं तुम्हें वहीं पहचान देना।" लेनिन लड़के को लेकर नीचे पाकघाता में पड़ने

"लोजिये, मैं आपके यहाँ एक मेहमान आने आया।"

"मेहमान लाये है? वह तो बड़ी ख़िया बात है, वावरचिन ने कहा।

"कहिये क्या हाल है?" लेनिन ने पूछा। "तुम्हारे पिता की कमी तो नहीं है, न?"

"सामान-बामान तो काफी है, पर सामान आने का इन्जाम अच्छा नहीं है। नदी पर पुल नहीं है और घोंग को गाने की मे होकर लानी पड़ती है।"

"रोटी तो काम नहीं पड़ती?"

"नहीं, मैदा तो काफी है, पर रोटी का बदला बच्चा 21 जाता है।"

"तो फिर आप जितनी जरूरत है, उससे कुछ खाश क्यों नहीं पका लेती?"

वावरचिन लेनिन से कुछ देर और बातें करती रही और शिक्षिका को बुलाने के लिए चली गई।

"अलेक्सान्द्रा निकोलायेव्ना, अभी-अभी तो मैं मन्दिर पर नये लड़के को लेकर आया है।"

अलेक्सान्द्रा निकोलायेव्ना उसके साथ साथ पाकघाता में चली आई। बेशक, वह अक्षरंज से हाथ उठाकर बोली

"अरी मलीमानस, यह तो हमारे अन्धोमिर ज्योच है!"

वावरचिन आचोवा इतनी खिन्न हुई कि उसको नमस्ते में नहीं आया कि क्या करे। उसे बाल-शदन में काम करने हुए बहुत दिन नहीं हुए थे और उसने लेनिन को पहने कमी नहीं देगा था।

नड़के को बैठाकर खाना खिलाया गया। लेनिन ने भी चुपचाप खाकर देखा। बाद में वह बोले

"जब यह खाना खा चुके, तो इस नहलाइये-धुलाइये और पहनने के लिए नये कपड़े डीजिये। यह वही रहेगा।"

और वह "मेहमान" भी बाल-सदन में रहने लगा।

माथिरी मुलाकात

उसी तरह १९२३ का साल आ गया। लेनिन अक्सर बीमार रहते थे। वह बीमार होने के बाद अक्सर समय बचाने में उन गोरों की स्वच्छ हवा में ही बिताने का सुझाव दिया।

लेकिन बीमारी के कारण लेनिन का बाल-सदन में आना कम हो गया था। उनके बीमार रहने के बाद अलेक्जान्द्रा निकोलायेव्ना की उनसे कम एक ही धार मुलाकात हुई।

एक दिन वह बच्चों के एक दल को लेकर जंगल में घूमने के लिए गए। वे यह बात अचानक उन्होंने जार्जिनिया में देखा। जार्जिनिया साम्राज्यवादी सरकार को यह पसंद नहीं आया कि वे वहाँ पर घूमा रहें, क्योंकि अब वह चुप नहीं रहने थे।

बच्चे उन्हें देखकर हमेशा की तरह चिल्लाने लगे:

"दादा लेनिन! दादा लेनिन!" और वे उनके पान भागकर जाने को ही थे।

उसी अलेक्जान्द्रा निकोलायेव्ना ने देखा कि जार्जिनिया साम्राज्यवादी उनकी तरह हारा हुआ नहीं था। मानो वह नहीं हों कि जाओ, जितनी जल्दी हो सके वहाँ से!

अलेक्जान्द्रा निकोलायेव्ना ने बच्चों को जल्दी-जल्दी उठा लिया और उन्हें वहाँ से लेकर चली गईं।

आम को उन्हें "बड़े भक्त" में बुलाया गया - लेनिन जिस

मकान में रहते थे। इसे उन बच्चों ने ही नाम दे रखा था। वह उनके मरीचा उल्लोचन के लिए

माथी गोलोमोव, उन्होंने कहा कि वह बच्चों से भक्त के रूप में उनके पास घूमने का भी अधिकार है। लेनिन ने बच्चों के साथ न खेल सकने में बहुत दुःख देखा है और वह किसी भी तरह उदास नहीं रहने देता है। उनके बच्चे उन बच्चे हैं।

विवाद

बच्चों की इससे बाद लेनिन ने उन बच्चों से बात की। उनके अवसर पर उन्होंने उन बच्चों को जंगल में उठाया वहाँ से वे उपहारों से लदे बड़े भक्त और उनके साथ उनके साथे।

लेकिन कुछ ही समय बाद "बड़े भक्त" से उन बच्चों को प्राप्त हुआ

"लेनिन नहीं रहे।"

बाल-सदन में एकदम सन्नाटा छा गया। वे बच्चे उन बच्चों से कटी। कोई भी तक नहीं पाया।

नवह बाल-सदन के नवह बच्चों ने लेनिन को उनके अपने भक्तों के अपित करने के लिए गये। वे फर की हड्डियाँ लीं और उन्हें हार बनाकर ले गये। लेनिन अरबों पर हार का एक भाग देकर वे बोर्जोवाय जार्जिनिया और अन्य भक्तों को भक्त

* जार्जिनिया बोर्जोवाय, १९२३-१९२४ - जार्जिनिया बोर्जोवाय का एक भक्त
जार्जिनिया बोर्जोवाय, १९२३-१९२४ - जार्जिनिया बोर्जोवाय का एक भक्त
मिखाइल जार्जिनिया, १९२३-१९२४ - जार्जिनिया बोर्जोवाय का एक भक्त
जार्जिनिया बोर्जोवाय, १९२३-१९२४ - जार्जिनिया बोर्जोवाय का एक भक्त
जार्जिनिया बोर्जोवाय, १९२३-१९२४ - जार्जिनिया बोर्जोवाय का एक भक्त

बोगों में भरा हुआ था, क्योंकि रात भर लोग वहाँ आते रहे थे। लेकिन भीड़ के बावजूद वहाँ ऐसा मन्नाटा था, मानो कोई न हो।

सुबह के समय ताबूत का स्टेज पर लाया गया। सब आगोशों में उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। सभी आगोशी में भी नहीं रहे थे।

स्टेज पर चेहरे भीड़ थी। बच्चे हर पेड़ की डालों पर बैठे शवयात्रा को देख रहे थे। सड़क ठंड थी, मगर सभी नंगे सिर थे।

स्टेज पर ड्रेन इंतजार में खड़ी थी। ताबूत को उसमें रख दिया गया और ड्रेन खाना हो गई।

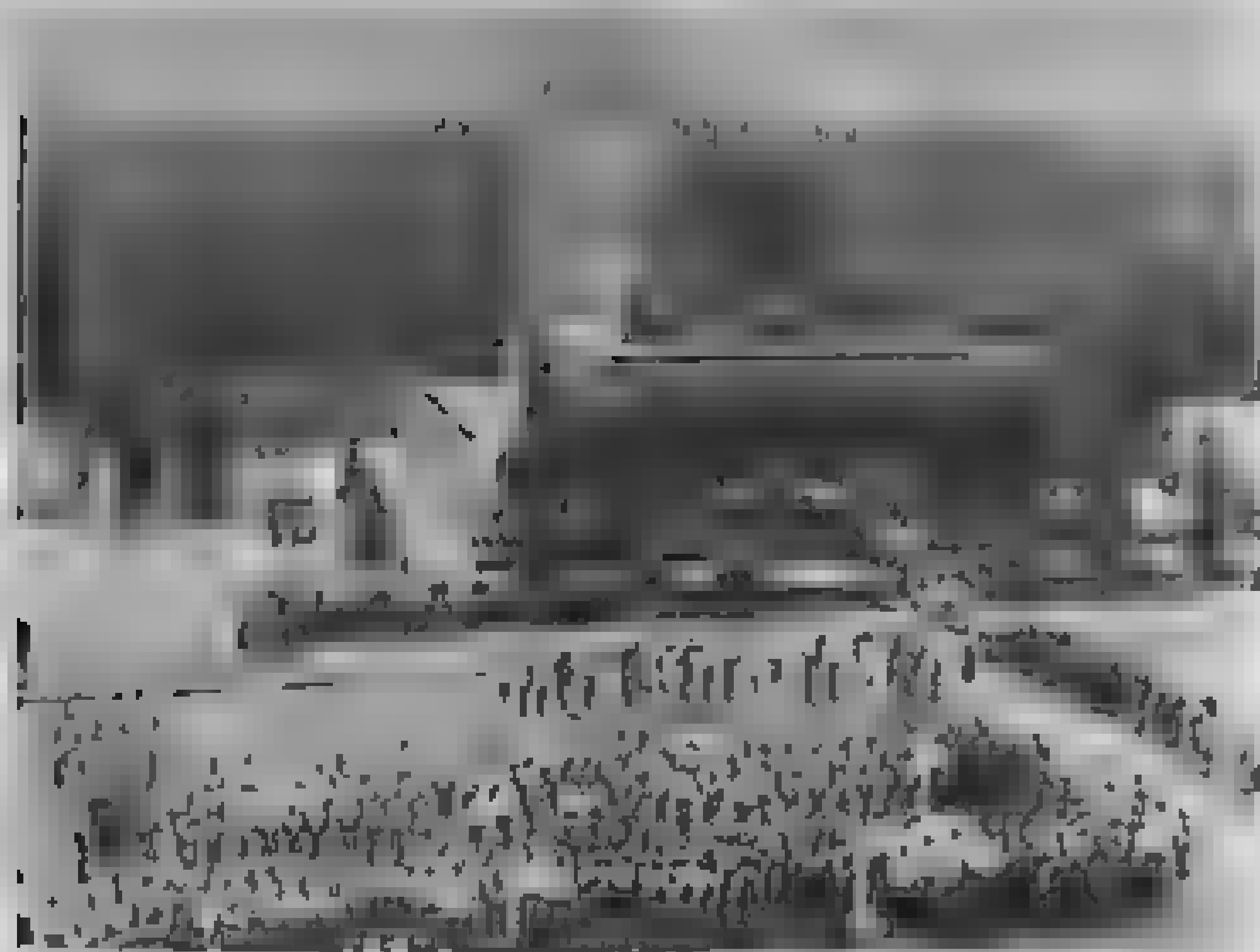
और उस दिन ऐसा लग रहा था, जैसे बाल-सदन में मुरज ने चमकना बंद कर दिया हो।

वैमिन मच्छानन, मास्को में।



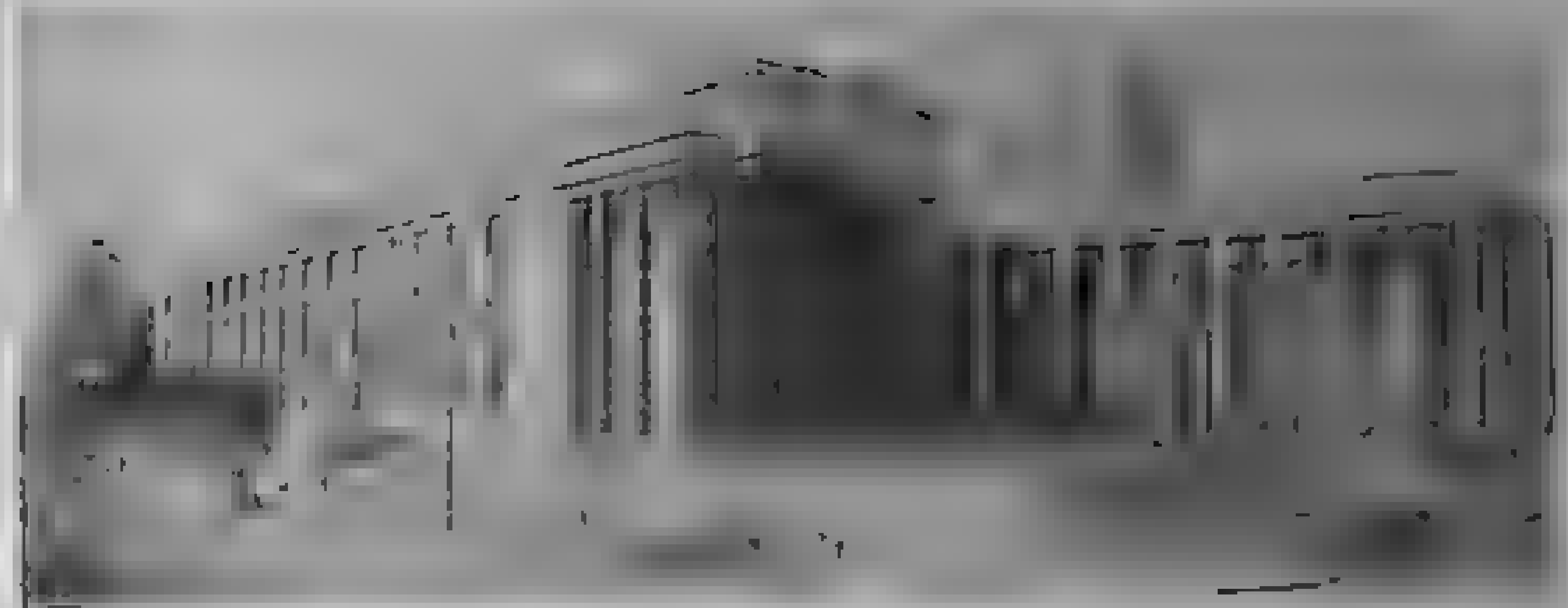
लेनिन की समाधि। काम पार्कनिंग
समाधि पर लेनिन का पार्कनिंग
करने की शक्यता है।

काम का प्रदर्शन लेनिनवाद की एक
शक्ति। गान्धी - जवाहर - पार्कनिंग
प्रदर्शन



लेनिन का नाम धारण करनेवाली एक
शक्ति - लेनिन पुस्तकालय, मैक्सिमोव।

श्री लेनिन का ही नाम धारण
करनेवाली कोला पार्कनिंग।



दार्जिलिंग विद्यापीठ
 पुस्तकालय
 : दार्जिलिंग

मॉन्ट्रो में लेनिन का कमरा।



मॉन्ट्रो में लेनिन का कमरा

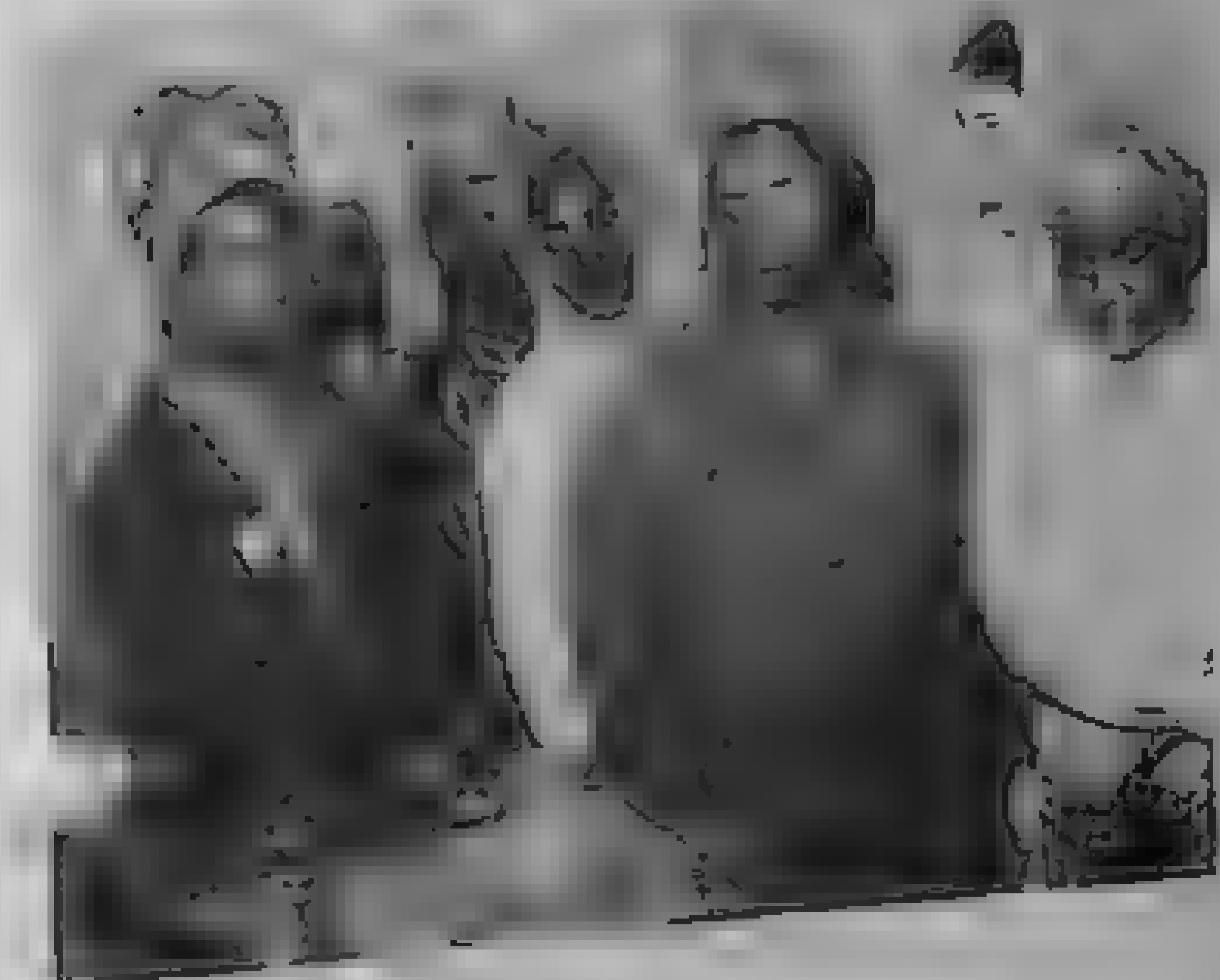
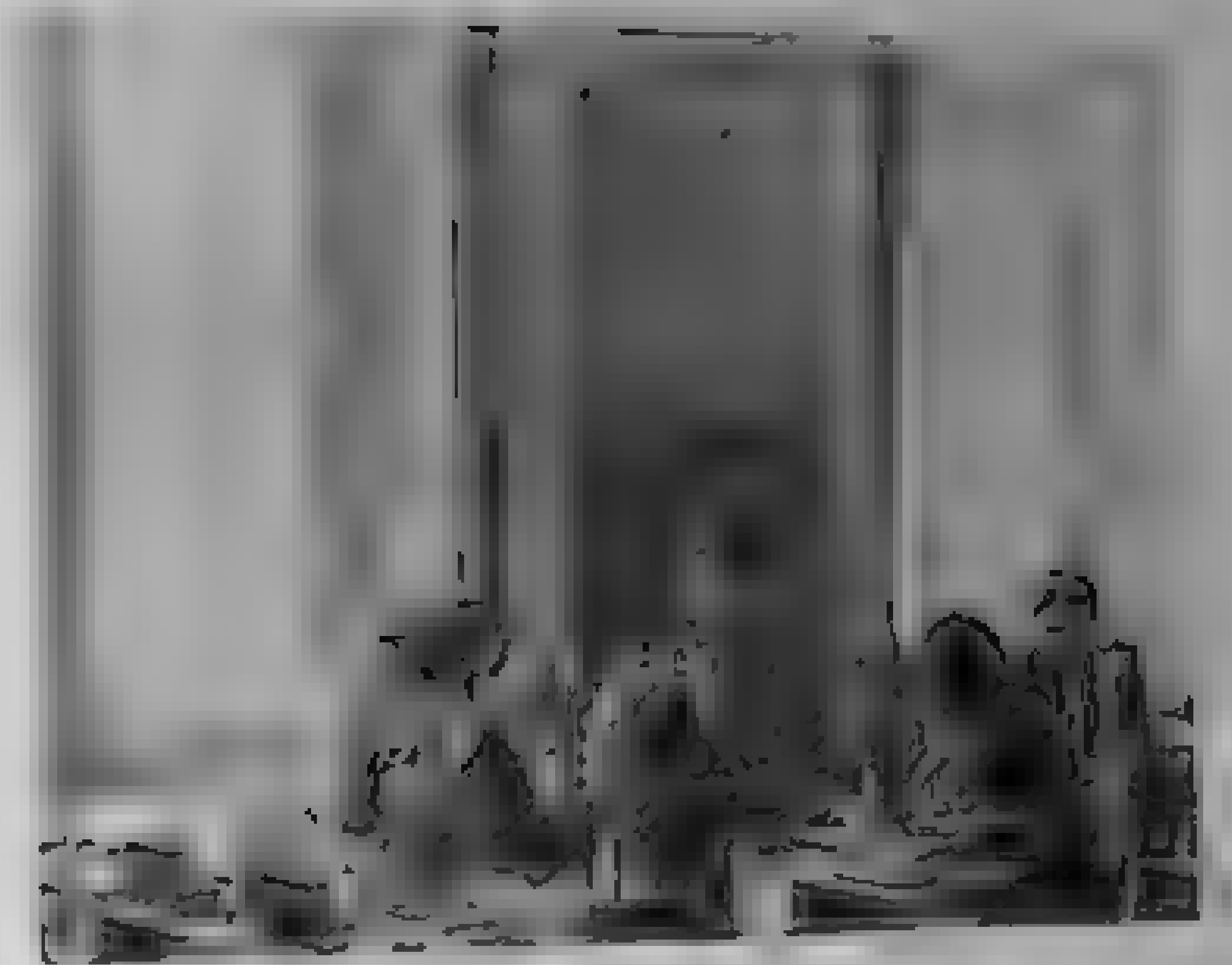


एक डेरा पर लाला कृष्ण शर्मा
 हैं-यह भूत व भक्तियों का मे
 आत्मा कादीमि उन्मत्त
 जानें।



भौतिकी की कक्षा में छात्र, बहुत
 रण पहले भूत कादीमि पड़ते थे।

अर्थात्, जॉर्जिया, कीनिया और गिनी
 के अतिथि उम्र पर हैं, जिसमें जेविल
 का वस्त्र वस्त्र का



बेहिन मया।।। दायमर्दि पति
करो तमहमना महम



लिपि में 'ईश्वर' मंत्रालय के
स्मारक-स्तूप के सामने।



सोवियत संघ में सबसे बड़े स्मारकों के
प्रवसर पर मेहनतकश लोग साल
चौक में लेनिन-समाधि पर आकर
श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।



सोवियत संघ में सभी जगह हर छोटे-बड़े शहर में लेनिन-
स्मारक हैं।

काकेशिया में एक चट्टान पर लेनिन का चित्र उत्कीर्ण है।
चट्टान इतनी ऊंची है कि लगता है कि कलाकार पंख लगाकर बादलों
पर चढ़ा होगा और वहां तक पहुंच पाया होगा।

शूशेन्स्कोये जानेवाला हर व्यक्ति उन देवदारुओं के स्मरण-
चिह्नों के रूप में देवदारु-फल लेकर आता है, जिनके नीचे विराम
करना लेनिन को प्रिय था। इन्हें वे अपने घरों के पास जो देंगे
और इनसे उगनेवाले देवदारु साइबेरिया के देवदारुओं के भाई-बंधु
होते हैं। यह भी एक प्रिय व्यक्ति की एक सजीव वाद है।

जर्मन जनवादी जनतंत्र के एइसलेबेन शहर के लेनिन-स्मारक
की कहानी बड़ी दिलचस्प है। सोवियत सैनिकों ने जब उसमें प्रवेश
किया, तब युद्ध का अंत निकट आ रहा था। उन्हें इस शहर के
मुख्य चौक में, जिसे नाज़ियों ने अभी हान ही में खाली किया था,
लेनिन की कांस्थ प्रतिमा को देखकर बड़ा अचरज हुआ। इसके बाद
नाज़ी मृत्यु जिविरों से मुक्त होने के बाद पूर्व की तरफ जाते पोल-
बेल्टज्याई, फ्रांसीसी तथा चेक लोग भी इस शहर से होकर गुजरे।
उन्होंने भी लेनिन को देखा। जायद अभी जाकर वे इस बात को
पूरी तरह अनुभव कर पाये होंगे कि फ़ासिस्ट की विकरान रात्रि
का अंत हो चुका है और धरती पर जीवन फिर अगड़ाई लेने लगा है।
लेनिन की इस प्रतिमा को नाज़ी अधिभूत सोवियत प्रदेश में

उठा लाये थे। उसे गलाया जानेवाला था। लेकिन जर्मन फ़ासिस्ट-विरोधी मजदूरों ने इस प्रतिमा को बचाने और छिपा देने का फ़ैसला किया। अपनी जान को ख़तरे में डालकर उन्होंने अपना लक्ष्य पूरा किया और सोवियत सेनाओं के आगमन तक इसे संभालकर रखा। नाज़ियों के शहर से भागते ही मजदूरों ने उसे मुख्य चौक में स्थापित कर दिया। आज तक यह वही खड़ी हुई है।

लेकिन लैनिन का सबसे अच्छा स्मारक है उनके सपनों की, जीवनपर्यंत वह जिन चीज़ों के लिए लड़े, उनकी, और मेहनतकश लोगों को उन्होंने जो आदेश दिये हैं, उनकी पूर्ति। जनता ने उनके ऐसे स्मारक को भी स्थापित कर दिया है।

सोवियतों के देश ने पचास वर्ष के भीतर इतनी उपलब्धि हासिल कर ली है, जितनी धनी पूंजीवादी देशों ने सौ, दो सौ वर्षों में की थी। आज ज़मीन पर ट्रैक्टर और हारवेस्टर कंबाइन खेती करते हैं, शक्तिशाली नदियों को बांधकर उन पर विराट पनबिजलीघर बना दिये गये हैं और देश में बिजली की बाढ़ आ गई है। साइबेरिया में अपने विश्वविद्यालयों और थियेटर्स से युक्त आधुनिक नगर उठ खड़े हुए हैं। सोवियत अंतरिक्ष-यान चंद्रमा और शुक्र पर उतर चुके हैं। एक सोवियत मानव ने ही सबसे पहले बाह्य अंतरिक्ष में प्रवेश किया था। ये सभी महाप्रयास एक शिक्षित जन ही कर सकते थे। आज आप सोवियत संघ में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं ढूँढ़ पायेंगे, जो पढ़ और लिख नहीं सकता है। हर सोवियत बालक को शिक्षा प्रदान की जाती है—विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा निःशुल्क है। लैनिन ने इन सभी का सपना देखा था। इसलिए यह सब भी उनका स्मारक है।

सोवियत संघ में सौ से अधिक जातियाँ रहती हैं। उनके अलग-अलग रीति-रिवाज़, अलग-अलग भाषाएँ हैं, मगर वे सभी एक परिवार की तरह एक सामान्य लक्ष्य की सिद्धि के लिए साथ-साथ

रहती हैं। सोवियत संघ की जातियों की यह बंधुत्वपूर्ण मंज़ी भी लैनिन का एक स्मारक है।

लैनिन के उपदेश हमसे तकाज़ा करते हैं कि हम अपनी स्वतंत्रता और बेहतर जीवन के लिए संघर्षरत अन्य जनों की सहायता करें। हमें इस पर गर्व है कि सोवियत डाक्टर अफ़्रीकी गांवों में रोगियों को रोगमुक्त कर रहे हैं, कि सोवियत टर्बाइन मिश्र की जनता के लिए बिजली पैदा कर रहे हैं, कि वियतनाम के लोग हमलावरों के हवाई जहाज़ों को सोवियत मिसाइलों से गिरा रहे हैं। अपनी स्वतंत्रता के लिए जूझती जनताओं को सोवियत संघ द्वारा दी जानेवाली यह सहायता भी लैनिन का एक स्मारक ही है।

बरसात में सितारे (सचित्र बाल कहानी संग्रह)

किसी विनोदपूर्ण किस्से या हास्यजनक घटना पर हंसना भला किसे पसंद नहीं। लेकिन आम तौर पर ऐसे किस्से शिक्षाप्रद भी होते हैं, क्योंकि दूसरों की गलतियों और चूकों से काफ़ी सबक सीखा जा सकता है। प्रस्तुत बाल कहानी संग्रह न० नोसोव की ऐसी ही एक कहानी—“मीशा ने दलिया बनाया”—से शुरू होती है। दूसरी कहानियों के लेखक हैं प्रसिद्ध सोवियत लेखक व० क्रापोविन, व० द्रागुन्स्की, अ० अबू-बकर, वा० वैशेनालीयेव, म० यह्यायेव, ह० गसीलोवा, आदि। इन्हें पढ़कर बाल पाठक जानेंगे कि सोवियत स्कूली बच्चे कैसे रहते, पढ़ते और मनोरंजन करते हैं, कैसे दुनिया के और बच्चों की तरह उनके साथ भी कम मजेदार घटनाएं नहीं घटतीं। मगर कुछ कहानियां गंभीर भी हैं। उनमें बताया गया है कि असली इन्सान बनने के लिये कैसे रहना और कैसे आचरण करना चाहिये।

पृष्ठ संख्या १२६, १७×२२ सें०, सजिल्द, सचित्र।

प्योत्र मन्तेयफ़ेल, जीव-जगत् की कहानियां

मनन, प्रेक्षण, प्रयोग—यह विख्यात सोवियत जीवविज्ञानी प्रोफ़ेसर प्योत्र मन्तेयफ़ेल (१८८३-१९६०) का आजीवन नियम रहा। उनकी यात्राओं, जीव-जगत् के प्रेक्षण, प्रयोगों और चिन्तन के परिणाम केवल वैज्ञानिक कृतियों ही नहीं, बल्कि कथा-कहानियों के रूप में भी प्रकाशित हुए हैं।

इस संग्रह में प्रकाशित कहानियों में विभिन्न जीव-जन्तुओं के व्यवहार और आदतों, कीमती खालवाले जानवरों के परिस्थिति-अनुकूलन के बारे में किये गये प्रयोगों और वैज्ञानिक-यात्री के दीर्घकालीन कार्यजीवन में हुई तरह-तरह की असंख्य अप्रत्याशित घटनाओं के बारे में बड़ी सरल, दिलचस्प और पैनी शैली में बताया गया है।

पृष्ठ संख्या १६८, १७×२२ सें०, सजिल्द, सचित्र।

इन पुस्तकों को आप अपने यहां की किसी भी सोवियत साहित्यविक्रेता दुकान से खरीद सकते हैं।

РЕДАКТОР Е. ГРИШИНА • ИЗДАТЕЛЬСКИЙ РЕДАКТОР
Б. ПАКТЕР • ХУДОЖЕСТВЕННЫЙ РЕДАКТОР Ю. САМСО-
НОВ • ТЕХНИЧЕСКИЙ РЕДАКТОР В. ШИЦ •

ПОДПИСАНО К ПЕЧАТИ 25.IV.1972 Г. ФОРМАТ $70 \times 90^{1/16}$ • БУМ.
Л. $6^{5/8}$ • ПЕЧ. Л. 15,5 • УЧ.-ИЗД. Л. 11,91 • ИЗД. № 11061. •
ЗАКАЗ № 840 • ЦЕНА 1 Р. 30 К. • ТИРАЖ 3000 •

ИЗДАТЕЛЬСТВО «ПРОГРЕСС» • КОМИТЕТА ПО ПЕЧАТИ ПРИ
СОВЕТЕ МИНИСТРОВ СССР • МОСКВА Г-21, ЗУБОВСКИЙ БУЛЬ-
ВАР, 21 •

ОРДЕНА ТРУДОВОГО КРАСНОГО ЗНАМЕНИ МОСКОВСКАЯ ТИ-
ПОГРАФИЯ № 7 «ИСКРА РЕВОЛЮЦИИ» ГЛАВПОЛИГРАФИПРОМА
КОМИТЕТА ПО ПЕЧАТИ ПРИ СОВЕТЕ МИНИСТРОВ СССР Г. МО-
СКВА, ПЕР. АКСАКОВА, 13.